सचित्र

जापान-वृत्तान्त।

(जापान और जापानवासियोंका सम्पूर्ण इतिहास।)

कलकत्ता,

३८।२ भवानीचरण दत्त ष्ट्रीट,

बङ्गवासी इलेक्ट्रो-मेशीन प्रेसमें
[illegible]

सम्वत् १९६१।
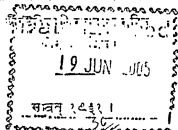
मूल्य १॥) डेढ़ रुपया।

और "नैहाङ्गी के अङ्गरेजी अनुवाद होके आधारपर इस पुस्तक-की ऐतिह मिक बातें लिखी गई है। जापान वृत्तान्त आरम्भ करनेसे पहले हम वर्तमान रूस जापान युद्धका कारण और युद्धका विवरण संक्षेपमें प्रकाश करते हैं।

युद्धका कारण।

जापानदीप समूहके मुकाबले कोरिया नामक प्रायदीप है। एक सङ्कीर्ण प्रणालीने कोरिया और जापानको अलग कर दिया है। सैकडों वर्षसे जापान कोरियापर अपना प्रभुत्व चिरकालके लिये स्थापित करनेकी चेष्टा कर रहा है। जापान सरकारको निश्चय हो गया है, कि कोरियापर प्रभुत्व रखने होसे जापान निरापद रह सकता है। कोरियापर प्रभुत्व स्थापन करनेके लिये ही सन् १८६५ ई०में जापानने चीनसे युद्ध किया था। जापान जीता, चीन हारा था। चीनने कोरियापर जापानकी प्रभुता स्वीकार की और जापानको आरथर बन्दरका तथा लियाटुङ्ग नामक आरथर बन्दर प्रदेशका भी शासक बना दिया था। रूसने चीनकी इस सन्धिपर आपत्ति की। जर्म्मनी और फरासने भी रूसका साथ दिया। जापान चीनसे लडकर थक गया था। इस कारण वह इन तीन महाशक्तियोंका कुछ कर न सका,—दांत पीसकर रह गया। जापानको आरथर बन्दर और लियाटुङ्ग प्रदेश चीनको दे देना पडा। जापानको कोरियापर प्रभुता करनेकी शक्ति दी गई सही, किन्तु रूस भी उस शक्तिका आधा हिस्सादार बना।

इस अवसरमें रूसने रूसराजधानी सेण्टपिटर्सवर्गसे वलाडी॰

वहाँतक अपना बहुत लम्बा साइबेरियन रेलपथ तय्यार कर लिया। शरद् ऋतुमे व्लाडीवष्टक बन्दरके पार्श्ववर्त्ती समुद्रका जल जमकर बरफ बन जानेकी दिक्कतसे रूसको एक तुषाररहित बन्दरकी जरूरत हुई। रूसको अरथर बन्दर ही उपयुक्त बन्दर दिखाई दिया। उसने कुछ महीने पहले जिस बन्दरसे जापानको निकाल दिया था, उसी बन्दरको चीनसे कह सुनकर अपने कब्जेमे कर लिया। जापान लाल लाल आंखोंसे रूसको देखता रह गया—कुछ कर न सका। सन् १८६६ ई०में चीनका वाक्सर-विभ्राट् हुआ। संसारकी अनेक शक्तियोंने वाक्सर-विभ्राट मिटानेके लिये अपनी अपनी फौजे चीनमे भेजी। जापानने भी अपनी फौज भेजी। वाक्सर-विभ्राट् मिटनेपर भिन्न भिन्न शक्तियोंने चीनके जिन शहरों वा देशोंपर दखल जमा लिया था उन्हें चीनको वापस कर दिया। मञ्चूरियापर दखल जमाये हुए रूसने अन्यान्य शक्तियोकी तरह अपना मकबूज देश खाली कर देनेके लिये कहा सही, किन्तु खाली करनेके समय खाली नही किया। खाली करनेके बदले बहाने करने लगा। चीनको, आज—कलपर टालने लगा।

रूस मञ्चूरिया खाली नही किया चाहता था। वह दिन दिन उसमे शहबन्दियां करता जाता था। व्लाडीवष्टकसे लेकर अरथर बन्दरतकके देशको रूसने निगल जानेका संकल्प कर लिया। जापानने देखा, कि हमारी स्थितिमें बाधा पड़ना चाहती है। रूसने जिस तरह जबदस्तो हाथ लपकाकर बालटिक-सागरसे पासिफिक-समुद्रपर्यन्त अपना अधिकार कर लिया है, उसी तरह वह अब मञ्चूरिया, कोरिया प्रभृति

देशोंपर भी अपना अधिकार जमाया चाहता है। कुछ महीने बीत जापान और इङ्गलण्डमें एक सन्धि हुई। इस सन्धिद्वारा इङ्गलण्डने जापानसे प्रतिज्ञा कर ली कि यदि तुम कभी रूसके साथ युद्ध करनेमें प्रवृत्त होग, तो मैं दूसरी शक्तिको रूसका पक्ष न ग्रहण करने दूंगा। इङ्गलण्डकी मैत्रीसे जापान अन्यान्य शक्तियोंकी ओरसे निश्चिन्त हुआ। अब वह रूससे मञ्चूरिया खाली करने और कोरियामें प्रचार न फैलानेके लिये बारम्बार कहने लगा। रूस जापानसे भी मञ्चूरिया खाली करनेके वादे करने लगा। किन्तु भीतर भीतर वह मञ्चूरियामें और जमकर बैठने लगा। इस प्रकार सन् १९०३ ई० की ६ ठीं जूनतक रूस और जापानमें मञ्चूरिया खाली करनेके बारेमें बातचीत चलती रही। जापानने अन्तमें खिजलाकर वर्तमान सन्‌की १३ वीं जनवरीको रूसको लिख भेजा कि यदि तुम शीघ्र मञ्चूरिया न खाली करोगे, तो मैं शस्त्रबलसे तुम्हें मञ्चूरियासे बाहर निकाल दूंगा। रूसने इस बातका प्रत्यक्षमें कोई जवाब नहीं दिया, किन्तु यथार्थमें प्रत्युत्तरस्वरूप अपनी बहुत बड़ी फौज कोरिया और मञ्चूरियाकी सरहद्दी नदी यालूके किनारेपर भेज दी। जापानने देखा, कि रूस उसको कुचल ही डाला चाहता है—अधिक विलम्ब करनेसे उनका नाश अब अवश्यम्भावी है। जापानने रूससे युद्ध करना ही एक मात्र उपाय देखा और वर्तमान सन्‌की ८ वीं फरवरीकी आधीरातके समय रूसके अरथर-बन्दरवाले जङ्गी जहाजोंपर आक्रमण करके पहले प्रस्तावसे युद्ध आरम्भ कर दिया। आज प्रायः ६ महीनेसे यह रूस जापान युद्ध चल रहा है।

जल-युद्धका विवरण।

रूसके जङ्गी जहाजोंका जबरदस्त बेड़ा आरथर-बन्दरमें मौजूद था। मञ्चूरियाके रूसी बड़ेलाट अलकसिफ इस जहाजी बेड़ेके प्रधान अफसर थे। युद्ध आरम्भ होते ही

बड़ेलाट अलकसिफ।

वह अरथर-बन्दरसे भागकर अन्तरस्थ मच् रियामें चले गये। इनके नौ सेनापति एडमिरल मेकराफ अरथर-बन्दरस्थ जङ्गी जहाजोंके नौ सेनापति बनाये गये। वे समय समयपर अरथर-बन्दरसे बाहर निकलकर जापानी जङ्गी जहाजोंके बेड़ेसे मुकाबला करने लगे। जापानी जङ्गी जहाजोंके नौ-

टोङ्गो। जापानके नौ-सेनापति।

सेनापति हैं टोङ्गो। टोङ्गो अनुभवी हैं—धीर गम्भीर हैं। उन्होंने अपने पुराने जहाज अरथर बन्दरके मुहानेमें डुबाकर बन्दरका मुहाना बन्द करने और बन्दरके रूसी जङ्गी जहाजोंके बन्दरसे निकलनेकी राह रोकदेनेकी बारम्बार चेष्टा की। किन्तु वे कृतकार्य्य न हुए। गत १३ वीं अपरैलको मेकराफ अपने अनेक जङ्गी जहाजोंसहित अरथर-बन्दरसे निकले। खुले समुद्रमें

जापानी जङ्गी जहाजोंसे मुकाबला हुआ। रूसी जङ्गी जहाज परास्त हो कर अरथर-बन्दरकी ओर भागे। पेट्रोपावलस्की नामक बहुत बड़े जङ्गी जहाजपर रूस-नौ-सेनापति मेकराफ सवार थे। अरथर-बन्दरकी ओर भागनेके समय पेट्रोपावलस्की जहाज एक जलमग्न आग्नेय-अस्त्रद्वारा टकराया और २। ३ मिनटोंमें

मेकराफ। रूसके नौ-सेनापति।

मेकराफसहित डूब गया। इसके उपरान्त विटेगिफ्ट रूसी जङ्गी जहाजोंके नौ-सेनापति हुए। विटेगिफ्टने गत १० वीं अगस्तको अरथर-बन्दरके कुल जङ्गी जहाजोंसहित अरथर-बन्दरसे निकलकर वलाडीवष्टककी ओर भाग जानेकी चेष्टा की। चतुरचूड़ामणि टोगोने रूसी जहाजोंको घेर लिया। रूस-

जापानके जङ्गी जहाजोंमें खूब लड़ाई हुई। अन्तमें विटेगिफ्ट मारे गये। रूसी जङ्गी जहाज भागे। कुछ जहाज भागकर चीन-प्रदेशस्थ बन्दरोंमें और जर्मनीके बन्दरगाहमें चले गये। दोहेसे जहाज बहुत बुरी दशामें आरथर-बन्दरमें लौट गये। आरथर-बन्दरके जङ्गी जहाज इस समय निकम्मे हैं। वे जापानी जङ्गी जहाजोंके भयसे आरथर-बन्दरके बाहर नहीं निकल सकते। इस प्रकार रूसके आरथर-बन्दरवाले जङ्गी जहाजोंका प्रायः सर्वनाश हो चुका है। आरथर-बन्दर भी जापानी फौजों-द्वारा घिरा हुआ है। प्रतिदिन उसके पतनसमाचारकी प्रतीक्षा की जाती है। इसके अतिरिक्त रूसके ब्लाडीवस्टकके कुछ जङ्गी जहाज भी जापानी जङ्गी जहाजोंद्वारा परास्त होकर ब्लाडीवस्टकमें घुसे हुए हैं। इस समय समुद्रपर जापान हीका आधिपत्य है। रूसकी सुदूरपूर्वकी नौ-शक्ति एक तरहसे बिलकुल नष्ट हो चुकी है।

स्थलयुद्धका विवरण।

इन कई महीनोंमें स्थलपर कितनी ही छोटी और ७ बड़ी लड़ाइयां हुई हैं। सबसे पहली बड़ी लड़ाई हुई यालू नदीपर। इस लड़ाईमें रूस पराजित, विताड़ित और छत्रभङ्ग हुआ है। इसी लड़ाईमें जयी होकर जापानने पहले पहल मञ्चूरिया प्रवेश किया। इस लड़ाईमें रूसके जेनरल सासुलिचके पास थे २५ हजार सिपाही और जापान-सेनापति कुरोकीके पास थे प्रायः १ लाख सिपाही। इस लड़ाईमें ४।५ हजार रूसी सिपाही क्षय हुए। रूसकी कितनी ही तोपें बन्दूकें जापानके

हाथ लगीं। स्वदेश विदेशमें रूसका मान सम्भ्रम नष्ट हुआ।

रूस-जापानका दूसरा भीषण युद्ध हुआ किचाउ और नानसन पर्व्वतमें। जापान-सेनापति उकूने प्राय: ३५ हजार सिपाहियोंकी जमाअतसे इस पर्व्वतपर आक्रमण किया। रूससेनापति स्टोसल सिर्फ १० हजार सिपाहियोंकी फौजसे इस स्थानकी रक्षाके लिये तय्यार हुए। भीषण लड़ाईके बाद स्टोसल किचाउसे भाग गये,—साथ साथ डालनी-बन्दरका पतन हुआ और अरथर-बन्दर स्थलकी ओरसे भी पूर्ण रूपसे अवरुद्ध हो गया।

तीसरा भीषण युद्ध,—वाफाङ्गकी नगरमें हुआ। प्राय: ५० हजार रूसी सिपाही जेनरल स्टाकेलबर्गकी अधीनतामें अरथर-बन्दरका उद्धार करनेके लिये दक्षिणाभिमुख जा रहे थे। जापान-सेनापति उकूने १ लाख सिपाहियोंकी जमाअतसे इस फौजका सामना किया। इस जगह भी रूसी फौजको सम्पूर्ण-रूपसे विध्वस्त पराजित और अङ्गभङ्ग होना पड़ा।

चौथी मारकेकी लड़ाई हुई केइपिङ्ग नगरमें। गत ६ठीं जुलाईको यह युद्ध आरम्भ हुआ और ८वीं जुलाईको समाप्त। इस लड़ाईमें जापान-सेनापति उकूके अधीन ५० हजार सिपाही और ३।४ हजार सवार थे। उधर रूसके प्रधान सेनापति क्रूरोपाटकिनके अधीन २२ हजार सिपाही थे। चार दिनोंतक अविरत युद्ध करके वीरत्व और रणकौशल दिखाकर जापान-सेनापति उकू गत ८वीं जुलाईको सन्ध्यातक केइपिङ्ग पर पूर्णरूपसे अधिकृत हो गये। रूसी फौजोंको शिकस्त फाश नसीब हुई।

कुरोपाटकिन। रूसके प्रधान सेनापति।

पांचवां भीषण युद्ध हुआ मोटिनलिङ्ग गिरिसङ्कटमें। इस युद्धमें रूसी फौजने आक्रमण करके जेनरल कुरोकीकी अधीनस्थ जापानी फौजोंको मोटिनलिङ्ग पर्व्वतपरसे भगा देना चाहा। रूस-सेनापति केलरने गत १७ वीं जुलाईके ३ बजे सबेरे मोटिनलिङ्गपर आक्रमण किया। घोर युद्ध हुआ। अन्तमें रूस-सेनापतिको अपने १ हजार सिपाही कटवाकर भागना पड़ा।

छठी बहुत बड़ी लड़ाई हुई ताशीचियाव स्थानमें। यह पार्व्वत्य-स्थान केपिङ्ग और हैचिङ्गके बीचमें अवस्थित है। ४ दिनोंतक अविराम भावसे लड़ाई हुई। रूसकी ओर प्राय: ८०

हजार सिपाही और १ सौ तोपें जेनरल स्टाकलबर्गके अधीन थीं। जापान-सेनापति उक्त बहुसंख्यक सिपाहियोंसहित रूसी फौजपर आक्रमण कर रहे थे। घोर युद्धके उपरान्त, सहस्र सहस्र सिपाहियोंके मरनेके उपरान्त, रूस-सेनापति स्टाकलबर्ग अपनी फौजसहित भागे। जापानी फौजोंने ताशी-चियावपर कबजा कर लिया।

इसके उपरान्त सातवीं लड़ाई और सबसे बड़ी लड़ाई हुई लियावयाङ्ग नगरमें। इस युद्धमें जापानकी ओर प्रायः साढ़े तीन लाख सिपाही और रूसकी ओर प्रायः ढाई लाख सिपाही थे। रूसकी ओर प्रायः ५ सौ तोपें थीं और जापानकी ओर ८ सौ। इस लड़ाईमें ६ लाखसे ऊपर ऊपर सिपाही युद्धमें प्रवृत्त हुए थे। इसी लड़ाईमें कालरूपिणी, खड्ग धारिणी काली, शोणितसिक्त रक्तवर्ण वदन व्यादानपूर्वक मानो पृथिवी ग्रास करनेपर उद्यत हुई थीं। उनकी लहलहाती लाल जिह्वा धारदार लाल दन्तपंक्ति, अग्निस्फुलिङ्गमयी लाल अग्नि, कोटि सूर्य समप्रभ लाल त्रिनेत्र देखकर संसार स्तम्भित बना था। इस युद्धमें जापानकी ओर थे, जापानके प्रधान सेनापति फील्डमार्शल ओयामा—रूसकी ओर थे रूसके प्रधान सेनापति क्रुरोपाटकिन। कई दिनोंकी लड़ाईके उपरान्त गत १ ली सितम्बरको रूसी फौजें हारकर मुकदन नगरकी ओर भागीं। जापानी फौजोंने लियावयाङ्ग नगरपर कबजा कर लिया।

इसके उपरान्त आजकल ८ वीं बड़ी लड़ाई आरम्भ हो गई है मुकदनमें। मुकदननगरको जापानियोंने तीन ओरसे वेष्टित कर लिया है। दोनों ओरके मिलाकर प्रायः ६।७ लाख

सिपाही युद्धमें प्रवृत्त हुए हैं। खण्डयुद्ध आरम्भ हो गया है। अभीतक फैसलेकी लड़ाई नहीं हुई है।

रूस-जापानके युद्धकी ऐसी ही वर्त्तमान दशा है। रूस इतने दिनोंसे जापानको तुच्छ समझता आ रहा था। रूस कहता था, कि असभ्य जापान लड़ना क्या जाने। किन्तु जापानकी कार्य्यावली देखकर अब रूसकी आंखें खुल गई हैं— संसारकी आंखें खुल गई हैं। क्षुद्रकाय जापानियोंने दिखा दिया है, कि हम असभ्य होनेपर भी वैज्ञानिक असभ्य हैं। असभ्यताके साथ उनकी उन्मत्तताका अपूर्व्व बल भी संयुक्त हो गया है। इस महाबलके सामने समस्त पृथिवी अवनत हुई है। जब उज्ज्वलतामें मधुरता मिलती है,—जब सूर्य्य और चन्द्र एकत्र होते हैं,—जब वज्रके साथ सुधाका सम्मिलन होता है, उस समय वह अपूर्व्वत्वको प्राप्त होता है। सो जापानने अपूर्व्वत्वके मन्त्रौषध गुणसे संसारको मुग्ध किया है। ऐसे ही जापानका वृत्तान्त अब "जापान वृत्तान्त" में देखिये !

कलकत्ता।
२री अक्टोबर, सन् १९०४ ई०।

जापान-द्वीप-समूहका मानचित्र।
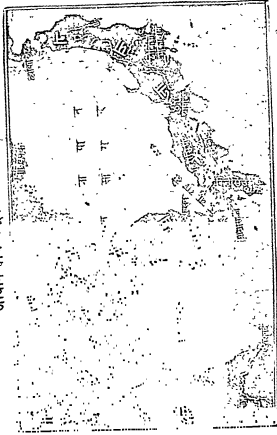
१—हाकडो-टापू। ४—क्यूटोन..। ७—सुगारू-प्रणाली।
२—चण्डो-टापू। ५—शिमानोसिकी-प्रणाली। ८—फ्जीयामा-पर्वत।
३—सुशिमा-टापू। ६—कागोशिमा। ९—यङ्गोकी खाड़ी।

जापान-वृत्तान्त ।

प्रथम परिच्छेद ।

भारत, जापानको बहुत दिनोंसे जानता है। एकबार भारतके बौद्धनरपति महाराज अशोकका शासनकाल याद कीजिये! ईसामसीहकी उत्पत्तिसे प्रायः ढाई सौ वर्ष पहले नरपति अशोकने बुद्धधर्म्म प्रचारके लिये चीन, कोरिया और जापान प्रभृति देशोंमें बौद्ध-धर्म्मोपदेशकोंके दल भेजे थे। ऐसे ही धर्म्मोपदेश-कोंके दलने जापानमें बौद्धधर्म्मका प्रचार किया और ऐसे ही दलने जापानसे भारतमें लौटकर जापानका सविस्तर विवरण प्रकाश किया था। इतिहाससे वाकफीयत रखनेवाले पाठक जानते होंगे, कि मारको पोलो नामक पुरतगाली ही पहला

युरोपवासी भारतमें आया था और इसी मारको पोलोने जापानका हाल पहले पहल युरोपमें प्रकाश किया था। मारको पोलो अपनी "वेनिशियन" नाम्नी पुस्तकके २३५ वें पृष्ठमें लिखता है,—"सन् १२८५ ई० में चीनराज्यमें मुझको जापानका हाल मालूम हुआ! चीनियोंने बताया, कि चीनकी पूर्व और अगाध जलनिधिके बीचमें चिपाङ्गू नामक एक टापू अवस्थित है। वह बहुत बड़ा और हरा भरा टापू भूखण्डसे ७॥ सौ कोसके फासलेपर है। टापूके रहनेवाले श्वेतकाय और सुशिक्षित हैं। वे मूर्त्ति-पूजक और स्वतन्त्र हैं। उनके टापूमें सुवर्ण उत्पन्न होता है, इसलिये उनके टापूपर बहुत बड़ा सुवर्ण-भाण्डार है।" चीनमें जापान पहले चीयाङ्गू,—इसके उपरान्त जी-पेन-कूके नामसे प्रसिद्ध हुआ और अब वहांवाले उसको जापानके नामसे पुकारते हैं। उधर जापानवासी अपने राज्यको डे-निपन कहते हैं।

जापान राज्य वा डै-निपन सलतनतका द्वीप-समूह पासिफिक महासागरके उत्तरपश्चिम भागमें है। आग्नेय-पर्व्वतोंकी विच्छिन्न शृङ्खला उत्तर ओरके कामसकटका प्रायद्वीपसे आरम्भ होकर दक्षिण ओरके

फ़ारमोसा द्वीपपर्य्यन्त चली गई है। जापानका द्वीपसमूह इसी खण्डित शृङ्खलाका आंशिक भाग है। जापान-द्वीपसमूहका प्रसार एशिया भूखण्डकी समानरेखामें उत्तरपूर्व्वके कोनेसे लेकर दक्षिण पश्चिमके कोनेतक है। येज़ो टापू जापान-द्वीपसमूहकी उत्तरीय सीमा है और क्यूशू टापू दक्षिणीय। येज़ो टापूकी उत्तरीय सीमाकी अक्षरेखा ४५ डिगरी ३५ मिनिट है और क्यूशू टापूकी दक्षिणीय सीमाकी अक्ष-रेखा ३१ डिगरी है। आगे येज़ोकी पूर्व्वीय सीमाकी द्राघिमा १४६ डिगरी १७ मिनिट है और क्यूशू टापूके पश्चिमीय सीमाकी द्राघिमा १३० डिगरी ३१ मिनिट। कुराइल-द्वीपसमूहका सिल-सिला येज़ो टापूके उत्तरपूर्व्व सीमासे आरम्भ होकर कमसकटकापर्य्यन्त चला गया है। पहले इस टापू-पर रूसका अधिकार था, किन्तु सन् १८७५ ई॰में सघेलियन टापू रूसको देकर जापानने कुराइल-द्वीप-समूह रूससे ले लिया है। उधर, रिउकिउ-द्वीप-समूह जापान-द्वीपसमूहके क्यूशू टापूके पश्चिम-दक्षिण सीमापर अवस्थित है। रिउकिउ-द्वीपसमूह पश्चिम-दक्षिणमें फ़ारमोसा द्वीपपर्य्यन्त चला गया है।

रिउकिउ-द्वीपसमूहपर भी जापानका अधिकार है और सन् १८६४ ई०के चीन-जापानयुद्धके उपरान्त जापानने चीनसे फारमोसा द्वीप ले लिया था। सो इस समय जापान राज्यका विस्तार २० डिगरी ५ मिनिट अक्षरेखामें और ३३ डिगरी २५ मिनिट द्राधिमामें है।

जापान-राज्य ४ बड़े और प्रायः ३ हजार छोटे टापुओंमें विभक्त है। इन छोटे टापुओंमें अनेक इतने बड़े हैं, कि उनका स्वतन्त्र प्रदेश तय्यार कर दिया गया है। किन्तु अधिकांश छोटे टापू इतने लघु हैं, कि उनके शासनका भार उनके समीपवाले प्रादेशिक टापुओंके जिम्मे कर दिया गया है। जापानके चार बड़े टापुओंके नाम हैं,—येज्जो; हाण्डो; शिकोकू और क्यूसू। इन चारो टापुओंमें उत्तर ओर येज्जो और दक्षिण ओर क्यूसू है। इन चारो टापुओंमें सबसे बड़ा हाण्डो टापू येज्जो और क्यूसूके बीचमें है। आगे, शिकोकू,—हाण्डो और क्यूसूके मध्यमें है। अब जापानके सबसे बड़े हाण्डो टापूका हाल सुनिये! हाण्डो और येज्जोके बीचमें सुगारू प्रणाली है। हाण्डो टापूकी उत्तरीय सीमापर

और सुगारू प्रणालीके किनारे ओमासाकी नामक स्थान है। ओमासाकीसे दक्षिण-पूर्व जापान राजधानी टोकियोका फ़ासला ५ सौ ८० मील है। टोकियोनगर हाण्डो टापूके ठीक दक्षिण-पूर्व किनारेपर बसा हुआ है। हाण्डो टापूकी दक्षिण-पश्चिम सीमापर हाण्डो और क्यूशू टापूके बीचमें शीमानोसेकी नामकी प्रणाली है। आगे, टोकियो नगरसे शीमानोसेकी प्रणालीके किनारेतकका विस्तार ५ सौ ४० मील है। इस प्रकार इस टापूकी लम्बाई १ हजार १ सौ ३० मील है। चौड़ाई, कहीं कहीं २ सौ मील है, किन्तु इसका अधिकांश भाग केवल १ सौ मील ही चौड़ा है! जापानियोंने इस टापूका कोई स्वतन्त्र नाम नहीं रखा है। वे इसको हाण्डो टापू कहते हैं सही, किन्तु जापानभाषामें हाण्डो शब्दका अर्थ प्रधान टापू है। जो हो; हम इस टापूको हाण्डो हीके नामसे लिखेंगे।

हाण्डोसे छोटा, किन्तु अन्य टापुओंसे बड़ा हाण्डोकी उत्तरपूर्व ओर सुगारू प्रणालीके पार येज़ो नामक टापू है। इस टापूकी उत्तरपूर्व सीमाका नाम शिरेटोको है। शिरेटोकोसे लेकर सुगारू

प्रणालीके किनारे यिराकामी अन्तरीपतकका विस्तार ३ सौ ५० मील है। येज़ो और कर्येलियन-द्वीप-समूहके बीचमें ला परौस नाम्नी प्रणाली है। येज़ो द्वीपकी उत्तरीय सीमापर ला परौस प्रणालीके किनारे सोमा अन्तरीप है। सोमा अन्तरीपसे दक्षिणीय सीमाके परीमोसाकी नामक स्थानका फ़ासला २ सौ ७० मील है। इस टापूका मध्यभाग एक अत्युच्च पर्व्वत-शृङ्ग है। इसी पर्व्वत-शृङ्गसे अनेकानेक नदियां निकलती हैं और टापूके भिन्न भिन्न भागोंमें बहती हैं। इस टापूमें सुगारुप्रणालीके किनारे हाकोडेट नामक बन्दर है। जापानराज्यके अनेक बन्दरोंमें हाकोडेटबन्दर भी अत्यन्त प्रशस्त और उपयोगी है।

पूर्व्वोक्त दोनो टापुओंसे छोटा, किन्तु शेष समस्त टापुओंसे बड़ा जापानका क्यूशू टापू है। यह टापू हाण्डोके दक्षिण पश्चिम कोनेमें है। इसकी उत्तरसे दक्षिण ओरकी सबसे बड़ी लम्बाई २ सौ मील है। और इसकी पूर्व्वसे पश्चिम ओरकी चौड़ाई ६० से ८० मीलतक है। इस टापूका जलवायु गर्म्म होनेकी वजह, यहांकी पैदावार गर्म्म मुल्कोंकी जैसी होती है।

क्यूशूकी पूर्व्व ओर जापानके ४ बड़े टापुओंमें

सबसे छोटा टापू शिकोकू है। यह टापू लम्बाई चौड़ाईमें क्यूशू टापूका आधा है। इसका जलवायु और यहांकी पैदावार क्यूशूसे मिलती जुलती है। यह टापू हाण्डो टापूके पश्चिमीय किनारेकी दक्षिण ओर,—किनारेकी प्रायः समरेखापर अवस्थान करता है। इसकी लम्बाई १७० मीलकी है।

पूर्व्वोक्त चारो टापुओंकी अपेक्षा कुछ छोटे ८ टापू ऊपर लिखे चारो बड़े टापुओंके पास हैं। जापान-द्वीपसमूहका पूर्व्वपार्श्व पासिफिक महासागरकी दिग-दिगन्तव्यापी जलराशिद्वारा घिरा हुआ है। इस द्वीपसमूहके पूर्व्वीय पार्श्वमें पीतसागर, जापान-सागर तथा ओखोस-सागर है। और ये ही तीनो समुद्र जापान-द्वीपसमूहको एशियाखण्डसे पृथक् करते हैं। जैसे स्थलपर अनेकानेक नद नदियां बहती हैं वैसे ही समुद्रमें भी अनेक बहती हुई नद नदियां पाई गई हैं। अवश्य ही समुद्रमें एक ही सुविशाल नद है जिसकी शाखायें और प्रशाखायें नाना समुद्रोंमें गई हैं और इन्हीं समुद्रीय नद नदियोंकी वजह नाना देशोंमें नानाप्रकारके मौसम प्रकट होते हैं। जापानके समीप भी समुद्रीय नदीकी एक कालीधारा बहती है।

यह धारा गर्म्म देशोंके समुद्रोंसे आकर और जापानके पूर्व्व और पश्चिम किनारेको स्पर्श करती हुई सुगारू प्रणालीसे निकलकर पासिफिक-महासागरमें घुस जाती है। इसी समुद्रीय नदीकी वजह जापान-द्वीपसमूहके मौसमोंका परिवर्त्तन हुआ करता है। हाण्डो-शिकोकू और क्यूशूके बीचमें एक भीतरी समुद्र है। इसमें अगणित टापू हैं। ये टापू खूब हरे भरे हैं। शंघाई और नागासाकीसे हाण्डो-द्वीपको जानेवाले जहाज इसी भीतरी समुद्रसे होकर हाण्डो-द्वीपतक पहुंचते हैं। जापानके मुख्य मुख्य टापू पर्व्वतमालाओं तथा नद नदियोंसे परिपूर्ण हैं। जापानका सबसे बड़ा फुजियामा नामक पर्व्वत हाण्डो-द्वीपमें टोकियोके समीप है और यहांकी सबसे बड़ी इशी-कारी नामक नदी उत्तरीय टापू येज्होमें है। फुजि-यामा-पर्व्वतकी सबसे ऊंची तुषारधवलित चोटी १२ हजार ३ सौ ६५ फुट ऊंची है। जापानद्वीपसमूहकी पर्व्वतमालाओंमें अनेक पर्व्वत ज्वालामुखी भी हैं। शिनानो नामक द्वीपका ८ हजार फुट ऊंचा असामा-यामा नामक आग्नेयगिरि हीका उत्थान अपेक्षाकृत प्रबल समझा जाता है।

जापान-द्वीपसमूहमें चिरकालसे भूकम्प आया करता है। यहां भूकम्पकी वजह प्रतिवर्ष प्रायः ५ सौ बार पृथिवी हिला करती है। अधिकांश भूकम्प हानि-रहित होते हैं। किन्तु गत सन् १८६८ ई०के भयङ्कर भूकम्पसे जापानके हाण्डो टापूकी बड़ी क्षति सहना पड़ी थी। इससे भी पहले सन् १८५५ ई० में जापानके टोकियोनगरमें अति भीषण भूकम्प हुआ था। भूकम्पके साथ साथ पृथिवी फटकर आग निकलनेसे महाभयङ्कर अग्निलीला भी उपस्थित हुई थी। इस लोमहर्षण दुर्घटनासे टोकियो नगरके प्रायः १६ हजार मकान गिर पड़े थे। मकानोंके गिरने और उसी समय आग लगनेसे जो भीषण लोकक्षय हुआ होगा, वह विचारने होसे समझमें आ सकता है। जापानके १८ आग्नेयगिरि अति प्रसिद्ध हैं।

जापानके पार्श्वत्यप्रदेशमें अनेक छोटी बड़ी झीलें हैं। अनेक बड़ी झीलोंमें ष्टीमर और जहाज चलते हैं। हाण्डो टापूकी बीवा नामकी झील ही अपेक्षाकृत बड़ी है। जापान-द्वीपसमूहमें अनेकानेक नदियां होनेपर भी खूब लम्बी नदी एक भी नहीं है। हाण्डो-टापूकी टोन नदी अपेक्षाकृत अधिक

लम्बी और चौड़ी है। वह १ से ७० मील लम्बी और ज्यादासे ज्यादा १ मील चौड़ी है।

जापान-द्वीपसमूहका प्रसार खूब लम्बा होनेकी वजह इसके भिन्न भिन्न स्थानोंमें भिन्न भिन्न प्रकारका जलवायु है। उत्तरीय-द्वीपसमूहमें शीतकी प्रबलता रहती है और दक्षिणीय द्वीपसमूहमें साधारण उष्णताकी। प्रायः सितम्बर माससे वर्षा आरम्भ होती है। इसके उपरान्त वसन्तऋतु आती है और इसकी समाप्तिपर शरदृऋतु आरंभ हो जाती है। जापानके भिन्न भिन्न भागोंमें शरदृऋतुका प्रभाव भिन्न भिन्न स्वरूपमें परिलक्षित होता है। जापानके पूर्व्वीय किनारेका जाड़ा मामूली होता है। उच्च पर्व्वतशृङ्गोंको छोड़कर समभूमिपर बहुत थोड़ी बरफ पड़ा करती है। किन्तु द्वीपसमूहके पश्चिमीय किनारेका और ही हाल है। एशियाखण्डसे आने-वाली वायु अपने साथ आर्द्रता लाकर जापान-द्वीप-समूहके पश्चिमीय किनारेपर वर्षाऋतुमें मूसलधार पानी बरसाती है और शीतकालमें घोर हिमवृष्टि करके नद नदी, गिरि, भूमि, अधित्यका उपत्यका आदिको तुषार-राशिसे आच्छादित कर देती है। और

तो क्या,—जापान-द्वीपसमूहके पूर्व्वीय किनारेपर कहीं कहीं २० फ़ुट मोटी बरफ़की तहका छोटासा टीला तय्यार हो जाता है। ऐसी जगहोंके रहनेवाले बरफ़ पड़नेपर अपने मकानके दोमञ्जिलेपर रहने लगते हैं। उधर बरफ़का टीला उनके मकानोंके निचले भागके द्वार आदि छिपाकर मकानके दूसरे मञ्जिलके बराबर ऊंचा हो जाता है। तब दो-मञ्जिलेके रहने-वाले दो-मञ्जिलेके द्वारसे निकलकर बरफ़परसे आते जाते हैं। इस प्रान्तकी हरियालियां बरफ़के नीचे दब जानेपर सड़नेसे बच जाती हैं और बरफ़ गलते ही वे अपने पूर्व्ववत हरे भरे स्वरूपमें दर्शन देती हैं।

द्वीपोंका दक्षिणीय भाग अपेक्षाकृत गर्म्म रहता है। वहांका जलवायु उष्ण-आर्द्र होता है। इसी वजह दक्षिणीय शिकोकू और क्यूशू टापुओंमें चावल, रूई, तम्बाकू, ईख, मीठेआलू, नारङ्गियां आदि गर्म्म-देशकी पैदावार पैदा हो सकती हैं। ऊंचे ऊंचे पहाड़ हरीभरी घाटियां बनों उपवनोंका आधिक्य आदि इन टापुओंमें सदैव ही वसन्त-ऋतु जैसी बहार रखा करते हैं। उधर, हाण्डो-द्वीपके भिन्न भिन्न स्थानोंमें भिन्न भिन्न प्रकारकी पैदावार होती है। टापूके दक्षिण

भागमें गर्म्म देशोंकी जैसी पैदावार होती है। पैदा-वारमें रुई और चावल ही प्रधान हैं। इसके पूर्व्व-किनारेवाली घाटियोंमें चाय उत्पन्न होती है। इस द्वीपकी प्रधान पैदावार रेशम है। जापानसे विदेशमें अधिकांश चाय और रेशम ही जाता है। जापान-द्वीपसमूहमें अधिक नदी नाले होनेकी वजह चावल अधिकतासे उत्पन्न होता है। जापानमें एक प्रकारके धानको सींचनेकी जरूरत नहीं होती। अवश्य ही ऐसे धानका चावल इस देशके ,साधारण चावलोंकी अपेक्षा घटिया होता है।

जापानवासी प्राचीनकालमें अपने देवताओंसे ५ फसलें पानेकी प्रार्थना किया करते थे। इन पांचों फसलोंमें उत्पन्न होनेवाले ५ पदार्थोंके नाम यथाक्रम ये हैं;—चावल, बजरा, जव, सेम और सोरघम (?)। कल्पनातीत कालसे इन पांचो पदार्थोंकी खेती जापानमें होती चली आती है। और जापान-द्वीप-समूहके प्रायः प्रत्येक स्थानमें ये पदार्थ उत्पन्न हो सकते हैं। विशेषतः बजरा जव तथा सेम जापानके प्रत्येक भागमें उत्पन्न होता है और जापानके गांव-वालोंको इन्हीं तीनो पदार्थोंपर उदरपोषण करना

पड़ता है। जापान-द्वीपसमूहके समस्त उत्तरीय भागोंमें बकवीट नामक एक प्रकारका गेहूं उत्पन्न होता है। यह अन्न मञ्चूरियाके वनोंमें आपसे आप उत्पन्न होता है और किसी समय जापानवासी इस अन्नको मञ्चूरियासे ले आये थे।

एशिया-महाद्वीपके पालतू जानवरोंकी अपेक्षा जापानके पालतू जानवरोंकी संख्या बहुत कम है। घोड़ा इस टापूमें बहुत दिनोंसे पाया जाता है। पहले इससे जीनसवारी और लदुए जानवरका काम लिया जाता था, किन्तु कुछ दिनोंसे यह गाड़ीमें भी जोता जाने लगा है। गाय और बैल भी जापानके पुराने पलुए जानवर हैं। जापानवासी गायपर श्रद्धाभक्ति रखते हैं। गऊके बालतकको पीड़ा पहुंचानेमें पाप समझते हैं। अवश्य ही पुराने जमानेमें जापान-वासी गोदुग्धका व्यवहार नहीं जानते थे। भेड़ें इस टापूमें न पहले पाई जाती थीं और न अब पाई जाती हैं। कुछ परकीयदेशवासी अपने साथ थोड़ी बहुत भेड़ें रखे हुए हैं। बकरियां अधिकतासे प्राप्त नहीं होतीं। कहीं कहीं उनकी लघुसंख्या दिखाई देती है। देखते हैं, जापानियोंको बकरियोंसे ज्यादा

सुहव्वत भी नहीं है। हजू प्रदेशके पास ओशिमा-टापूमें एकबार बकरियोंकी संख्या खूब बढ़ जानेकी वजह और उनके द्वारा उपजको अधिक हानि पहुंचनेके कारण जापानियोंने सन १८५० ई०में बकरियोंको मार काटकर उनका सर्व्वनाश कर दिया था। सूअर जापानमें पहले नहीं थे। रिउक्यू टापूमें चीनसे मंगाये गये और जापानके भिन्न भिन्न भागोंमें इतरदेशवासी इन्हें अपने साथ रखे हुए हैं। कुत्ते बिल्ली और मुरगियां इत्यादि जापानमें सर्व्वत्र पायी जाते हैं।

खूब बसे हुए जापान-द्वीपसमूहमें जङ्गली जन्तु बहुत कम पाये जाते हैं। येज्जोके सघन-वनाच्छादित पार्व्वत्य-प्रदेशमें और हाण्डो टापूके उत्तरीय भागमें काले रीछ मिलते हैं। येज्जो और क्युराइल-द्वीपसमूहमें लालरङ्गके बड़े बड़े रीछ पाये जाते हैं। भेड़िये बहुत कम मिलते हैं। किन्तु लोमड़ियां प्रायः सर्व्वत्र ही पाई जाती हैं। उत्तरीय युरोपकी भांति जापानमें भी लोमड़ीकी बड़ी मर्य्यादा की जाती है। इसी वजह जापानकी लोमड़ियोंका नाश नहीं हुआ है। जापान-द्वीपसमूहमें हरिणोंकी अधिकता है। विशेषतः येज्जोद्वीप हरिणोंके झुण्डोंसे भरा हुआ है।

जापान-द्वीपको चारो ओर समुद्रीय जलमें मछलियां खूब अधिकतासे मिलती हैं। जापान-टापूके समीप होकर बहनेवाली समुद्रीय नदी ही इन मछलियोंकी अधिकताका कारण है। जापानवासी मछलियां खूब खाते हैं।

जापानराज्यको प्रदेशोंमें विभक्त करना ही प्रकृत शासनका प्रयोजनीय आरम्भिक कार्य्य था। सीन्दू नामक जापाननरेशने सन् १३१ ई०से लेकर १९० ई० पर्य्यन्त राज्य किया था। इन्हीं नरेशने पहले पहल जापानको ३२ प्रदेशोंमें बांट दिया था। आगे, सन् ३०३ ई०में जापान-सम्राज्ञी जिङ्गोने कोरियापर चढ़ाई की थी। जिङ्गोने कोरियासे लौटनेके उपरान्त कोरियाराज्यविभक्तिकी तरह अपने देशकी विभक्ति भी की। इसके उपरान्त नाना जापान-नरेशोंके समयमें नानारूपसे जापानकी विभक्ति हुई। अन्तमें जापानकी प्रादेशिक विभक्तिका स्वरूप इस प्रकार बन गया;—गोकिनाई—इसमें ५ स्वदेशीय प्रदेश Home provinces संयुक्त हुए; टोकायडो—पूर्व्व ओरवाले समुद्रके पार्श्ववर्त्ती १५ प्रदेश, इसमें संयुक्त किये गये; टोजेण्डो—पूर्व्वीय पार्व्वत्य प्रदेशको

गिद्की ८ प्रदेश इसमें मिलाये गये ; सैनिग्डो—पर्व्वत-पृष्ठ प्रान्तके ८ प्रदेश इसमें शामिल किये गये ; सैनियोडो,—पर्व्वताग्र प्रान्तके ८ प्रदेश इसमें जोड़े गये ; सैकैडो—पश्चिम ओर वाले समुद्रके निकटवर्त्ती ६ प्रदेश इसमें मिलाये गये। इस प्रकार, जापान कुल ८ प्रदेशोंमें बांटा गया था। इसके उपरान्त जापान-नरेशोंने युद्धमें जमीन जीतकर अपना राज्य और फैला दिया। सन् १८६८ ई० की लड़ाईके उपरान्त जापान-नरेशने अपने राज्यमें और ७प्रदेश मिलाये। आगे चेजो टापूमें होक्काइडो नामक ११ प्रदेशवाला एक देश तय्यार किया गया और इस प्रदेश-वृद्धिके कारण जापान सम्राट्के ८४ प्रदेश हो गये। हालमें इन ८४ प्रदेशोंका शासनभार ३ प्रधान नगरोंके अन्तर्गत कर दिया गया है। इन ८४ प्रदेशोंमें शान्तिस्थापन रखनेके लिये ४२ पुलिस-विभाग बनाये गये। आगे इन्हीं ८४ प्रदेशोंकी जापानसलतनत मानी गई है। टोकियो, ओसाका और क्योटो ही जापानके प्रधान और शाही-शहर हैं। जापानमें बड़े बड़े शहरोंकी तादाद कम और छोटे छोटे शहरोंकी ज्यादा है। सन् १८६२ ई०की मनुष्यगणनासे जापानके प्रधान नगरोंकी मनुष्य-

संख्या इस प्रकार मालूम हुई !—राजधानी टोकियोमें १० लाख ५५ हजार २ सौ मनुष्य ; ओसाकामें ४ लाख ७३ हजार ५ सौ ४१ मनुष्य ; क्यूटोमें २ लाख ८८ हजार ५ सौ ८८ मनुष्य ; नगोयामें १ लाख ७० हजार ४ सौ ३३मनुष्य ; कोबमें १ लाख ३६ हजार ८ सौ ६८ मनुष्य ; योकोहामामें १ लाख २७ हजार ८ सौ ८७ मनुष्य। यह हुआ उन शहरोंका हिसाव, जिनमें १ लाखसे ज्यादा मनुष्य बसते हैं। इन शहरोंके अतिरिक्त जापानके ४ नगरोंकी बसती १ लाख और ६० हजारके वीचमें है। १२ शहर ऐसे हैं, जिनकी बसती ६० हजार और ४० हजारके वीचमें है। आगे, १२ ऐसे शहर भी हैं जिनकी आवादी ४० हजार और ३० हजारके वीचमें है। इनके अतिरिक्त इनसे भी छोटे नगरोंकी संख्या बहुत वड़ी है।

जापानकी १ करोड २० लाख एकड़ भूमिपर खेती होती है। हिसाव लगाकर देखा गया है, कि प्रति जापानवासीके हिस्सेमें पौन एकड़ जोती हुई भूमि पड़ती है। जमीनकी पैदावारके विचारसे प्रत्येक मनुष्यके हिस्सेका यह थोड़ा भूभाग भी थोड़ा नहीं कहा जा सकता। जापानमें २ फसलें होती

हैं। एक फसलके काटनेपर या काटनेके भी पहले दूसरी फसलके लिये बीज बो दिये जाते हैं।

सन् १८९० ई०की मनुष्यगणनासे जापानकी जनसंख्या इस प्रकार प्रकट हुई थीः—जापानके राजे महाराजे—३ हजार ७ सौ ६८; षिजोकू या समुराई जातिके लोग—२० लाख ८ हजार ६ सौ ४१; जन साधारण—३ करोड़ ८४ लाख ४१ हजार ५२। कुल ४ करोड़ ४ लाख ५३ हजार ४ सौ ६१। जापानका क्षेत्रफल १ लाख ४७ हजार ६ सौ ५६ है।

द्वितीय परिच्छेद।

आजकलके जापानवासियोंमें २ जातियां हैं। एक एनोस और दूसरी जापानी। अल्पसंख्यक एनोस-जातिके लोग हाण्डो द्वीपकी उत्तर ओर येज्जो टापूमें बसते हैं। सन् १८७५ ई०में जापानने रूसको सघेलियनद्वीप देकर रूसका क्युराइल-द्वीपसमूह ले लिया था। उस समय सघेलियन-द्वीपपर बसनेवाले जापानी और एनोस सघेलियन-द्वीप छोड़कर जापानमें आ गये थे। सघेलियनसे जापानमें आये हुए एनोस जातिके लोग भी येज्जो टापू हीमें बसते हैं।

एनोस जातिके लोग जापानके प्राचीन निवासी समझे जाते हैं। प्राचीनकालमें ये लोग येज्जो और हाण्डो टापूके उत्तरीय भागमें निवास करते थे। इनकी दक्षिण ओरके देशोंमें जापानियोंका निवास था। जापानियोंके इतिहासोंद्वारा प्रकट होता है, कि जापानी अपनी उत्तर ओर बसनेवाली असभ्य "एनोस" जातिको दमन करनेके लिये फौजें रवाना किया करते थे। जापानियोंने असभ्य जातिसे लड़ने भिड़नेके

लिये अपनी जातिके एक भागको लड़ाकी जाति बना ली थी। प्राचीनकालमें जापानवासी एनोसको "यमिशी" कहते थे। यमिशी शब्द यदि चीनकी भाषामें लिखा जावे, तो उसका अर्थ "असभ्य झींगा मछली" हो जाता है। जापानी भाषामें "एनोस" शब्दका सूत्र "इनू" है। इनूका अर्थ कुत्ता है। किन्तु एनोस जातिके लोग अपनेको एनोस न कहकर ऐञ्जो कहते हैं।

अनेक शताब्दियोंसे विजित होनेकी वजह और सम्यकरूपसे दबाये जानेके कारण एनोस जातिमें कट्टरपन नाममात्रको बाकी नहीं रहा है। अब वह शान्तिप्रिय, नम्र और बहुत सीधी बन गई हैं। जापानको सन् १८८० ई०वाली मनुष्यगणनाद्वारा जान पड़ा, कि ऐञ्जो-द्वीपमें १६ हजार ६ सौ ३७ एनोस बसते हैं। एनोसकी इस तायदादके क्रमशः घटनेकी सम्भावना की जाती है। एनोस परिश्रमी और मजबूत होते हैं। इस जातिके लोगोंके सर्व्वाङ्गमें बहुत बड़े बड़े बाल होते हैं। उनके कपड़े, मकान, औजार और खाना पीना आदि सब पुराने ढङ्गके हैं। शताब्दियां गुजर गईं, किन्तु एनोस जाति अपनी चालचलनमें

जहां पहले थी वहीं है। एनोस बहुत गन्दे होते हैं। बहुत कम नहाते हैं—साल दो सालमें कपड़े बदलते हैं। वे कोई पेशा वा रोजगार नहीं करते। लिखना पढ़ना नहीं जानते। उनके धर्मका भी सिर पैर नहीं मालूम होता। पर्व्वत और नदी पूजाते हैं। प्राचीनकालमें इस जातिके आदमखोर होनेका सन्देह किया गया था। किन्तु खूब जांच करनेके उपरान्त इनकी आदमखोरी अच्छी तरह प्रमाणित नहीं हुई। जो हो; मारकोपोलो साहब अपनी किताबमें जापानकी इस जातिको आदमखोर ही बता गये हैं।

एनोसके अतिरिक्त जापानमें एक और जङ्गली जाति रहती थी। यह जाति भूमिमें गड्हे खोदकर उसमें निवास करती थी। गड्हेके मुंहपर छप्पर डालती थी। जापानियों और एनोसके आक्रमणसे यह जाति नष्ट हो चुकी है। सघेलियन, कामसकटका और क्यूराइल प्रभृति टापुओंमें कहीं कहीं इस जातिके लोग नाममात्रको दिखाई देते हैं। जापानी इन्हें कोबिटो और एनोस इन्हें कोरोपोकगूके नामसे पुकारते हैं।

अब "जापानी" जातिका हाल सुनिये। यह जाति

उत्तरीय क्यूराइल-द्वीपसमूहसे लेकर दक्षिणमें रिउ-किउ-द्वीपसमूह पर्य्यन्त फैली हुई है। जापानी जाति मिली जुली है। इस जातिमें खूब भिन्न २ प्रकारके लोग हैं। इन दोनों तरहके लोगोंको मिले हुए मनाद्वियां बीत जानेपर भी इनकी पारस्परिक विभिन्नता स्पष्टरूपसे प्रकट हो जाती है। उत्तरकी अपेक्षा दक्षिणमें और मजदूरोंकी अपेक्षा हुजूरोंमें उस जातिके लोग पाये जाते हैं, जिनकी बनावट अपेक्षाकृत खूबसूरत है। आगे, दक्षिणकी अपेक्षा उत्तरमें और हुजूरोंकी अपेक्षा मजदूरोंमें अपेक्षाकृत बदसूरत जापानी पाये जाते हैं। इनका चेहरा चौड़ा और गालकी हड्डियां निकली हुई होती हैं। इनकी नाक चिपटी, आंखें कञ्जी होती हैं। जापानी जातिकी विभिन्नता मर्दोंकी अपेक्षा स्त्रियोंमें अधिक स्पष्टतासे प्रकट होती है।

एशियाखण्डकी जातियां दोवार जापानमें गई। पहलीवार एक जातिके लोग गये और दूसरीवार दूसरी जातिके। इसी कारण आजकलकी जापानी जातिमें दो बनावके लोग दिखाई देते हैं। जान पड़ता है, कि पहलीवारके लोग कोरियासे आये और हाक्को-

टापूके दक्षिणी प्रान्तमें ठहरे थे। वे पहले आनेवाले मङ्गोलियन जातिकी नितान्तअसभ्यशाखाके लोग थे। दूसरीबारके आनेवाले भी कदाचित् कोरिया हीकी राहसे आये थे और उन लोगोंने क्यूशू टापूको अपना निवासस्थान बनाया था। पहलीबार आनेवालोंके बहुत दिनों बाद दूसरीबार आनेवालोंका आना मालूम होता है। दूसरीबारका आनेवाला दल मङ्गोलिया जाति हीकी एक शाखा कहलानेपर भी पहले आनेवाले दलसे अधिक सभ्य, शान्त और बुद्धिमान था। इस दूसरीबारके आनेवाले दलके विषयमें इतिहास-लेखकोंका मतभेद है। कोई इस दलको कोरियासे आया हुआ बताता है और कोई ब्रह्मदेशके दक्षिणवाले मलाया प्रायद्वीपसे। इस दूसरे दलके मलाया प्रायद्वीपसे जानेका एक बहुत बड़ा प्रमाण यह है, कि दूसरे दलके वर्त्तमान वंशधरोंका आचार, व्यवहार, आकार, प्रकार मलायावालोंसे मिलता है। मलाया ब्रह्मदेशवासियों हीसे आबाद है। ब्रह्मदेश भारतका पार्श्ववर्त्ती देश माना जाता है। फलतः कितने ही लोग यह भी सोचते हैं, कि जापान प्रवेश करनेवालोंका दूसरा दल भारतवर्षकी ओरसे गया

था और वर्त्तमान जापान-जातिमें भारतवर्षवालोंकी सन्ततिका भी बड़ा भाग मिला हुआ है।

जापानियोंकी ऊंचाई साढ़े ४ फुटसे लेकर ५ फुट-तक हुआ करती है। जापानी स्त्रियोंकी ऊंचाई जापानी पुरुषोंकी अपेक्षा थोड़ीसी छोटी होनेपर भी प्रायः बराबर होती हैं।

तृतीय परिच्छेद।

सन् २८४ ई० तक जापानवासी लिखना और छापना नहीं जानते थे। इसके उपरान्त उन लोगोंने ये दोनो विद्यायें चीनसे सीखीं। पहले जापानवासी अपना इतिहास जबानी याद रखते थे। लिखने और छापनेकी विद्या प्राप्त करनेके बाद उन्होंने नियमित-रूपसे अपना इतिहास तय्यार किया। सबसे पहला,—जो जापान-इतिहास तय्यार हुआ उसका नाम था कोजिकी। इसके ८ वर्ष बाद याने सन् ७२० ई०में जापानियोंने निहोङ्गी नामक अपने देशका दूसरा इतिहास तय्यार किया। दोनो इतिहासोंमें प्रायः एक ही विषय है। अवश्य ही निहोङ्गी इतिहासमें प्रत्येक विषय विस्तारपूर्व्वक लिखा जानेकी वजह जापानवासी इसी इतिहासको ज्यादा मानते और पसन्द करते हैं। इस इतिहासका भाषान्तर अङ्गरेजी भाषामें भी हो चुका है। इसी भाषान्तरके आधारपर वर्त्तमान परिच्छेदमें हम जापानका इतिहास लिखनेकी चेष्टा करते हैं।

परकीयजातिवालोंका पहला दल हाण्डो टापूके इज़ुमो प्रान्तमें उतरा और वहीं वह रहने लगा। आगे दूसरा दल क्यूशू टापूमें उतरा और बहुत दिनों-तक वहां रहा। इस दलका एक सरदार था। काल पाकर सरदारके दो पोते उत्पन्न हुए। बड़ेका नाम था यशूशी और छोटेका जिम्मू। यशूशी और जिम्मूके मनमें अपना राज्य बढ़ानेका खयाल पैदा हुआ। वे अपनी जातिका दलबल लेकर हाण्डो और क्यूशूके बीचकी प्रणाली पार करके हाण्डो टापूमें पहुंचे। हम पहले कह चुके हैं, कि जापानमें जाने-वाले पहले दलके लोग हाण्डो टापूमें बसे थे। इस पहले दल तथा राजकुमार जिम्मूके दलमें घोर संग्राम हुआ। संग्राममें जिम्मूने जयलाभ किया। उस जातिको जीतकर वे आगे बढ़े और गड़होंमें रहने-वाली जङ्गली जातिको भी मार भगाकर यामाटोप्रदेशके काशीवाड़ा स्थानमें अपना विशाल प्रासाद निर्म्मित किया और वहीं अपनी राजधानीकी नीव डाली। ईसामसीहके जन्मसे ६ सौ ६० वर्ष पहले काशीवाड़ा-वाले विशाल प्रासादकी नीवका पत्थर रखा गया था और उसी समयसे जापान-साम्राज्यका स्थापित होना

समझा जाता है। जापानियोंका वर्त्तमान सन् भी उसी समयसे आरंभ हुआ था। आगे, इसी सन्‌में जापानसाम्राज्यका पहला बादशाह जिम्मू सिंहासनारूढ़ हुआ। सम्राट् जिम्मू १७५ वर्षपर्यन्त राज्य करके १ सौ २७ वर्षकी अवस्थामें पञ्चत्वको प्राप्त हुआ। सम्राट् जिम्मूका असामान्य पुरुषार्थ ही उसकी अलौकिक शक्तिका परिचय है।

अपने पिताकी मृत्युके उपरान्त जिम्मूका तीसरा पुत्र सुइजी सिंहासनारूढ़ हुआ। जान पड़ता है, कि उस समय जापानमें सिर्फ ज्येष्ठ पुत्रको सिंहासनारूढ़ करनेकी प्रथा नहीं थी। पिता अपने पुत्रोंमें सुयोग्य पुत्र देखकर उसे राजतिलकका अधिकारी करता था। सुइजीने सिंहासनारूढ़ होनेके उपरान्त अपना एक स्वतन्त्र महल तय्यार कराया। इसके उपरान्त सन् ७०८ ई० पर्यन्तके समस्त जापाननरेशोंने अपने महल अलग अलग तय्यार कराये थे। उस जमानेमें ईंट पत्थरकी जोड़ाईका काम जारी न रहनेकी वजह प्रत्येक सम्राट द्वारा तय्यार कराये हुए महल बहुत शानदार नहीं हुए थे। जापानके वर्त्तमान शिण्टोमन्दिर पुराने जमानेके काष्ठनिर्मित मह-

लोंके नमूने हैं। सम्राट् सुइजीने ३२ वर्षपर्यन्त राज्य करके ८४ वर्षकी अवस्थामें मानवीयलीला सम्बरण की। इस सम्राट्के किसी विशेष कामका वर्णन इतिहासमें नहीं पाया जाता।

सम्राट् सुइजीकी मृत्युके उपरान्त उसका एकलौता पुत्र एनी सिंहासनारूढ़ हुआ। यह सम्राट् ३७ साल राज्य करके ५७ सालकी उम्रमें मर गया।

इसके उपरान्त इटोकू, कोशो, कोआन, कोरी, कोगन, और केकवा नामक सम्राट् यथाक्रम जापानके अधीश्वर हुए। जापानका दशवाँ सम्राट् हुआ सुजन। सम्राट् केकवाका यह कनिष्ठ पुत्र था। यह ६० वर्षांतक राज्य करके १ सौ १८ वर्षकी उम्रमें परलोकगत हुआ। सुजनके शासनकालमें एक तरहकी महामारीने जापानमें फैलकर जापानको प्रायः उजाड़ कर दिया था। सुजनने जापानमें पहले पहल टिकस लगाया था। पहला टिकस लगा था जापानी स्त्रियोंकी बनाई हुई चीजों और शिकारियोंके बिकनेवाले शिकारपर। इस सम्राट्ने अपनी राजधानी और निकटस्थ प्रदेशोंमें जलभाण्डार बना दिया था। इस जलसे चावलके खेतोंमें

श्रावशाखी की जाती थी। इस सम्राट्के शासनकालमें देशी कारीगरी बढ़ानेको भी खूब कोशिश की गई थी।

सम्राट् सुजनकी मृत्युके उपरान्त उसका छोटा बेटा सूनिन सिंहासनारूढ़ हुआ। ९८ वर्षपर्य्यन्त राज्य करके १ सौ ४१ वर्षकी अवस्थामें इसने शरीर-त्याग किया। इस सम्राट्के शासनकालमें इसके प्राण-वधकी चेष्टा की गई थी। इस सम्राट्से पहले, जापानके सम्राट्-घरानेमें एक बहुत भयङ्कर प्रथा प्रचलित थी। जापान-सम्राट्के या सम्राट्-घरानेके किसी मनुष्यकी मृत्यु पर मृत मनुष्यके नौकर और सवारीके घोड़े भी मृत मनुष्यके शवके साथ साथ जीवितावस्था हीमें मट्टीके भीतर गाड़ दिये जाते थे। ये जीवित मनुष्य और घोड़े शवको चारो ओर मट्टीमें गरदनतक तोप दिये जाते थे। उनका शिर बाहर निकला रहता था। जबतक वे जीवित रहते थे अकथनीय यन्त्रणाकी वजह चिल्लाया करते थे। चिल्लाते चिल्लाते—नाना पीड़ायें सहते सहते—अन्तमें उनके प्राण निकल जाते थे। सम्राट् सूनिनका एक छोटा भाई था। उसकी मृत्यु होनेपर उसके घोड़े और नौकर चाकर उसकी लाशके साथ साथ इसी तरह गाड़ दिये गये। गड़े

हुए जीवोंकी लोमहर्षण मृत्युसे सम्राट् सुनिनका चित्त चञ्चल हुआ। उसने आज्ञा दी,—"भविष्यमें कोई जीवित मनुष्य या पशु लाशके साथ न गाड़ा जावे। लाशोंके साथ जानदारोंकी जगह मट्टीके पुतलोंको भूसमाधि देने हीसे काम चलेगा।" जान पड़ता है, कि इसके बाद भी यह भयानक प्रथा प्रकृत रूपसे रुकी नहीं थी। कारण, इसी सम्राट्को सन् ६४६ ई०में ऐसे ही मर्मकी और एक आज्ञा जारी करना पड़ी थी। इस आज्ञाके उपरान्त भी कभी कभी जीवधारी मुरदोंके साथ गाड़े जाते थे। किन्तु जापानमें बुद्धधर्मका प्रचार होनेके कारण सन् ७०० ई०में यह प्रथा एकबार ही विलोपित हो गई।

सुनिनकी मृत्युके उपरान्त उसका छोटा लड़का कायको सिंहासनारूढ़ हुआ। कायकोके कनिष्ठ पुत्रका नाम था यामाटोडेट। यामाटोडेट निर्भीक और अत्यन्त भयङ्कर राजकुमार था। उसने अपना सगा भाई मार डाला था। भारी, इसने अपने पिताकी आज्ञासे जापानसाम्राज्यको सुविस्तृत किया था—बागियोंका दमन किया था और एनोसजातिको जापानसम्राट्के अधीन कर दिया था। अन्तमें यह राजकुमार अपने

पिताकी मृत्युसे पहले ही मर गया था। सम्राट् कायको ५८ वर्षपर्य्यन्त राज्य करनेके उपरान्त १ सौ ४३ वर्षकी अवस्थामें पञ्चत्वको प्राप्त हुआ।

इस सम्राट्की मृत्युके उपरान्त इसका पोता—यानि सम्राटकुमार यामाटोडेटका लड़का सीमू जापानके सिंहासनपर अधिष्ठित हुआ। इस सम्राट्के समय कोई विशेष घटना नहीं हुई। इस सम्राट्ने ६८ वर्षपर्य्यन्त राज्य करके एक सौ ८ वर्षकी अवस्थामें देह-त्याग किया।

सम्राट् सीमूकी मृत्युके उपरान्त इसका ज्येष्ठ कुमार चुआई सिंहासनारूढ़ हुआ। इस सम्राट्ने केवल ८ वर्षपर्य्यन्त राज्य करके शरीर त्याग किया। इस सम्राट्ने कोरियापर आक्रमण करनेकी इच्छा की थी। जापानके हाण्डोद्वीपकी अपेक्षा जापानका क्यूसूद्वीप कोरियाके अधिक समीप है। सुतरां कोरियाके समीप पहुंचनेके अभिप्रायसे इस नरपतिने अपनी राजधानी हाण्डोसे उठाकर क्यूशूमें बनाई थी। किन्तु कोरिया-पर आक्रमण करनेके पहले ही सम्राट्की मृत्यु हो गई। सम्राट् चुआईकी सम्राज्ञी जिङ्गोकोगो बहुत बुद्धिमती और वीररमणी थी। उसने अपने पतिकी

मृत्यु का समाचार छिपा रखा और अपने मन्त्रीसे परामर्श करके बहुत बड़ी सैन्य साथ लेकर कोरियापर चढ़ाई की। सम्राज्ञीने कोरियाविजय किया। कोरिया राज्यको अपना करद बनाया। इसके बाद जापानमें लौटकर अपने पतिकी मृत्यु का समाचार प्रकाश किया और अपने पुत्र ओजिनको सिंहासनपर बैठाया। जापानमें ऐसी वीररमणियां विरल हुई हैं। यह अपनी विचक्षण बुद्धि और अद्भुत कार्य्यदक्षताकी वजह आज-तक जापानके घर घर सुख्यातिके स्वरूपमें जी रही है।

सम्राज्ञी जिङ्गोकोगोका बेटा ओजिन ४० वर्ष-पर्य्यन्त जापानका शासन करके ५ सौ १० वर्षकी अव-स्थामें परलोकगामी हुआ। इसके बाद सम्राट् ओजि-नका मंझला लड़का निनटोकू सिंहासनपर बैठा। यह ८६ वर्षतक राज्य करके १ सौ १० वर्षकी अवस्थामें मृत्युको प्राप्त हुआ। यह सम्राट् बहुत समझदार और दयालु था। इसने जापानके प्रत्येक प्रदेशमें आदमी भेजकर उनसे वहांका इतिहास लिखाना आरम्भ किया था। इस सम्राटके बादसे जापान-इति-हास बहुत अच्छी तरह लिखा गया। हम आगे जो कुछ लिखेंगे अब इसी इतिहासके आधारपर लिखेंगे।

चतुर्थ परिच्छेद।

प्राचीनकालमें जापानिराज्यका शासन जातीय परिवार-शासनके नियमानुसार किया जाता था। सम्राट् सबसे बड़ा सरदार माना जाता था और उसके जागीरदार उसके जङ्गीसहायक समझे जाते थे। दरबारमें कितने ही बहुदर्शी और अनुभवी सलाहकार मौजूद रहते थे। और मौजूद रहते थे, अनेक देशों तथा गांवों भृत्य-समूहके प्रधान अफसर। इन लोगोंके मासिकवेतनका जिक्र जापान-इतिहासमें नहीं मिलता। प्राचीनकालमें टिक्सके रुपये वसूल नहीं किये जाते थे। टिक्समें लोगोंसे चीजें ली जाती थीं। आपसके लेन देनमें भी रुपयेकी जगह चीजोंका अदल बदल होता था। कुम्हार चमारको मट्टीके बरतन देता था। चमार इसके बदले कुम्हारको जूते देता था।

जापानमें प्राचीनसमय शिण्टोधर्म्म ही प्रचलित था। आजकल जापानमें बुद्धधर्म्म प्रबल हो गया है सही,---किन्तु इसकी प्रबलतासे शिण्टोधर्म्म एक-

बार ही विलोपित नहीं हो गया है। शिण्टोधर्मके २ प्रधान उद्देश्य हैं। एक मूर्त्तिपूजा,—दूसरा स्वविवेकानुसार काम करना। शिण्टोधर्मावलम्बियोंके अगणित देवता हैं। इनमें कितने ही ऐसे भी थे जिनकी कुछ दिनोंतक पूजा की गई और आजकल उनका नामतक लोगोंको मालूम नहीं है। शिण्टोधर्मके अनेक देवता बहुत प्रसिद्ध और गण्यमान्य हैं। उनके मन्दिर बनाये गये हैं और शिण्टोधर्मावलम्बी जापानी उन मन्दिरस्थ देवोंकी बहुत श्रद्धा भक्तिके साथ प्राचीन कालसे पूजते चले आते हैं। जापानके आइस स्थानमें अनेक शिण्टोमन्दिर हैं। इन मन्दिरोंमें सूर्य्यदेवीका मन्दिर सर्व्वापेक्षा अधिक माननीय और पूज्य है। शिण्टोधर्मावलम्बी जापानी सूर्य्य देवीको अपनी उत्पत्तिका कारण समझते हैं। जापानद्वीपसमूहके नाना भागोंमें नाना शिण्टोमन्दिर पाये जाते हैं।

शिण्टोधर्मावलम्बी अपने धर्मके आदेशानुसार कई विचित्र काम करते थे। सूर्य्यदेवकी ओर पीठ करके युद्ध नहीं करते थे। घरमें एक ही प्रदीप प्रज्वलित करनेको अपशकुन समझते थे। रात्रिके समय

वालोंमें बड़ी नहीं करते थे। युद्धके समय पहला छोड़ा हुआ तीर जिस जगह गिरता था उस जगहकी जानकर युद्धका फलाफल निर्णय करते थे। हिन्दुओंकी तरह वे लोग भी अपने घरानेमें जन्म वा मृत्यु होनेके बाद कुछ दिनोंतक छूत मानते थे। जिस घरमें किसीकी मृत्यु होती थी-वह अशुद्ध समझा जाकर परित्याग कर दिया जाता था। पुत्रप्रसव करनेके समय स्त्री किसी विशेष घरमें रखी जाती थी। इस घरमें द्वारके अतिरिक्त खिड़की नहीं होती थी। मनुष्यकी मृत्युपर उसका शव घरसे निकाला जाकर बहद्वारपर रखा जाता था। शवकी चारों ओर अनेक मनुष्य बैठ जाते थे। वे रोया करते थे—साथ साथ खाया भी करते थे इत्यादि इत्यादि।

प्राचीनकालके जापानी अपने बच्चोंको तीर तलवार चलाने होकी शिक्षा दिया करते थे। और ढङ्गकी शिक्षा थी ही नहीं,—वे अपने बच्चोंको देते क्या? सन् २८४ ई०के उपरान्तसे जापानमें लिखने पढ़नेकी शिक्षा भी दी जाने लगी। वर्त्तमान जापानी भाषाका प्राचीन स्वरूप उस समय लिखने पढ़नेमें व्यवहृत था। निहोंङ्गी और कोजिकी नामक

जापान-इतिहास प्राचीनकालकी जापानी भाषामें लिखे गये हैं। प्रत्येक देशकी प्राचीनभाषाका स्वरूप प्राचीनकालकी कविता हीसे मालूम होता है। सुतरां जापानकी प्राचीनभाषा भी उनकी अति प्राचीन कविताओं द्वारा मालूम हुई है। प्रमाण, तो नहीं मिलता, किन्तु अनेक इतिहासलेखकोंका कथन है, कि प्राचीन कालकी जापानी भाषा साइबेरिया और उत्तरीय चीनकी भाषा बिगाड़कर तय्यार की गई थी।

प्राचीनकालकी जापानियोंको समय जाननेकी यथोचित रीति मालूम नहीं थी। दिनके समय वे सूर्य्यकी स्थिति देखकर समय निर्द्धारित करते थे और रातके समय मुरगोंकी बांग सुनकर। अन्तमें चीनी लोग अपना पञ्चाङ्ग जापान ले गये। उसी समयसे जापानवासी बाकायदा समय जानना सीख गये!

पुरानेवक्तके जापानी निहायत गोश्तखोर थे। जापानमें बुद्धधर्म्म फैलनेपर जापानियोंकी गोश्त-खोरी बहुत घट गई। अनेक जीवोंका धर्म्मवर्ज्जित गोश्त उन्होंने छोड़ दिया। आजकलके जापानी

अपने देशका पक्वान्न, मछली और घोंघे ही विशेषतः खाते हैं। जापानकी एक देशी मदिराका नाम है साकी। जापानमें साकी बहुत प्राचीनकालसे तय्यार की जाती है। इसको प्राचीनकालके लोग भी पीते थे और आजकलके लोग भी पीते हैं। जापानी कहते हैं साकी हमारे देशमें आविष्कृत हुई है। किन्तु अनेक प्रमाणोंसे साकीका चीनसे जापानमें जाना सिद्ध होता है। अस्तु; प्राचीन-कालके जापानी लकड़ीकी छुरियोंसे काटने छांटनेका काम करते थे—मट्टीके बरतनोंमें खाना पकाते थे और शाहबलूतकी पत्तियोंको सींकोंसे जोड़कर दोने बनाते और उन्हीं दोनोंमें पानी पीते थे।

जापानकी पुरानी कहानियोंसे जान पड़ता है, कि वे तीन तरहके कपड़े व्यवहारमें लाते थे। मोटा, पतला और चमकीला। ये तीनो तरहके कपड़े शहतूत-वृक्षकी छाल, सन और जानवरोंके चमड़ेसे तय्यार किये जाते थे। सन् ८०० ई०में जापान-सम्राट क्षाम्मूके समय भारतवर्षसे जापानमें पहले पहल रूई गई। इसके पहले जापानमें रूई जानेका हाल मालूम नहीं होता है। भारतवर्षसे रूई

जानेपर जापानियोंने सूती कपड़े तय्यार करना शुरू किये। जापानी पायजामा, ढीला कुरता, कमरबन्द और टोपी विशेषतः व्यवहारमें लाते थे। अगले वक्तमें जापानमें आभूषण पहननेकी प्रथा बहुत तेज थी। स्त्री पुरुष सभी आभूषण पहना करते थे। प्राचीनसमयके जापानी शृङ्गारदानकी सजावट,—शीशा और कङ्घीसे खूब काम लेते थे। प्राचीन-समयका शीशा कांचसे नहीं,—किसी धातुसे बनाया जाता था। उस धातुका नाम अज्ञात है।

प्राचीनकालके शिण्टोमन्दिर ही जापानके प्राचीन-कालके मकानोंके नमूने हैं। ये मकान सिर्फ काठसे तय्यार किये जाते थे—इनकी बनावटमें बहुत सादगी रहती थी। लकड़ीके ४ मोटे मोटे स्तम्भ गाड़कर उसीपर काठकी गच, लकड़ीके तख्तोंकी दीवारें और फूसकी छत तय्यार कर दी जाती थी। प्राचीनकालके बादशाहोंका निवास भी ऐसे ही झोंप-ड़ेनुमा मकानोंमें होता था।

खास जापानमें नाना प्रकारके पौधे उत्पन्न होते थे और इस समय भी उत्पन्न होते हैं। उन पौधोंको छोड़कर जापानमें अन्य प्रयोजनीय और उपयोगी

पौधे विदेशसे गये। चाय, आलू और नारङ्गी एशियासे गई। १६ वीं शताब्दिमें सुरती पुरतगालसे गई और गत ८ वीं शताब्दिके आरम्भमें रुई भारतवर्षसे गई।

प्राचीनकालके जापानियोंके औजार बहुत कम थे। एक औजार था मछली पकड़नेकी वंसी और दूसरा हंसवानुमा तलवार। इसके अलावा वे लकड़ी आदि चीरनेके लिये एक तरहकी कुल्हाड़ीसे काम लेते थे। यह कुल्हाड़ी पत्थर या हरिणके सींगद्वारा तय्यार की जाती थी। प्राचीनकालमें जापानियोंके हथियार थे,—तीरकमान, बरछी, तलवार और छुरा। जापानियोंके किले बहुत सादे होते थे। लकड़ीके लट्ठोंके हिराव होसे किला तय्यार कर लेते थे।

प्राचीनकालमें जापानी घोड़ों और नावोंद्वारा स्थानान्तरकी यात्रा किया करते थे। बुद्धधर्म प्रचारके उपरान्त जापानमें बैलगाड़ी भी चलने लगी, किन्तु बहुत दिनोंतक बैलगाड़ीपर सिवा जापानसम्राटके और कोई सवार नहीं होता था।

जापानदेशपर ऐशियाखण्डका खासा प्रभाव पड़ा है। ईस्वी सन्से ३ हजार वर्ष पहले चीनदेश

खूब सभ्य और शिक्षित समझा जाता था। इस बातसे यह समझना होगा, कि जापानमें जापान-साम्राज्यका आविर्भाव होनेके बहुत पहलेसे चीन शिक्षित और उन्नत माना जाता था। यदि जापानियोंको मङ्गोलियनजातिकी शाखा समझना ही पड़ेगा, तो साथ साथ यह भी मान लेना पड़ेगा, कि मङ्गोल-जातिके चीनी और जापानी एक ही वृक्षकी दो शाखायें हैं। जापानी जातिमें अपूर्व्व धारणाशक्ति है। उन्होंने चीनसे विद्या धारण की चीनसे विज्ञान सीखा। भारतसे बुद्धधर्म्म पाकर उसको शिरोधार्य्य किया। आगे, उसी धारणा शक्तिके बलसे पाश्चात्य जातियोंकी नाना विद्यायें वे कृतार्थता पूर्व्वक सीख रहे हैं।

जापान-सम्राट निन्तोकूका हाल हम पीछे लिख आये हैं। इसका चौथा पुत्र और जापानका १८ वां सम्राट इन्क्यो सिंहासनारूढ़ हुआ। इसके शासन-कालमें कोरियाकी वैद्यकविद्याका प्रचार जपानमें हुआ। सम्राट इन्क्योकी मृत्युके उपरान्त उसका द्वितीय पुत्र इयको सिंहासनपर बैठा। इसने अपनी चाचीके साथ विवाह किया। इस सम्राटके मरनेके

बाद इसका छोटा भाई यूरीयाकूटिन्नो सिंहासनपर बैठा। इसकी मृत्युके उपरान्त इसका पुत्र सीनो जापानका सम्राट बना। सीनो ५ वर्षपर्य्यन्त राज्य करके मर गया। इस सम्राटकी सन्तति न रहनेकी वजह जापानके १८ वें सम्राट् रीचूके घरानेका राजकुमार केनजो सिंहासनपर बैठा। इसकी मृत्युके उपरान्त इसका बड़ा भाई निनकेन जापानपति बना। इसकी मृत्युके उपरान्त मुइत्सू, कैताईटिन्नो, अङ्कानटिन्नो, और सेङ्कुआटिन्नो नामक सम्राट यथाक्रम सिंहासनपर बैठे।

सेङ्कुआटिन्नोकी मृत्युके उपरान्त सम्राट् कैताईटिन्नोका पुत्र किम्मोटिन्नोका राज्याभिषेक हुआ। यह ३२ वर्षपर्य्यन्त राज्य करके ६३ वर्षकी अवस्थामें पञ्चत्वको प्राप्त हुआ। इसी सम्राट्के समयमें,—याने सन् ५५२ ई०में,—शाक्यमुनि वा बुद्धदेवका धर्म्म जापानमें पहुंचा। भारतके इतिहाससे जान पड़ता है, कि मगधदेशके नरपति अशोकने ईसामसीहकी उत्पत्तिके प्रायः २ सौ ५७ वर्ष पूर्व्व बुद्धधर्म्म अङ्गीकार किया था। इसके कुछ ही वर्षोंके बाद उन्होंने जापान प्रभृति देशोंमें बुद्धधर्म्मप्रचारके लिये

उपदेशकदल भेजे थे। जान पड़ता है, कि यह दल धीरे धीरे एशियाखण्डमें फैलकर बुद्धधर्मका प्रचार करता रहा, और इस दलकी सन्तति महाराज अशोकके समयसे प्रायः ५ सौ वर्षके उपरान्त जापान पहुंच सकी। इसने जापानमें बुद्धप्रतिमा प्रतिष्ठित की। जापानियोंको बुद्धपूजा सिखाई।

सम्राट् किम्मीटिन्नोकी मृत्युके उपरान्त उसका भाई बितात्सूटिन्नो सिंहासनारूढ़ हुआ। इसके शासनकालमें कोरियासे जापानमें इतनी चीजें आईं;—बुद्धधर्मकी पुस्तकें, एक मन्दिर बनाने वाला, एक मूर्त्ति बनानेवाला, एक बौद्धपुजारी, अनेक बुद्ध-धर्मके उपदेशक और एक सन्यासिनी। इस सम्राट्ने कोरियासे अनेक बुद्धप्रतिमायें मंगाईं और उन्हें जापान-द्वीपसमूहके भिन्न भिन्न भागोंमें प्रतिष्ठित करवा दीं।

सम्राट् बितात्सूकी मृत्युके उपरान्त योमी जापान-सम्राट हुआ। इस सम्राट्के समय बौद्धजापानी और शिण्टोजापानियोंमें खूब झगड़े चले। इस सम्राट्की मृत्युके उपरान्त सुजन नामक मनुष्य जापान-सिंहासनपर बैठा। इस सम्राट्के शासनकालमें

बुद्धधर्म्म खूब प्रबल हो गया। शिण्टोधर्म्म अधोगतिको प्राप्त हुआ।

सम्राट् सुजनकी मृत्युके उपरान्त जापानके भूतपूर्व्व सम्राट् बोमीकी बहन सुइकी जापानकी सम्राज्ञी हुई। यह सम्राज्ञी अपने भतीजे शोटोकूतायशीसे राज्यकार्य्यमें सहायता लेती थी। जापान-इतिहासमें शोटोकूतायशीकी बहुत तारीफ लिखी है। यहांतक लिखा है, कि शोटोकू उत्पन्न होते ही बातचीत करने लगा था। जो हो; शोटोकू विद्वान, बुद्धिमान और धीर गम्भीर पुरुष था। वह एक ही समयमें अनेक काम विधिपूर्व्वक सम्पन्न करता था। उसने जापानका बुद्धधर्म्म बहुत पुष्ट किया। राज्यके समस्त उच्च-कर्म्मचारियोंको बुद्धदेवकी ताम्बेकी मूर्त्ति अपने घरमें स्थापन करनेके लिये बाध्य किया। ईसी मनुष्यके समयमें बुद्धधर्म्मकी ५ आज्ञायें जापानमें जारी की गईं। पांचो आज्ञाओंका मर्म्म देखिये ;—

(१) चोरी न करना।

(२) झूठ न बोलना।

(३) मादकद्रव्योंका व्यवहार न करना।

(४) अहिंसाको परमधर्म्म समझना।

(५) परस्त्री गमन न करना।

इस मनुष्यने अनेक बुद्धमन्दिर प्रस्तुत कराये—बुद्धधर्मके अगणित उपदेशक तय्यार कराये। उस समयकी गणनाद्वारा ज्ञात पड़ा है, कि उसवक्त जापानमें ४६ बुद्धमन्दिर स्थापित हुए और १ हजार ३ सौ ८५ बौद्ध-साधु और साधुनियां तय्यार हो गई थीं। शोटोकूतायशीने चीनदेशके राजविधानानुसार जापान-साम्राज्यका राजविधान तय्यार किया। इसीके समयसे जापानी श्रद्धापूर्व्वक चीनीभाषाका साहित्य पढ़ने लगे थे। इसीके समय जापानमें चीन तथा कोरियासे रेशमके कीड़े और शहतूतका पौधा आया। इसीके समय जापानमें कोरियाकी भूगोलविद्या, वैद्यक, तथा ज्योतिषविद्याका प्रचार हुआ। प्रायः २८ वर्षपर्य्यन्त जापानका राजकार्य्य करके शोटोकूतायशी सन् ६२२ ई०में परलोकगत हुआ। शोटोकूतायशीकी मृत्युके ६ वर्ष बाद सम्राज्ञी सुइकोका भी देहान्त हो गया।

पञ्चम परिच्छेद।

आजकल संसारमें तीन तरहसे राज्यशासन होता है। एक प्रजाद्वारा,—जैसे फरांसमें और अमेरिकामें। दूसरा सम्राट्‌द्वारा,—जैसे रूसमें और रूम इत्यादिमें। तीसरी तरहसे शासन होता है सम्राट् और प्रजा दोनोंद्वारा। विलायतमें तथा अन्यान्य देशोंमें इसी तरहका शासन प्रचलित है। सो जापानमें पहले सम्राट्‌द्वारा शासन हुआ करता था। बादशाहकी आज्ञा ही राजविधान समझी जाती थी, किन्तु वर्त्तमान समयमें जापानका शासन विलायतके शासन जैसा होता है। जापानसम्राट् अपनी प्रजाका परामर्श लेकर जापानका राज्यकार्य्य करते हैं।

गत परिच्छेदके अन्तमें हम सम्राज्ञी सुइकोकी मृत्युका हाल लिख चुके हैं। इसके उपरान्त सम्राट् जोमेई, सम्राज्ञी कोकोकिओकू, सम्राट् कोटोकू, सम्राट् सायमेई, यथाक्रम सिंहासनारूढ़ हुए। सम्राट् सायमेईके बाद सन् ६६८ ई०में सम्राट् तेनजी सिंहासनारूढ़ हुआ था। जापानकी एक छोटी फ़ौज कोरियामें

रहती थी। सम्राट् तैनजीके शासनकालमें कोरियाके सिराको नामक जातिने इस जापानी फौजपर आक्रमण किया। जापानी फौज भागकर जापान चली आई। उसके साथ तरह तरहके कोरियन कारीगर भी जापानमें चले आये थे।

इसके उपरान्त जापानमें अनेक सम्राट् हुए। इनकी नामावली इस पुस्तकके अन्तमें प्रकाश की गई है। इनमें अनेक सम्राटोंके शासनकालमें कोई विशेष बात नहीं हुई। इस वजह हम उनके शासनकालका हाल न लिखेंगे। जिस सम्राट्के समयमें कोई प्रयोजनीय बात हो गई है उसका ही विवरण हम आगे प्रकाश करते हैं। सन् ३७४ई०में सम्राट् टिन्नूके शासनकालमें जापानके सुशिमाद्वीपमें चांदीकी खानि मिली थी। इस सम्राट्ने जापानियोंका मांसभक्षण निषेध कर दिया और प्रत्येक जापानवासीको बुद्धधर्म अवलम्ब करनेकी सलाह दी। प्रायः सन् ७१० ई०में सम्राज्ञी गैम्मियोके शासनके वक्त मुसाशी स्थानमें तांबेकी खानि पाई गई। जापानमें इससे भी पहले तांबेके सिक्के चलते थे। तांबेकी खानि निकलनेके पूर्व जापानसरकार तांबेके सिक्के तय्यार करनेके लिये कोरिया और चीनसे तांबा मंगाया

करती थी। सन् ७५८ ई०के उपरान्त सम्राट् जुन्निनके शासनकालमें जापानसें सोनेका सिक्का पहले पहल चलाया गया। इसी सम्राट्के शासनकालमें शवदाहकी प्रथा जापानमें चली। आजकल भी जापानका एक समाज अपने मृतकोंका शवदाह किया करता है। सन् ६९० ई०के उपरान्त सम्राज्ञी जितोके शासन-कालमें बुद्धमन्दिरोंकी गणना ४३से बढ़कर ५ सौ ४५ हो गई थी। सन् ७३६ ई०में सम्राट् शोमूके शासनकालमें बुद्धदेवकी एक विशालमूर्त्ति तय्यार की गई। इस मूर्त्तिकी ऊंचाई प्रायः ३६ फुट है। नारा-स्थानमें मूर्त्तिप्रतिष्ठा होनेके बाद मूर्त्तिपर एक मन्दिर तय्यार किया गया। मन्दिर दोबार अग्निसे भस्म हो गया था। तीसरीबार फिर मन्दिर तय्यार किया गया। तीसरीबारका तय्यार किया हुआ मन्दिर बुद्धमूर्त्ति सहित जापानके नारास्थानमें आजतक मौजूद है। इस मन्दिरको जापानी तोदाइजीके नामसे पुकारते हैं। सन् ७९४ ई०में सम्राट् कीआकूने क्यूटोस्थानमें अपनी राजधानी तय्यार की। आज जिस जगह क्यूटोका विशाल नगर बसा हुआ है सन् ७९४ ई०के पहले वहां सघन बन था। सन् १८६८ ई०तक जापानकी

राजधानी क्यूटो ही थी। इसके उपरान्त जापानके वर्त्तमान सम्राट् मैत्सुहितोने टोकियो नगरमें राजधानी स्थापित की। सन् ७२४ ई०के उपरान्त सम्राट् शोमूने घोर विद्रोही एनोस जातिका दमन करनेके लिये एक विशाल सैन्य भेजी थी। यह सैन्य फूजीवारा घरानेके एक सरदारकी अधीनतामें गई थी।

फूजीवारा घरानेका हाल जानने लायक है। भारत-इतिहास पढ़नेवाले पाठकोंको मालूम होगा, कि सन् १७१२ ई०में दिल्लीकी गिरती हुई मुगलिया बादशाहीके समय अब्दुल्ला और हुसैन नामक दो भाई दिल्लीमें निहायत जबरदस्त बन गये थे। इन लोगोंने अपनी चालाकी और सञ्चितशक्तिके बलसे मुगल-बादशाहोंको अपने हाथकी कठपुतली बना लिया था। जिसको चाहते सिंहासनपर बैठाते और जिसको चाहते सिंहासनसे उतार देते थे। फलतः प्रायः तीन वा चार मनुष्योंको इन दोनोंने दिल्लीका बादशाह बनाया और फिर उनसे रुष्ट होकर उन्हें सिंहासनके नीचे उतार दिया। प्रायः सन् ८८०ई०में जापानके फूजीवारा घरानेको भी इन्हीं दोनों भाइयोंकी जैसी शक्ति प्राप्त हो गई थी। वे अपने घरानेकी स्त्रियांतक जापान-सम्राटोंको

माय विवाह देते थे। फूजीवारा घरानेद्वारा जितने जापानसम्राट् सिंहासनच्युत किये गये उनकी नामावली देखिये,—यिवा, फुजाकू, तोवा, रोकूजो, ताकातूरा, दूगोजो, रोजो, इनिड, क्काजान और गोनिजो। जापानके सिंहासनच्युत सम्राट् संसारसे उदासीन होकर संन्यासी बनकर बौद्धमठमें बैठ जाते थे। फूजीवारा घरानेकी यह राजदमनकारी शक्ति सन् १०५० ई० पर्य्यन्त रही।

इसीसमय जापानमें कुछ घराने ऐसे बन गये थे जिनके लोग लड़ाईमें अफसर बनाकर भेजे जाते थे। ऐसे घरानोंमें तायराघराना सर्व्वश्रेष्ठ समझा जाता था। सन् ८०६ ई०में जापान-सम्राट् क्काम्मूका घराना ही तायरा घरानेके नामसे प्रसिद्ध हुआ और इसी घरानेने क्रमशः उन्नति करके फूजीवारा घरानेकी शक्ति एकबार ही मिट्टीमें मिला दी। तायरा घरानेके साथ साथ जापानसम्राट् मिवाका मिनामोटो नामक जङ्गी घराना भी क्रमशः शक्ति प्राप्त करता जाता था। इसी जगह और एक बात सुन लीजिये! फूजीवारा घरानेकी शक्ति घटने और अन्यान्य जङ्गी घरानोंकी शक्ति बढ़नेके साथ साथ

जापानी जाति दो भागोंमें विभक्त हो गई। एक तरहकी जाति मुल्की कामोंमें मशगूल हुई और दूसरी तरहकी जाति जङ्गी कामोंमें।

हम ऊपर लिख चुके हैं, कि तायरा नामक जङ्गी घराना क्रमशः उन्नति करके सर्वश्रेष्ठ जङ्गी घराना बन गया, किन्तु इस घरानेके साथ साथ मिनामोटो नामक जङ्गी घराना भी शक्तिसम्पन्न होता गया। तायरा घरानेकी शक्ति यहांतक बढ़ गई, कि उसने गोषिराकावा नामक मनुष्यको जापानका सम्राट् बना दिया। मिनामोटो घरानेको यह बात अच्छी नहीं मालूम हुई। उसने जापानसिंहासनके स्वत्वाधिकारी एक बालक राजकुमारका पक्ष ग्रहण करके तायरा घरानेके साथ युद्ध किया। तुमुल संघर्ष हुआ। मिनामोटो घराना परास्त हुआ विजयी तायरा घरानेका बल प्रबल हो गया। आगे तायरा-घरानेके एक प्रधानपुरुष कियोमोरी अपने घराने-द्वारा राजसिंहासनपर बैठाये गये सम्राट् गोषि-रकावाको सिंहासनसे उतारकर भी स्वयं जापान सम्राट् नहीं बना,—मंत्रीकी तरह राजकार्य करता रहा। उधर युद्धमें परास्त हुए मिनामोटो घरानेके

प्रधानपुरुष योरीटोमोने तायरा घरानेके साथ फिरसे युद्ध करनेकी तय्यारी की। किन्तु दूसरीवार युद्ध होनेके पूर्व्व ही तायरा घरानेके सर्व्वप्रधान और अपूर्व्व क्षमताशाली मन्त्री कियोमोरीने शरीरत्याग दिया। कियोमोरीके मरते ही मिनोमोटोजातिका पथ परिष्कृत हुआ। उसने दूसरीवार तायरा घरानेके साथ युद्ध किया। यह युद्ध भी नितान्त भयङ्कर हुआ। इनमें तायरा-घराना पराजित हुआ। उसकी शक्ति बिलकुल टूट गई। मिनोमोटो-घरानेका प्रधानपुरुष योरीटोमो ही इस दूसरी लड़ाईका प्रधान नेता था। उसीकी कलाकौशलसे मिनोमोटोघरानेने सैन्य संग्रह किया था और उसीकी युक्तिसे तायरा घराना परास्त हुआ था। किन्तु स्वयं योरीटोमो सैन्यका बड़ा भाग लेकर एक दूसरी ओरसे जापान-राजधानीपर आक्रमण करनेके लिये अग्रसर हो रहा था। मिनोमोटो घरानेकी जिस फौजसे तायरा घरानेकी सैन्य पराजित हुई, वह सैन्य योरीटोमोके चचेरे भाई योशीनाकाके अधीन थी। योशीनाकाने तायरा घरानेकी सैन्य परास्त करके जापानकी राज-धानीमें प्रवेश किया और गोतोबा नामक राजवंशीय

पुत्रको जापानका सम्राट् बना दिया। साथ साथ आप सम्राट्का शोगन बन गया। जापान-भाषामें शोगनका अर्थ असभ्यजातिदमनकारी है। किन्तु यथार्थमें—शोगन—प्रधान सेनापतिकी मर्य्यादासूचक उपाधि है। सो योशीनाका शोगन बन गया। ७ वर्षके बालक जापान-सम्राट् गोतोबाको अपने हाथका खिलौना बना लिया। योरीटोमोका कुछ खयाल न किया। योरीटोमोने राज्यप्राप्तिकी चेष्टा की;—फललाभ किया योशीनाकाने।

योशीनाकाकी स्वार्थान्धतासे योरीटोमो नितान्त असन्तुष्ट हुआ। उसने अपने छोटे भाई योशिटसूनके नेतृत्वमें एक जबरदस्त फौज योशीनाकाको दमन करनेके लिये भेजी। बिवा झीलके किनारे योशिटसून और योशीनाकाकी फौजोंका घोर संग्राम हुआ। योशीनाकाकी फौज परास्त हुई। जीवनोपाय न देखकर योशीनाकाने आत्महत्या कर ली। योशीनाकाके मरनेका हाल सुनते ही तायरा घरानेका प्रधान सरदार मिउनेमोरी पदच्युत जापान-सम्राट् अराटोकू उनकी माता और कुछ सैन्यसहित हाण्डोटापू परित्याग करके क्यूशू-टापूकी ओर भागा। पदच्युत

सम्राट्का परिवार तथा उसकी साथकी फौज प्रायः ५ सौ बड़ी बड़ी नावोंद्वारा ह्वाङ्गो-टापू और क्यूशू-द्वीपकी बीचवाली प्रणाली पार कर रही थी। योशिटस्न भी ससैन्य नावपर सवार हुआ। ह्वाङ्गोके शिमोनोसेकी गांवके सामने वारिधिवक्षपर दोनो ओरकी नावोंका सामना हुआ। घोर नौ-युद्ध उपस्थित हुआ। नौ युद्ध चल रहा था, ऐसेही समय पदच्युत सम्राट्की माता पदच्युत-सम्राट् अराटोकूको गोदमें लेकर समुद्रजलमें फांद पड़ीं और दोनो गभीर जलराशिमें निमग्न हुए। तायरा घरानेका प्रधान अफसर मिनेमोरी गिरफ्तार हुआ और मार डाला गया। इस नौ-युद्धमें तायरा घराना प्रायः नष्ट हो गया। जो लोग बच गये थे क्यूशू टापूमें जाकर रहने लगे और उन्होंने जापानकी अन्यान्य जातियोंसे मिलना जुलना छोड़ दिया। इस समय भी तायरा घरानेके लोग संसारमें मिलनेकी अपेक्षा एकान्तवाससे अधिक प्रेम रखते हैं।

पूर्वकथित नौ-युद्धके उपरान्त योरीटोमोका जमाना आया। योरीटोमो दूरदर्शी और वीर पुरुष था। किन्तु अपने एक कामसे उसने अपनेको हंगास्पद बना डाला। उसने अपने छोटे भाई योशिटस्नके साथ बहुत गन्दा

व्यवहार किया। योषिटस्नू होने अपने भुजविक्रम और रणकौशलसे योरीटोमोके वैरियोंका नाश किया था। किन्तु योषिटस्नूका पराक्रम ही योषिटस्नूका वैरी हो गया। उसका पराक्रम देखकर उसका बड़ा भाई उससे ईर्षाद्वेष करने लगा। योषिटस्नू नौ-युद्धमें विजय प्राप्त करके और वैरियोंकी सैन्यसे छीनी हुई ध्वजा पताका लेकर अपने भाईसे मिलने चला। उस समयकी जापानराजधानी क्यूटोमें पहुंचकर अपनी फौजका पड़ाव डाला। योरीटोमो उस समय कामा-कुरा नगरमें था। उसने क्यूटोमें ठहरे हुए योषिट-स्नूको लिखा,—"मेरे पास आनेकी जरूरत नहीं है। वैरीकी ध्वजा पताका आदि कोषीगोई नामक नगरमें रख दो।" बड़े भाईका इतना गन्दा व्यवहार देखकर योषिटस्नू बहुत उदास हुआ। वह अपनी फौज छोड़-कर कोषीगोई नगरके मासचफूजी नामक मठमें चला गया। वहोंसे उसने अपने बड़े भाईकी चिट्ठीका जवाब लिखा। जवाबका मर्म्म था,—"आपके रुष्ट हो जानेसे मैं नितान्त हृदयभग्न हुआ हूं। मैंने अपने लिये कुछ नहीं किया है। जो कुछ किया आपके लिये और आपकी आज्ञासे। आशा है,

कि आप मुझपर प्रसन्न होंगे। मुझे दर्शनके सौभाग्यसे वञ्चित न रखेंगे।" इस चिट्ठीका कोई फल नहीं हुआ। योशिटसून भाईके क्रोधसे भीत हुआ। वह भागकर अपने पुराने दोस्त हिडहिराके पास चला गया। फूजीवारा घरानेका हिडहिरा मतसूका गवरनर था। हिडहिराने योशिटसूनको यत्नसहित अपने पास रखा। कुछ दिनके बाद हिडहिराने शरीरत्याग किया। उसका लड़का यासुहिरा मतसूका गवरनर हुआ। यासुहिराने योरीटोमोको प्रसन्न करनेके लिये योशिटसूनको सन् ११८९ ई० में मार डाला। मरनेके समय योशिटसूनकी अवस्था प्रायः ३० वर्षकी थी। योशिटसूनकी मृत्युका समाचार पाकर योरीटोमोने क्रुद्ध होनेका बहाना किया। अपने छोटे भाईके हत्यारे यासुहिराको दण्ड देनेके लिये एक छोटी सी फौज भी भेज दी। किन्तु स्वार्थान्ध योरीटोमो वीर योशिटसूनकी मृत्युसे मनं ही मन प्रसन्न हुआ था। योशिटसूनको मरे बहुत दिन बीते, जापानवासी आजतक उसे प्रतिष्ठापूर्व्वक याद किया करते हैं।

योशिटसूनकी मृत्युके उपरान्त योरीटोमो खूब निश्चिन्त हो गया। वह कामाकुरानगरसे जापान-

राजधानी क्यूटोमें बालकसम्राट् गोतोवाके मिलने गया। सम्राट्ने योरि टोमोका धूमधामी खागत किया। १ महीनातक जापानराजधानीमें जलसे होते रहे। इसके बाद योरीटोमो अपने प्यारे नगर कामाकुराको लौट गया। योरीटोमोने अपने मित्र ओइनोहिरोमोटोके सभापतित्वमें जापानशासनके लिये एक सभा स्थापित की। जापानदेशमें फौजदारी अदालतें खोलीं। जापान-सम्राट्से कह सुनकर अपने घरानेके ५ मनुष्योंको ५ प्रदेशोंका गवरनर मुकर्रर कराया। आगे, प्रत्येक प्रदेशके गवरनरोंके पास अपना एक आदमी रख दिया। ये आदमी गवरनरोंको जरूरी कामोंमें परामर्श दिया करते थे। काल पाकर इन आदमियोंकी शक्ति बढ़ गई और उन्होंने गवरनरोंके अनेक स्वत्व स्वाधीन कर लिये। सन् ११९० ई० में जापानसम्राट्ने योरीटोमोको शोगनकी पदवी प्रदान की। शोगन-पदवी मिलनेके साथ साथ योरीटोमोकी अधिकारवृद्धि हुई। योरीटोमोने अधिकार पाकर जापानदेशका उप-कार किया। प्रसङ्गवश एक बात याद आ गई! केमफर नामक फरांसीसी इतिहास-लेखक अपनी,—"हिष्टरी हिल् इम्पायर डू जापोन" नाम्नी पुस्तकमें जापानके

शोगनोंका हाल प्रकाश करता हुआ लिखता है,—"जापानमें दो तरहके सम्राट् होते थे। एक सम्राट्, दूसरा शोगन-सम्राट्। दोनोंके अधिकार समान होते थे।" किन्तु अङ्गरेजीमें लिखे गये अनेक जापान-इतिहासों और जापानीभाषाके नेहाङ्गी आदि इतिहासके अङ्गरेजीभाषान्तरोंके पढ़नेसे शोगन और जापान-सम्राट्के अधिकारोंकी समानता प्रकट नहीं होती है। पहले दरजेकी शक्ति जापान सम्राट्में और दूसरे दरजेकी शक्ति शोगनमें समझी जाती थी। अवश्य ही शोगन समस्त जापानवासियों की अपेक्षा श्रेष्ठ और शक्तिशाली होता था। प्रजापर उसका बड़ा प्रभाव रहता था—सम्राट्पर भी उसके प्रतिष्ठित पदका असर होता था। अनेक शोगन इस असरको बढ़ानेकी चेष्टा करके बढ़ा भी लेते थे। अनेक इसको अनुचित रीतिसे बढ़ाते थे। पार्थिव सुखोंकी ललचौली झलक मनुष्यका मन मतवाला बना देती है—इस महापरीक्षामें पड़कर मनुष्यका चित्त प्रायः चञ्चल हो जाता है—प्रभुता पाकर धीर गम्भीर विचारवान पुरुषोंको भी मद आ जाता है।

योरीटोमो सन् ११९२ ई० में जापानका पहला

शोगन बना। इसके बाद सन् १८६८ ई० पर्य्यन्त जापानमें शोगन बनानेकी प्रथा प्रचलित रही। अन्तमें वर्त्तमान जापान-सम्राट् मतसुहितोके शासनकालमें जापानकी शोगन पदवी एकबार ही तोड़ दी गई। शोगन योरीटोमोने जापानके राजविधान, कृषि, शिल्प आदि अनेक विषयोंकी खूब तरक्की दी। सबसे ज्यादा तरक्की दी जापानी फौजको। जापानके गल्ले पर टिक्स लगाया। इस टिक्सकी आमदनीसे बादशाही सैन्यको बढ़ाया। उन्हें शिक्षा दिलाई और उनको अच्छे हथियारोंसे सुसज्जित किया। एक दिन योरीटोमो घोड़ेपर सवार होकर सागामी नदीका नया पुल देखने गया। लौटनेके समय घोड़ेकी पीठसे जमीनपर दैवात् गिर पड़ा। सख्त चोट आई। इसी चोटसे उसने ५३ वर्षकी अवस्थामें संसार त्याग किया। योरीटोमोको कुछ और वर्षोंतक जिन्दा रहनेकी जरूरत थी। उसने जापान-साम्राज्यका यथाशक्य सुधार किया था। वह जापान-सम्राट्का भी सुधार किया चाहता था। किन्तु मृत्युने उसको यह प्रयोजनीय काम न करने दिया। काम रह जानेसे हर्ज हुआ। जापान-सम्राट् विशेषतः अपनी अयोग्यताके कारण दुर्दशाग्रस्त हुआ।

षष्ठ परिच्छेद।

योरीटोमोकी मृत्युके उपरान्त हीसे जापान-साम्राज्यको निर्बल बनानेवाले काम आरम्भ हो गये। योरीटोमोके उपरान्त उसका अष्टादश वर्षीय पुत्र योरी जापानका शोगन बनाया गया। योरी विलासी लक्ष्यभ्रष्ट और आलसी था। होजो टोकीमासा नामक योरीका नाना योरीके पदका काम करने लगा। योरी नाममात्रके लिये शोगन था। होजोटोकीमासा शोगन नामधारी न होनेपर भी प्रकृत शोगन था। कुछ दिनोंके बाद योरी भयङ्कर रूपसे रोगाक्रान्त होनेकी वजह किसी काम लायक न रहा। योरीके नानाने अपनी बेटी वा योरीकी मातासे सलाह करके योरीके छोटे भाई सिमान और योरीके द्वादश वर्षीय लड़के इचिमानको शोगनपद दिलवाना चाहा। योरीने पहले अपने नानाकी सलाह मञ्जूर नहीं की। अन्तमें नानाके दबावमें पड़कर योरीको यह बात मान लेना पड़ी। अयोग्य योरीके जिम्मेसे शोगनका दायित्वपूर्ण काम ले लिया

गया। हृदय-भग्न—निकम्मा योरी,—किसी बौद्ध-मठमें बैठकर अपनी जिन्दगी काटने लगा। योरीका छोटा भाई सानेटोमी शोगन बना। इतनी योरी बौद्धमठमें भी चैनसे बैठने न पाया। उसके नाना टोकीमासाने उसकी क़त्ल करा दिया। इस अभागी योरीके पुत्र इचिमानका वृत्तान्त ऊपर लिख आये हैं। इचिमानने दूसरेके परतन्त्र होकर अपने चचा याने शोगन सानेटोमोकी हत्या की। अति भयङ्कर फल उत्पन्न हुआ। चचाकी हत्याके अपराधमें राजाज्ञाद्वारा इचिमानका सिर सन् १२१८ ई०में कलम करा दिया गया। साथ साथ अद्भुतकर्म्मा शोगन योरीटोमोका वंश निर्वंश हुआ। प्रचण्ड प्रतापवान योरीटोमोने अपने घरानेका मार्त्तण्ड उदित किया था—अभागे बालक इचिमाने उसको चिरकालके लिये अस्त कर दिया :—

"किसीको रफ़अत किसीको पस्ती, जहांका यह कारोबार देखा।"

अपनेको सन्ततिविहीना पाकर योरीटोमोकी विधवा स्त्री मैसा-गोने जापान-सम्राट् जनतोकूकी आज्ञा लेकर फ़ूजीवारा घरानेके योरिट्सून नामक

२ वर्षके शिशुको शोगन बनाया। शिशु शोगन राज्य-कार्य्य कैसे करे? सो शिशु शोगनकी जगह राज्यकार्य्य करनेके लिये ४।५ मनुष्योंकी एक समिति स्थापन की गई। समितिके प्रधान मनुष्यका नाम रखा गया होजो। काल पाकर होजो लोगोंने शक्ति बढ़ाई—प्रभाव बढ़ाया। जापान-सम्राट्‌पर भी उनका प्रभाव पड़ा। जिसको चाहते थे जापान-सम्राट् बना देते थे और इच्छा होते ही जापान-सम्राट्‌को सिंहासनच्युत कर देते थे। अपनी शक्ति अक्षुण्ण रखनेके लिये लड़कोंको जापान-सम्राट् बनाते थे। जब बालक सम्राट् समय पाकर वयः प्राप्तिके समीप पहुंचते थे, तो उन्हें वे सिंहासनसे उतारकर किसी दूसरे बालकको जापान-सम्राट् बना देते थे। अपना अधिकार कायम रखनेके लिये वे शोगनोंके साथ भी ऐसा ही व्यवहार करते थे। बालक शोगनको वयोवृद्ध नहीं होने देते थे। जो बालक शोगन बचपन बिताकर युवावस्थामें पदार्पण करता था उसे या, तो मरवा डालते थे और या पद-च्युत कर देते थे। उसकी जगह किसी बालकको शोगन बना देते थे। होजो लोगोंकी नालायकीसे जापानका राज्यकार्य्य बहुत खराब हो गया। अन्तमें

उद्योहद होजो लोग भी मर खपकर मिट गये। बालक लोग होजन बनाये गये। होजन बालकोंके सम्बन्धीगण होजनका काम करने लगे। जापान-राज्यका शासन लड़कोंका खेल बन गया। सम्राट् बालक,—शोगन बालक,—होजन बालक,—राजा और उच्च कर्मचारी सभी बालक थे! जापानकी दशा दिनोंदिन शोचनीय होने लगी।

इसी समय जापानपर एक बाहरी विपत्ति उपस्थित हुई। यदि इस समय जापानी अपनी पूर्व्वप्राचीन शक्तिसे काम न लेते, तो आज जापानकी दशा और ही कुछ होती। उस समय चङ्गेजखांका लड़का किबलाखां चीनका सम्राट् हुआ। उसने जापानपर निगाह की। अपना एक दूत जापानमें रहनेके लिये भेजा। जापान-सरकारने चीनदूतको निकाल दिया। इसपर किबला खांने रुष्ट होकर कोरियाकी सहायता लेकर फौजी नावोंके एक बेड़ेद्वारा जापान और कोरियाके मध्यमें अवस्थित जापानके सुशिमा टापूपर अधिकार कर लिया। इसके बाद चीनसम्राट्ने अपना दूत फिर जापानमें भेजा। इसबार क्रुद्ध जापानियोंने चीनदूतको जानसे मार डाला। चीनसम्राट् किबलाखां

क्रोधके मारे लाल हो गया। सन् १२८१ ई०में एक लाख चीनी सिपाही प्रायः ३ सौ जङ्गी नावें द्वारा जाकर जापानके क्यूशू टापूमें उतरे। इसी टापूपर चीन-जापानका घोर संग्राम उपस्थित हुआ। चीनी सिपाही परास्त हुए। उनकी जङ्गी नावोंका बेड़ा भी प्रचण्ड तूफानमें पड़कर नष्ट हो गया। जापानकी अन्तरस्थ अवस्था खराब रहनेपर भी जापानियोंने बाहरी शत्रुके साथ दिल खोलकर युद्ध किया और अपने देशको विदेशियोंके हाथमें पड़नेसे बचाया।

जापानका बाहरी झगड़ा खतम हो गया, पर भीतरका झगड़ा चलता रहा। सन् १३१८ ई०में गोडायगो नामक जापान-सम्राट्ने होजो लोगोंको दबाना चाहा। होजो दबे नहीं उलटा इतने जबरदस्त बन गये, कि सम्राट् गोडायगोको अपना सिंहासन छोड़कर ओकी टापूमें भाग जाना पड़ा। होजोने गोडायगोकी जगह गोकोगेन नामक मनुष्यको जापान-सम्राट् बना दिया। उधर पदच्युत सम्राट् गोडायगोने ३ सेनापतियोंकी अधीनतामें एक विशाल सैन्य एकत्र की और चढ़ाई करके जापान-राजधानी क्यूटोपर कबजा किया। गोडायगो एकबार फिर जापान-सम्राट्

हुआ। इस सम्राटने होजो घरानेका सर्व्वनाश करके होजो पद मिटा दिया। आगे सम्राट् गोडायगोके तीन प्रधानसेनापतियोंमें आशिकागा नामक सेनापति राजद्रोही बन गया। सम्राट् और आशिकागाकी फौजोंमें लड़ाई हुई। सम्राट् हार गया और अपने सम्राट्‌चिन्हों सहित क्यूटोसे भागकर क्यूटोकी दक्षिण ओरके पार्व्वत्यप्रदेशमें निवास करने लगा। इधर सेनापति आशिकागाने अपनेको शोगन बनाया और कोमियोटेन्नो नामक मनुष्यको जापानसम्राट्। सन् १३५८ ई०में आशिकागाका स्वर्गवास हुआ। इसके उपरान्त आशिकागाके घरानेके लोग यथाक्रम शोगन हुए। आशिकागाके पोते शोगन योशी-मितसूको चीनसम्राट्‌ने जापाननरेशकी उपाधि दी थी। योशीमितसूने भी चीनसम्राट्‌को प्रतिवर्ष सवा ३१ सेर सुवर्ण देना शुरू किया था। हम ऊपर लिख आये हैं, कि सम्राट् डायगो जापानके सम्राट्‌चिह्नों सहित क्यूटोकी दक्षिण ओरके पार्व्वत्यप्रदेशमें भाग गया था। इधर क्यूटोमें एक नवीन सम्राट् बनाया गया था। सो उधर सम्राट्-चिह्नोंको अपने पास रखनेकी वजह सम्राट् गोडायगोके

घरानेके लोग भी अपनेको जापानसम्राट् समझते थे। इस तरहसे जापानमें २ सम्राट् हो गये थे। शोगन योशीमत्सुने दोनो सम्राटोंको मिला देना चाहा। उसके खूब परिश्रम करनेपर सम्राट् डायगोके घरानेके कामीयामा नामक नोमुमावके सम्राट्‌ने सन १३९२ ई०में क्यूटोमें आकर जापानसम्राट् गोकोमात्सुको अपने पासके सम्राटचिह्न दे दिये। जापानमें २ सम्राट् रहनेका झगड़ा खतम हो गया।

इन दिनों जापानदेशकी दशा बहुत खराब हो गई थी। जापानके नालायक शासकोंकी वजह दिनों दिन देशका अधःपतन हो रहा था। जापानके रोजगार क्रमशः नष्ट होते जाते थे। जापानके कृषकगणने खेती बारी छोड़ दी थी। तय्यार फसलें लड़नेवाली फौजोंके पैरोंके नीचे कुचली जाती थीं। हत्या, डाके, और चोरियोंने जोर पकड़ लिया था। भले आदमियोंको धन-रक्षा और प्राणरक्षा करना कठिन हो गई थी। रईस कङ्गाल बने—लुटेरे धनाढ्य हुए। कहांतक कहें,—एक समय जापानसम्राट्‌तकके अर्थकोषमें खाक उड़ने लगी। सन् १५०० ई० में जापानसम्राट्

गोस्चो सेकाडोका स्वर्गवास हुआ। उस समय सम्राट्का खजाना इतना खाली था, कि मृत जापानसम्राट्की लाशकी अन्तिमक्रिया बहुत दिनोंतक रुकी रही। सिर्फ अर्थाभावके कारण ४० दिनोंतक जापानसम्राट् गोस्चो सेकाडोकी लाश राजप्रासादमें पड़ी रह गई थी।

सप्तम परिच्छेद।

—⊷—

सी आशिकागा घरानेवाले शोगनोंके जमानेमें जापान-साम्राज्य दिनोंदिन रसातलको चला जाने लगा था। ऐसे ही समय—याने सन् १३४२ ई०में पुरतगाली लोग पहले पहल जापानमें गये। मलाया प्रायद्वीपके समीप मोलक्काज नामक द्वीपसमूह है। पहले इसपर पुरतगालका अधिकार था। आजकल उसका कबजा है। इस समयके मोलक्काजका गवरनर गालवानो ही पहले पहल जापानमें गया था। गाल-वानोने प्रकट किया था, कि हमारे जहाजके ३ मनुष्य भागकर जापानमें चले गये थे; उन्हींको पकड़नेके लिये हमने जापानप्रवेश किया था। किन्तु जापान-इतिहाससे उन तीनो कैदियोंका कुछ हाल नहीं लिखा है। इसी कारण हम यह बतानेमें असमर्थ हैं, कि पुरतगाली गवरनर गालवानोने कैदियोंवाली बात सत्य कही थी या नहीं।

इस घटनाके ३ वर्ष बाद—याने सन् १५४५

ई०में पिण्टो नामक पुरतगाली अपने कई साथियों-सहित जापान—क्यूशू-टापूके दक्षिणीय भागमें टैन-गाशिमा स्थानमें जहाजसे उतरा। टैनगाशिमाके राजाने पिण्टोका खूब सम्मान किया। पिण्टोने राजाको एक तोड़ेदार बन्दूक भेटमें दी और बारूद बनानेकी हिकमत भी बता दी। पिण्टो जापानमें प्रायः साढ़े पांच महीनेतक रहा। उसके रवाना होनेके समय टैनगाशिमामें प्रायः ६ सौ तोड़ेदार बन्दूकें तय्यार हो गई थीं। कुछ ही वर्षोंके उपरान्त पिण्टोको विदित हुआ, कि जापानके समस्त भागमें तोड़ेदार बन्दूकें बनने लगी हैं और प्रायः प्रत्येक जापानीके घरमें ये आग्नेय अस्त्र मौजूद हैं। राजा टैनगशिमाने पिण्टोको अपने सम्बन्धी राजा बङ्गोके पास भेज दिया। पिण्टोने बङ्गोनरेशको गठियारोगसे आरोग्य किया। बङ्गोका राजकुमार तोड़ेदार बन्दूकके फटनेसे जल गया था। उसको भी आरोग्य किया। पिण्टोको इन कामोंके बदलेमें बङ्गोनरेशने प्रचुर प्रमाणसे सुवर्ण प्रदान किया था। पिण्टो सुवर्ण लेकर जापानसे चला गया। किन्तु सन् १५४७ ई०में फिर जापानमें गया। इसबार वह बहुतसी सौदा-

गरोंकी चीजें भी लेता गया। सौदागरोंका माल बेचकर और प्रचुर अर्थ सञ्चित करके उसने फिर जापान परित्याग किया। इसवार २ जापानी भगेलोंको भी अपने साथ लेता गया। पिएटो मलाया प्रायद्वीपके मलाका नामक नगरमें पहुंचा। वहां पुरतगाली पादड़ी जावियरसे उसकी मुलाकात हो गई। पिएटोने जावियरको दोनो जापानी भगेले दे दिये। जावियरने उन्हें ईसाई बना लिया। सन् १५४८ ई०की १५ वीं अगस्तको जावियर दोनो जापानी ईसाई और २ पादरियोंके साथ जापानके सत्सुमा प्रदेशकी राजधानी कागोशियामें पहुंचा। महाराज सत्सुमाने जावियर और उनके साथियोंको सम्मानपूर्व्वक अपने देशमें रखा। अपनी राजधानीमें जावियरको ईसाई धर्म्मका उपदेश देनेकी आज्ञा भी दी। इसी समय पुरतगालके अनेक सौदागरी जहाज हिरडो-टापू और सत्सुमा-प्रदेशकी राजधानी कागोशिमानगरके बन्दरगाहमें पहुंचे। इन जहाजोंका विलायती माल खरीदकर जापानी बहुत प्रसन्न हुए। कुछ दिनोंके उपरान्त कोगोशिमा-बन्दरगाहके जहाज हिरडो टापूकी ओर रवाना हुए। जहाजोंके चले जानेसे महाराज सत्सुमा

जावियरपर क्रुद्ध हुए और उसको अपने प्रदेशसे निकल जानेकी आज्ञा दी। जावियर हिराडो गया और हिराडो-नरेशकी आज्ञासे उसने वहां एक गिरजा बनाया। इसके उपरान्त जावियर जापानके प्रधान टापू हान्डोमें गया और वहांसे जापानकी राजधानी क्यूटोमें पहुंचा। राजकर्मचारियोंकी नालायकीकी वजह क्यूटोमें उस समय बहुत हलचल मची थी। जावियरको अपना धर्मोपदेश देनेका मौका न मिला। वह वहांसे लौटकर बङ्गोदेशमें पहुंचा और २ वर्ष ३ महीनेतक जापानमें रहकर सन् १५५१ ई०की २० वीं नवम्बरको एक जहाजद्वारा चीनकी ओर रवाना हुआ। राहमें जहाज हीपर जावियर मर गया। जावियर मर गया, किन्तु जापानमें वह अपने अनेक शिष्य और दो पादड़ियोंको छोड़ गया। जावियर जापानमें ईसाई धर्मकी नीव दे आया—अन्यान्य ईसाई उस नीवपर फलोदयपरिश्रमद्वारा इमारत तय्यार करते रहे। जावियरकी मृत्युके उपरान्त महाराज ओमूरा ईसाई हो गया। उसने अपने प्रदेशका नागासाकी बन्दर ईसाइयोंके निवास और व्यापारके लिये दे दिया। यह बन्दर बड़े मौकेपर बना

है। इसमें पुर्तगालके बड़े बड़े भीड़ारी जहाज भी सरलता-पूर्व्वक प्रवेश कर सकते थे। सन् १५७३ ई०में नागसाकी नगरके प्रायः समस्त निवासी ईसाई हो गये। बुद्धमन्दिर तोड़े गये। उनकी जगह गिरजे तय्यार किये गये।

एक ओर ईसाई लोग इस प्रकार जापानमें अपना प्रचार कर रहे थे—दूसरी ओर जापानमें नवनाग नामक मनुष्य क्रमशः प्रबल होता जा रहा था। नवनागका सम्बन्ध तायरा घरानेसे था। ओवारी प्रदेशमें उसके पिताकी जागीर थी। अपने पिताकी मृत्युके उपरान्त सन् १५४८ ई०में नवनाग अपने पिताकी जागीरका मालिक बना। नवनाग दृढ़प्रतिज्ञ और अत्यन्त वीर पुरुष था। उसका अन्तःकरण कुसुमवत कोमल था—किन्तु उसका आकार तेजोमय और भयङ्कर था। वह सबपर सरदारी किया चाहता था। अनेक लोग उसके हृदयकी कोमलताको न जानकर उसके स्वरूप और उसकी ऊपरी बातोंसे असन्तुष्ट हो जाया करते थे। अपने पिताकी मृत्युके उपरान्त नवनाग अपने पड़ोसी जागीरदारोंकी जागीरोंपर क़ब्ज़ा करके अपनी जागीर बढ़ाने लगा। जिस

समय नवनाग क्रमशः बलिष्ठ और प्रसिद्ध होता जाता था, उस समय ओकीमाची जापानका सम्राट् था और आशिकागा घरानेका योशीफ़ुयां जापानका शोगन। दोनो नवयुवक थे—दोनो नातरजबेकार और निकम्मे थे। जापानसाम्राज्यके प्रत्येक प्रदेशके राजे महाराजे स्वतन्त्र हो गये थे और आपसमें खूब लड़ा झगड़ा करते थे। सन् १३५८ ई॰में नवनागने अपनी जागीर बहुत दूरतक बढ़ा ली थी। शिबाता जनटोकू और माकूमाईमन नवनागकी फ़ौजके सेनापति थे और विश्वस्थ हिडियोशी नवनागका प्रधानसेनापति था। सन् १५६७ ई॰ में शोगन योशीतेरी अपने एक नौकरद्वारा मार डाला गया। योशीतेरीके छोटे भाई योशीयाकीने शोगन-पद प्राप्त करना चाहा। लोगोंने बाधा दी। योशीयाकीने शोगन बननेमें नवनागसे सहायता पानेकी प्रार्थना की। दूरदर्शी शोगनने योशीयाकेकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और चेष्टा करके उसको शोगन बना दिया। योशीयाकीने इसके बदलेमें नवनागको नायबशोगन मुक़र्रर किया। नवनागके प्रिय सेनापति हिडियोशीको जापानी फौजोंका प्रधानसेनापति बना दिया।

सम्राट् ओगीमाचीने सन् १५७० ई०के दिसम्बर मासमें नववर्षोत्सव करनेकी विज्ञप्ति दी। उस समयकी जापानराजधानी क्यूटो नगरी खूब सुसज्जित की गई। इसी उत्सवपर नवनाग बहुत बड़ी फौजके साथ राजधानीमें गया। उन दिनों एचिजनप्रदेशका महाराज असाकुरायोशीकेग जापान-सम्राट्के विरुद्ध था। नववर्षोत्सवसे निवृत्ति लाभ करके नवनागने एचिजनप्रदेशपर चढ़ाई की। महाराज असाकुरा-योशीकेगको परास्त किया। असाकुरा भागा। ऐसे ही समय ओसाका-प्रदेशमें अशान्तिके लक्षण दिखाई दिये। नवनाग अपनी फौजसहित ओसा-कामें शान्तिस्थापन करने चला गया। इधर मैदान खाली देखकर एचिजन-प्रदेशके भगेले महाराजने एक बड़ी फौज तय्यार करके राजधानी क्यूटोपर चढ़ाई की। एनरियाकूजी नामक सुदृढ़ मठ-समूहके महन्त नवनागसे असन्तुष्ट थे। उन लोगोंने असाकुराकी सहायता दी। किन्तु असाकुराकी चढ़ाईका हाल नवनागको यथासमय पहुंच गया। असाकुराकी सैन्य क्यूटोतक पहुंचने न पाई थी, कि नवनाग अपनी फौजसहित मुकाबलेमें पहुंच गया।

भयङ्कर युद्ध हुआ। अन्तमें असाकुराकी सैन्य ध्वस्त विध्वस्त हो गई और उसको भक मारकर नवनागसे सन्धि कर लेना पड़ी। इधर नवनागने एनरियाकू-जीके महन्तोंको असाकुराकी सैन्यको सहायता देनेके बदलेमें कठोर दण्ड दिया। सहस्र सहस्र महन्त कटवा दिये और उनके सुदृढ़ मठोंको तोड़ फोड़कर धराशायी बना दिया।

इसके उपरान्त नवनागने अनेक राजविरोधी राजों महाराजोंका गर्व्व खर्व्व किया। सन् १५७८ ई०में नवनागने अपने प्रधान सेनापति हिडियोशीको महाराज चोसूको अधीन करनेके लिये भेजा। ५ वर्ष-पर्य्यन्त अविराम युद्ध हुआ। अन्तमें महाराज चोसू टाकामत्सू नामक किलेमें घिर गया। टाकामत्सू किलेकी खन्दकसे होकर एक नदी बहती थी। हिडि-योशीने इस नदीका जल नीचे किसी जगह रोक दिया। जलप्रवाह रुकनेसे किलेके गिर्द्द बहुत जल एकत्र हो गया और यह जल क्रमशः बढ़कर दुर्गमें भयङ्कर प्लावन उपस्थित करनेकी धमकी देने लगा। इसी समय हिडियोशीने नवनागको बुलाया। नवनाग अपने सेनापति अकेशीकी अधीनतामें फौज लेकर

क्यूटोसे टाकामत्सू दुर्गकी ओर रवाना हुआ। नव-नागने एकबार दिल्लगीकी राहसे सेनापति अकेशीके शिरपर २।४ चपतें लगा दी थीं। उसी समयसे अकेशी गुप्तरीतिसे नवनागका जानी दुश्मन बन गया था। नवनाग थोड़ेसे शरीररक्षक सिपाहियोंके साथ फौजके पीछे पीछे चल रहा था। एक रातको वह हन्वजीके मन्दिरमें ठहर गया। अकेशीको यह बात मालूम हुई। उसने अपनी फौजसहित जाकर हन्व जीका मन्दिर घेर लिया। नवनागको पकड़कर मार डालनेकी चेष्टा की। उधर नवनागने प्राणरक्षाका कोई उपाय न देखकर आत्महत्या कर ली। इस प्रकार सन् १५८२ ई०में नवनागका प्राणान्त हुआ।

नवनागकी अकाल मृत्युसे देशमें हाहाकार फैल गया। नवनागके संसारत्याग करनेपर जापान नव-नागके सर्व्वप्रधान सेनापति सुयोग्य हिडियोशीको आशादृष्टिसे देखने लगा। साकुमा और शिबाता नामक दो मनुष्य हिडियोशीके बैरी थे। दोनो प्रति-पत्तिशाली थे—किसी जमानेमें नवनागकी फौजमें सेनापति भी रह चुके थे। अकेशी इन दोनोंसे ज्यादा हिडियोशीका बैरी था। अकेशीको पाठक भूले न

होंगी। वही—जो नवनागकी आत्महत्याका कारण हुआ था,—वही अकेगी स्वामिभक्त हिडियोशीको भी जीता रहने नहीं दिया चाहता था। उसको मार डालनेके लिये अपने दो लफ्टिनण्ट नियुक्त किये थे।

नवनागकी मृत्युके समय हिडियोशी ताकामत्सु दुर्गके घिरावमें मसरूफ था। वहीं उसको नवनागकी मृत्युका भीषण समाचार मिला। इधर बागी सेनापति अकेशीने नवनागकी मृत्युका समाचार ताकामत्सु दुर्गमें घिरे हुए चोजू या—महाराज मोरीटेरूमोटोको भी भेज दिया। अकेशी चाहता था, कि इस खबरको सुनकर घिरा हुआ महाराज निर्भीक होकर हिडियोशीको हैरान और विफलमनोरथ करे। किन्तु महाराज मोरीटेरूमोटो नवनागके राजधानी परित्यागका हाल सुनते ही बहुत डरा। उसने नवनागकी मृत्युका समाचार पानेके पहले ही हिडियोशीको किलेमें दाखिल कर लिया और अपने हथियार उसके सामने डाल दिये। हिडियोशीने नवनागकी मृत्युका समाचार पाते ही अपनी उदारप्रकृतिका परिचय दिया। विजित महाराजसे कहा,—"नवनाग-

परलोकगामी हुए हैं। यदि उनके आगमनभयसे भीत होकर आपने हार मान ली हो, तो आप अपनी हार लौटा लीजिये। मैं किलेके बाहर निकल जाता हूं। आप उसका द्वार बन्द करके फिरसे युद्ध आरम्भ कीजिये।" महाराज मोरीटेस्लोटो अपने पहले कामपर कायम रहा। उसने हिडियो-योसे सन्धि कर ली। हिडियोयी इस ओरसे निश्चिन्त हुआ। अब उसने नृशंस बागियोंकी ओर ध्यान दिया।

हिडियोशी अपनी फौज लेकर ताकामत्सू दुर्ग-परित्यागपूर्वक क्यूटोकी ओर रवाना हुआ। हिडि-योशीको राजधानीमें पहुंचनेकी बहुत जल्दी थी। उसने अपनी फौज पीछे छोड़ी और कुछ शरीररक्षक सवारोंको साथ लेकर क्यूटोकी तरफ मारामार रवाना हुआ। राहमें और जल्दी की। जल्दीकी वजह इसके शरीररक्षक सवार भी पीछे छूट गये। हम ऊपर लिख आये हैं, कि नृशंस अकेचीने अपने दो लफटिनण्ट हिडियोशीकी हत्याके लिये नियुक्त किये थे। वे दोनो अपना काम पूरा करनेका मौका ताक रहे थे। हिडियोशीके अपने शरीररक्षक सवार पीछे छोड़कर आगे बढ़ते ही उन लोगोंने उसपर आक्रमण

करके मार डालनेकी चेष्टा की। हिडियोयी जान लेकर भागा। इस समय हिडियोयीकी बुद्धिने उसके प्राण बचाये! नहीं, तो स्वामिभक्त हिडियोयी भी अपने स्वामीकी तरह अकालमृत्युको प्राप्त होता!

हिडियोयी के सामने पानीसे भरे हुए चावलके खेत थे। दो खेतोंके बीचसे एक पतली पगडण्डी खेतकी दूसरी ओरके एक मठद्वारतक गई थी। हिडियोयीने इसी पगडण्डीपर घोड़ा भगाया और पगडण्डीके छोरपर पहुंचकर वह घोड़ेसे उतर पड़ा। आगे घोड़ेके पैरमें खञ्जर भोंक दिया, जिससे वह तिलमिलाकर उलटा भागा। इस उलटे भागते हुए घोड़ेने हिडियोयीका पीछा करनेवाले दोनो लफटिनण्टोंकी राह कुछ देरके लिये रोक दी। इस अवसरमें हिडियोयी भागकर मठमें घुस गया। मठके महन्त उस समय एक मठस्थ सरोवरमें स्नान कर रहे थे। हिडियोयीने महन्तोंसे संक्षेपमें अपना सङ्कट सुनाया और उनका कृपाकांक्षी हुआ। महन्तोंकी अनुमतिसे वह अपने कपड़े उतारकर उन्हींके साथ सरोवरमें घुसकर स्नान करने लगा। हिडियोयीके दोनो पीछा करनेवाले जब मठमें आये, तो उन्होंने हिडियोयीको भी

स्नान करता हुआ महन्त समझा और हिडियोशीकी तलाशमें आगे बढ़ गये। इस प्रकार इस भीषण चक्रसे हिडियोशीकी जीवनरक्षा हुई।

हिडियोशीने टोकियोसें पहुंचकर नवनागके मित्र महाराजोंको एकत्र किया। नृशंस अकेशीपर चढ़ाई करनेकी तय्यारी की। अनेक महाराजोंसहित हिडियोशी अकेशीसे नवनागके खूनका बदला लेने चला। क्यूटोनगरसे कुछ फासलेपर चोरी स्थानमें हिडियोशी और अकेशीकी फौजोंमें लड़ाई हुई। अकेशीकी फौजें हारीं। अकेशी भागकर अपने किलेकी तरफ रवाना हुआ। राहमें एक किसानने उसको पहचान लिया। किसानने देश-हितैषी नवनागके हत्यारे अकेशीपर बांसकी बरछीसे आक्रमण करके उसको घायल और अशक्त बना दिया। अकेशीने बचनेका कोई उपाय न देखकर आत्महत्या कर ली। अकेशीका किया उसके आगे आया। उसने नवनागकी आत्महत्या कराई थी—अन्तमें उसको भी आत्महत्याकी भयङ्कर लज्जत चखनी पड़ी। अकेशीका शिर काटा गया। वह शिर नवनागके आत्महत्या-स्थान हन्वजीके मन्दिरद्वारपर रखा गया।

नवनागके दो पुत्र थे। एकका नाम था नेव और दूसरेका नवतका। नवताका नामक एक तीसरा लड़का भी था। वह मर गया था, उसका लड़का मम्बोयी जीवित था। मम्बोयी ही नवनागका उत्तराधिकारी बनाया गया। हिडियोयी उसका रक्षक बना। हिडियोयीने नवनागके शवकी दाहक्रिया की। उसकी अन्तिम क्रियाके समय देश देशके राजे महाराजे बुलाये। हिडियोयीने अपनी सैन्यकी अधिकता और सुशिक्षा आदि दिखाकर आगन्तुक राजे महाराजोंको चुपचाप बना दिया। नवनागकी सैन्यके एक सेनापति शिवाताकोको, मम्बोयीका नवनागकी जगह बैठना बुरा मालूम हुआ। वह मम्बोयी और हिडियोयी दोनोंसे रुष्ट हुआ। हिडियोयीने शिवाताकोपर चढ़ाई की और उसकी सैन्यको ध्वस्त विध्वस्त कर दिया। शिवातकोने हृदयभग्न होकर आत्महत्या कर ली। इसके बाद हिडियोयीने इयासू नामक शक्तिशाली पुरुषपर चढ़ाई की। इयासू भी मम्बोयी और हिडियोयीसे असन्तुष्ट था। किन्तु इयासू बुद्धिमान था—उसने हिडियोयीसे सन्धि कर ली। इस सन्धिके अनुसार शिकोकूद्वीपके प्रायः समस्त प्रधान

पुरुषोंको हिडियोशीकी अधीनता स्वीकार करना पड़ी। हिडियोशी जापान-सरकारका उच्चकर्मचारी बना चाहता था। उच्चकर्मचारी बनकर अपने लड़कोंके लिये सरकारी ऊंची नौकरियोंका पथ परिष्कृत किया चाहता था। उसने पदच्युत शोगन योशियाकीसे कहा, कि तुम मुझको अपना दत्तकपुत्र बना लो। पदच्युत शोगनका दत्तकपुत्र बनकर वह स्वयं शोगन बना चाहता था। किन्तु योशियाकीने हिडियोशीकी बात स्वीकार नहीं की। जापान-सरकारने हिडियोशीको कांचा मालूम की। सम्राट् ओगीमाचीने सन् १५८५ ई० में हिडियोशीको कूआम्पकूका बहुत ऊंचा पद प्रदान किया। अबतक यह सम्मानसूचक पद सिर्फ फूजीवारा घरानेवालोंको मिलता था। सन् १५८६ ई० के बाद कुछ वर्षोंतक जापानमें बहुत शान्ति रही। इस समय हिडियोशी सम्राट्की ओरसे जापानके जागीरदारोंसे नवीन नियमोंपर सन्धि कर रहा था। इसी समय हिडियोशीने ओसाका नामक स्थानमें अपना एक विशाल दुर्ग तय्यार कराया था।

क्यूशू-टापूमें सत्सुमा नामक एक प्रदेश है। योरीटोमोके घरानेका कोई मनुष्य सत्सुमाका महाराज

था। सत्सुमाके प्राचीन महाराजोंको स्वराज्यवृद्धिकी बड़ी अभिलाषा थी। उन्होंने अपना राज्य क्रमशः बढ़ा भी लिया था। सन् १५८५ ई० तक महाराज सत्सुमाने ८ प्रदेश विजय करके स्वराज्यमें शामिल कर लिये। क्यूशूटापूके अन्यान्य प्रदेशोंके नरेश भीत हुए। उन्होंने अपने सङ्कटका हाल हिडियोशीको लिखा। हिडियोशीने महाराज सत्सुमाको जापान-राजधानी क्यूटोमें बुलाया। सत्सुमा-नरेश शिमाज़ूने सरकारी परवानेको फाड़कर टुकड़े टुकड़े कर दिया। हिडियोशीको कहला भेजा, कि मैं तुम जैसे तुच्छ मनुष्यके परवानेको परवाह नहीं करता। हिडियोशीने समझ लिया,—युद्ध ही अब एकमात्र उपाय है!

हिडियोशीने ३७ महाराजोंको ससैन्य बुलाया। क्यूशूद्वीपपर चढ़ाई करनेके लिये ओसाका स्थानमें १ लाख ५० हजार सिपाही एकत्र किये। सन् १५८७ ई० की ७वीं जनवरीको ६० हजार सिपाही हिडियोशीके भाई हिडनागाकी अधीनतामें नावोंपर सवार होकर क्यूशू-टापूकी ओर रवाना हुए। इस फौजमें और सिपाही शामिल हो गये थे। क्यूशू-टापूमें

पहुंचनेपर इस फ़ौजमें ८० हजार सिपाही हो गये। सन् १५८७ ई० को २२ वीं जनवरीको हिडियोशी भी ओसाकासे क्यू सू-टापूकी ओर रवाना हुआ। इसके पास १ लाख ३० हजार सिपाही थे। महाराज सत्सुमाकी फ़ौजको अपने देशके दुरारोह पर्वतों और सघन-वनोंपर बहुत घमण्ड तथा भरोसा था। किन्तु हिडियोशीने जासूसों द्वारा सत्सुमाप्रदेशका भूगोल अच्छी तरह जान लिया था। महाराज सत्सुमाकी सैन्य हर जगह परास्त होने लगी। परास्त होती हुई सैन्य अपनी राजधानी कागोशिमाके किलेकी तरफ़ पीछे हटने लगी। अनेक बड़ी लड़ाइयोंके बाद महाराज सत्सुमाकी सैन्य एकबार ही परास्त हो गई और उसने कागोषिमाके किलेमें घुसकर किलेका द्वार बन्द कर लिया। हिडियोशी चाहता, तो कागोशिमाका किला सहजमें फ़तह कर लेता। महाराज सत्सुमाको उसकी गुस्ताखीका मजा चखाता। किन्तु उसने अपनी स्वाभाविक उदारतावश सत्सुराके महाराजको पदत्याग करनेपर बाध्य किया। उसके लड़केको सत्सुराका महाराज बनाया। आगे, महाराज सत्सुराने जिन प्रदेशोंको जबरदस्ती छीन

लिया था, उन्हें लेकर उनके प्रकृत स्वत्वाधिकारियोंके हवाले कर दिया।

हिडियोशी धर्म्मकर्म्मपर उतना अनुराग नहीं रखता था। वह पुरतगाली पादरियोंसे भी ज्यादा सन्तुष्ट नहीं रहता था। हिडियोशीका ढङ्ग देखकर पुरतगाल-सम्राट त्रयोदश ग्रगरी भीत हुआ। उसने समझा, कि जापानियोंके रुष्ट हो जानेसे जापानके पुरतगाली व्यापारको बहुत क्षति पहुंचेगी। इसी कारण उसने सन् १५८५ ई० में एक आज्ञापत्र निकाला। जिसका मर्म्म यह था, कि कोई पादरी जापानमें न जावे पुरतगाल-नरेशकी इस आज्ञासे युरोपके अन्य ईसाई राज्योंमें बहुत उत्तेजना फैल गई और युरोपके भिन्न भिन्न प्रान्तोंके अनेक पादरी जापानमें गये। एकबार किसी विलायती जहाजका कप्तान आपसके लोगोंसे बातें कर रहा था। एक जापानी जासूसने उसकी बातें सुन लीं। कप्तान कहता था—"हमारे सम्राटने इस देशमें पादरियोंका दल भेजा है। यह दल यहांके निवासियोंको ईसाई बनाकर स्वपक्षमें कर लेगा। इसके उपरान्त हमारे सम्राट् यहांके देशी ईसाइयोंकी सहायताके लिये फौजें भेजकर देशपर अपना कबजा

जमा लेंगे।" चीन, भारत और ईष्ट इण्डीजमें भी ऐसी ही घटना हुई थी। इतनी नजीरें कप्तानकी बात पुष्ट करनेके लिये यथेष्ट थीं। हिडियोशीने यह खबर पाते ही सन् १५८७ ई०में एक आज्ञापत्र निकाला। उसमें लिखा था, कि जापानसाम्राज्यमें जितने विलायती पादरी हैं, वे सब २० दिनोंमें जापान परित्याग कर दें। २० दिनोंके बाद जो पादरी जापान-सीमामें पकड़ा जावेगा, उसको मृत्यु-दण्ड मिलेगा। पुरतगालके सौदागरी-जहाजोंको जापानमें आनेकी आज्ञा दी गई थी। किन्तु यह नियम बना दिया था, कि जिस सौदागरी-जहाजपर कोई पादरी जापानमें आवेगा, उस जहाजके मल्लाह, कप्तान आदि जानसे मारे जावेंगे और वह जहाज माल असबावसहित जापान-सरकार जब्त कर लेगी। इस आज्ञाके उपरान्त भी अनेक पादरियोंने जापान परित्याग नहीं किया। सन् १५८३ ई०में ८ पादरी गिरफतार किये जाकर नागासाकीमें पहुंचाये गये। वहां वे आगमें भस्म कर दिये गये। जापान-सरकारकी ओरसे पहले पहल यही ईसाई-हत्या हुई। सन् १५८६ ई०में हिडियोशीने नागासाकी बन्दरपर जापान-सरकारका

अधिकार फैला दिया। वहां एक नया गवरनर मुक़र्रर कर दिया। इसके कुछ ही दिनों बाद सिर्फ़ नागासाकी बन्दर हीमें विलायती सौदागरोंका जहाज आनेकी आज्ञा दी।

इसके उपरान्त हिडियोशीने अनेक स्वतन्त्र नरेशोंको जापान-सरकारके अधीन किया। जिस नरेशने अधीनता स्वीकार करनेमें आपत्ति की, उसको युद्धमें परास्त करके अपना मनोरथ पूर्ण किया। महाराज ओगवारा जापान-सरकारकी अधीनता स्वीकार नहीं किया चाहते थे। सरकारी फ़ौज और महाराजकी सैन्यमें बहुत दिनोंतक लड़ाई चली। अन्तमें ओगवारा-प्रदेशका पतन हुआ। महाराज ओगवारा मारे गये। हिडियोशीने यह प्रदेश अपने होनहार सेनापति इयासूको प्रदान किया।

बहुत दिनोंतक राज्यकार्य करते करते हिडियोशी थक गया। उसने क्वाम्बाकूपद परित्याग किया। कुछ दिनोंतक विश्राम करना चाहा। किन्तु जापान-सम्राट्ने सुयोग्य हिडियोशीको निकम्मा न बैठने दिया। उसको सन् १५९१ ई॰में टायकोकी अत्यन्त सम्मान-सूचक पदवी दी। कोरिया और चीन राज्यपर

चढ़ाई करनेकी इच्छा हिडियोशीके मनमें बहुत दिनोंसे थी। हिडियोशीने एकबार नवनागसे कहा था, "मैं कोरिया और चीनपर चढ़ाई किया चाहता हूं। जापान, कोरिया और चीन तीनो राज्योंको एक ही बन्धनमें बांधा चाहता हूं। अवश्य ही जापान ही इन दोनो साम्राज्योंपर प्रभुता करेगा।" हिडियोशीने कोरियापर चढ़ाई करने हीके ध्यानसे—कोरियाके समीपवाले क्यूशू-टापूपर अपना दखल जमा लिया था।

सन् १५८२ ई०में हिडियोशी कोरियापर चढ़ाई करनेका बहाना ढूंढने लगा। पाठकोंको स्मरण होगा, कि सम्राज्ञी जिङ्गोने सन् २०१ ई०के उपरान्त कोरियापर चढ़ाई की थी। कोरिया-राज्यको करद बनाया था। कोरिया-राज्य कुछ दिनोंतक जापानको वार्षिक कर भेजता रहा। इसके उपरान्त उसने कर भेजना बन्द कर दिया। हिडियोशीको कोरिया-राज्यपर चढ़ाई करनेका यह एक बहाना मिल गया। उसने कोरियामें अपना एक दूत भेजा। दूतसे कहला भेजा, कि कोरियाको अपना पिछला कर जापानको दे देना चाहिये। भविष्यमें नियमित समयपर जापा-

नको कर देना होगा। कोरिया-सरकारने जापानके इस दूतका कोई ख्याल नहीं किया। हिडियोशीने दूसरीबार महाराज सुमिमाको अपना दूत बनाकर भेजा। सुमिमाने कोरियाके फुसान-बन्दरमें जापानी व्यापारका अड्डा कायम किया और वहीं ठहरकर कोरिया सरकारसे जापानको कर देनेकी बात चीत करने लगा। सन् १५९० ई०में कोरिया सरकारने अपना एक दूत हिडियोशीके पास भेजा। कोरियाका दूत जिस समय जापान-राजधानी क्यूटोमें पहुंचा, उस समय हिडियोशी क्यूटोमें मौजूद नहीं था। ओदारावा प्रान्तमें एक स्वतन्त्र नरेशके साथ युद्ध करनेमें प्रवृत्त था। कोरियाका दूत हिडियोशीके राजधानीमें लौट आनेतक राजधानीमें ठहरकर उसकी प्रतीक्षा करने लगा। हिडियोशी राजधानीमें आया। उसको कोरियाका दूत आनेकी खबर मिली। किन्तु खबर पाकर भी वह उससे जल्दी नहीं मिला। जान पड़ता है, कि कोरियाके दूतकी इस तरह बेइज्जती करके वह कोरियाको नम्र बनाया चाहता था।

अन्तमें एक दिन हिडियोशीने कोरियाके दूतसे मुलाक़ात की। कोरियाके दूतके आगत स्वागतका कोई

अन्टींवस्त नहीं किया। कोरियाके दूतने हिडियो-शीके हाथमें कोरिया-नरेशकी चिट्ठी दी। चिट्ठीमें कोरिया-नरेशकी ओरसे हिडियोशीको उन्नत पद प्राप्त करनेपर बधाई दी गई थी। इसके अलावा कोरियाके दूतने कोरिया-नरेशकी ओरसे भेंटकी चीजें हिडियो-शीके सुख रखीं। भेंटमें ये चीजें थीं:—घोड़े, बाज, भिन्न भिन्न प्रकारके वस्त्र, घोड़ोंके साज, चमड़े, जिनसेङ्ग (?) इत्यादि इत्यादि। किसी जमानेमें जापानी इन चीजोंकी बहुत कदर किया करते थे। किन्तु हिडियोशी इससे सन्तुष्ट नहीं हुआ। उसने कोरियाके दूतोंको उत्तरकी प्रतीक्षा किये बिना ही कोरियाको लौट जानेकी आज्ञा दी। पर कोरियाके दूत संकाई स्थानमें ठहरकर हिडियोशीसे कोरिया-नरेशकी चिट्ठीका जवाब मांगने लगे। उनके खूब कहने सुननेपर हिडियोशीने कोरिया-नरेशको एक चिट्ठी लिखी। चिट्ठीमें लिखा, कि जापानी फौजें शीघ्र ही कोरियामें पहुंच जावेंगी और कोरिया सर-कारको उसकी गुस्ताखीका मजा चखावेंगी।

कोरियाके दूतने जापानसे कोरियामें पहुंचकर कोरिया-सरकारको खबर दी, कि जापान कोरियापर

शीघ्र ही चढ़ाई किया चाहता है। कोरिया जापानके मुक़ाबलेकी तय्यारी करने लगा। मौक़े मौक़ेसे गढ़-बन्दी करने लगा। टूटे फूटे क़िलोंकी मरम्मत करने लगा। फौजें एकत्र करने लगा। रसदका सामान जुटाने लगा। उस समय कोरियादेश बहुत कङ्गाल था। प्रायः २ सौ वर्षपर्य्यन्त उसको युद्ध न करना चाहिये था। कोरियावासियोंको युद्धविद्या भूल गई थी। जापानके अनुभवी सेनापतियोंका सामना करने लायक उनके पास सेनापति नहीं थे। जापानी फौजोंमें नाना प्रकारके आग्नेय अस्त्र व्यवहृत होते थे। उनके पास बन्दूकें थीं—तोपें भी थीं, किन्तु कोरियाके सिपाही आग्नेय-अस्त्रोंके नामतकसे अन-भिज्ञ थे। अवश्य ही कोरियाका रक्षक चीन था और कोरिया चीनसे सहायता मांग सकता था। किन्तु चीन कोरियासे दूर और सुस्त था। चीनकी सोती हुई शक्तियोंके जागनेके पूर्व्व ही कोरिया ध्वंस हो सकता था।

इधर हिडियोशीने अपने कायदेके मुताबिक़ कोरियापर चढ़ाई करनेका पूर्ण आयोजन किया। कोरियाके निकटस्थ क्यूशूद्वीपके समस्त महाराजे ससैन्य

युद्धस्थलमें जानेके लिये तय्यार किये गये। हाइडोदीप और गिकोकूके अनेक नरपति भी अपनी अपनी फौजोंके साथ कोरियापर चढ़ाई करनेवाली सैन्यमें योग देनेके लिये प्रस्तुत हुए। जिन महाराजोंके राज्य समुद्र किनारे थे, नाव और मल्लाह एकत्र करनेकी खिदमत उनको सौंपी गई। हिजेन प्रदेशके नगोया स्थानमें कोरियापर चढ़ाई करनेवाली फौज एकत्र हुई। जापान-सरकारके झण्डेके नीचे ३ लाख सिपाही जमा हुए। इनमें १ लाख ६० हजार सिपाही तुरन्त ही कोरियाकी तरफ रवाना किये गये। हिडियोशी जापान हीमें रहा। इन सिपाहियोंको काटो और कोनिशी नामक २ सुप्रसिद्ध सेनापतियोंके अधीन किया। दोनो सेनापति अपने अपने कामोंमें स्वतन्त्र थे, किन्तु दोनोंको मिलकर युद्ध करनेकी आज्ञा दे दी गई थी।

सन् १५८२ ई०की १३वीं अपरेलको सेनापति कोनिशी और काटोकी फौजें कोरियामें दाखिल हुईं। यह दूसरीबार जापानी फौजने कोरियापर चढ़ाई की थी। तीसरीबार आक्रमण किया था चीन-जापान युद्धके समय। हालमें रूस-जापान युद्धको

समयमें जापानने चौथीबार कोरियापर आक्रमण किया है। कोनिशीने कोरियामें पहुंचते ही कोरियाके फुसान नामक बन्दरगाहपर कबजा कर लिया। इसके उपरान्त ही अपनी सैन्यको कोरियाकी राजधानीकी ओर अग्रसर किया। राहमें छोटी छोटी लड़ाइयां हुईं। कोरियाकी फौजें भागीं। कोरियाके अनेक किलोंपर भी जापानी फौजोंने अधिकार कर लिया। कोरिया-प्रदेशमें महात्रास उपस्थित हुआ। कोरिया-सरकारकी सुशृङ्खला टूट गई। स्वयं कोरियानरेश टियेन चीनकी सीमापर किसी सुरक्षित नगरकी ओर भागनेपर तय्यार हुए। इधर अल्पकालमें जापानी फौजें कोरिया-राजधानीमें दाखिल हो गईं। यहांतक दोनो जापान-सेनापतियोंकी फौजें मिलकर काम कर रही थीं। इसकें उपरान्त दोनों फौजें पृथक हुईं। कोनिशी अपनी फौज लेकर उत्तरकी ओर रवाना हुआ और काटो सैन्यसहित उत्तर-पूर्व्वीय प्रदेशोंकी ओर। इस अवसरमें कोरियानरेश राजधानीसे भागकर चीन कोरियाकी सीमाके हचिउ नामक सुरक्षितनगरमें चला गया। सेनापति कोनिशीकी फौज उसके पीछे

पीछे ही थीं। अल्पकालिक घोर युद्धके उपरान्त हुचिउ नगरपर जापानी फ़ौजोंका अधिकार हो गया। कोरियानरेश हुचिउनगरसे जान लेकर भागे। हुचिउनगरमें रसद्का बहुत बड़ा आखार था। जापानी फ़ौजोंने उसपर क़बज़ा कर लिये। सेनापति कोनिशीने फ़ुसान-बन्दरमें लगी हुई अपनी नावोंद्वारा भी कुछ काम लेना चाहा। नावोंद्वारा कोरियाके पश्चात्य किनारेपर क़बज़ा करना चाहा। जापानी नावें फ़ुसान बन्दर परित्याग करके समुद्रमें पहुंचीं। कोरियाकी नावोंका बेड़ा जापानी नावोंके बेड़ेकी अपेक्षा ज़बरदस्त था। उसने जापानी नावोंको फ़ुसान-बन्दरसे निकलकर खुले समुद्रमें आने दिया। इसके उपरान्त जापानी नावोंपर भयङ्कर रूपसे आक्रमण किया। जापानी नावोंने सिउल बन्दरमें फिर आकर अपनी रक्षा की। इस एक विजयसे कोरियावासियोंका हौसला बढ़ गया। कोरियावासियोंमें इतनी हिम्मत आ गई, कि वे जापानी फ़ौजोंको एकबारगी ही नाश कर देनेपर तय्यार हुए।

उधर सोता हुआ चीन भी कोरियाके बारम्बार गिड़गिड़ानेसे जाग गया। कोरियाके पार्श्वस्थ

खावटङ्ग-प्रदेशमें ५ हजार सिपाहियोंकी एक फ़ौज तय्यार की जाकर कोरियाकी सहायताके लिये भेजी गई। इस मुट्ठीभर चीनी फ़ौजने पिङ्गयेङ्ग-नगरमें जापानी फ़ौजपर एकाएक आक्रमण किया। जापानी फ़ौजने पीछे हटकर चीनी फ़ौजको पिङ्गयेङ्ग नगरमें घुस आने दिया। इसके उपरान्त भीमवेगसे चीनी फ़ौजपर आक्रमण करके उसको नष्टप्राय कर दिया। बचे हुए चीनी सिपाहियोंने खावटङ्ग-प्रदेश हीमें जाकर दम लिया। अब चीनकी आंखें खुलीं। वह समझ गया, कि जापानी फ़ौजोंका दमन करना सहज नहीं है। उनको परास्त करनेके लिये बहुत बड़ी सैन्यका प्रयोजन है। सन् १५९२ ई०में चीनने जापानसे सन्धि करनेका बहाना किया। जापानी फ़ौजें सन्धि होनेकी आशासे निश्चिन्त हो बैठीं,—उधर चीन जापानी फ़ौजोंको दमन करनेके लिये बहुत बड़ी फ़ौज शीघ्रतापूर्वक तय्यार करने लगा। सन् १५९२ ई०के अन्तमें जापानी फ़ौजें पिङ्गयाङ्ग नगरमें निश्चिन्त होकर बैठी थीं। इसी समय प्रायः ४० हज़ार चीनी सिपाहियोंने कोरियाके सिपाहियोंको भी साथ लेकर पिङ्गयाङ्गनगर घेर

लिया। जापान-सेनापति कोनिशी अपनी सैन्यकी अपेक्षा वैरीकी सैन्य अधिक देखकर पिङ्गयाङ्ग नगर छोड़कर पीछे हटा। पीछे हटनेके समय चीनी फ़ौजोंने जापानी फ़ौजोंपर बारम्बार आक्रमण किया। जापानी फ़ौजें नितान्त क्षतिग्रस्त हुईं।

चीनी फ़ौजने जापान-सेनापति कोनिशीकी फ़ौजको बहुत दूरतक भगाकर सेनापति काटोकी सैन्यकी ओर रुख फिरा। काटो उस समय कोरियाके पाश्चात्य किनारोंपर कबजा करके बैठा था। काटोने बहुसंख्यक चीनी सैन्य देखकर धीरे धीरे पीछे हटना आरम्भ किया। किन्तु कोनिशीकी तरह वह बदहवास होकर पीछे नहीं हटा। अपनी समस्त किलाबन्दियोंपर घोर युद्ध करता था। रक्तकी नदियां बहाता था। धूलिमय धरातलको रुधिरवर्षणसे कर्द्दममय बनाता हुआ—पीछे हटता था। इस तरहकी लड़ाईमें चीन और कोरियाकी फ़ौजें नितान्त क्षतिग्रस्त हुई। अन्तमें याचिउङ्ग स्थानमें ज़ापान-सेनापति काटो जमकर ठहर गया। वहीं उसने चीनी सैन्यपर महावेगसे आक्रमण किया। सहस्र सहस्र चीनी सिपाही मारे गये। अन्तमें

चीनी फौजें परास्त हुईं। पिङ्गयाङ्ग नगरकी ओर मुड़कर भागीं। जाड़ेके दिन थे। राहमें बरफ जमी थी। इसी वजह जापानी फौजें चीनी फौजोंका पीछा न कर सकीं। इस युद्धसे जापानी फौजोंने चैतन्य रहनेका चिरस्मरणीय सबक सीखा। उधर चीनी फौजें शूर वीर जापानी सिपाहियोंका लोहा मान गईं।

पूर्व्वोक्त युद्धके उपरान्त सुलहकी बात चीत चली। कोरिया सुलहपर राजी नहीं होता था। वह जापानसे घृणा करता था—चीनसे डरता था। अन्तमें चीन और जापान दोनोंने कोरियाको अलग करके स्वयं सन्धिका मामला तै करना शुरू किया। जापानी दूत चीनराजधानी पेकिनमें गया। वहां उसने इन नियमोंपर सन्धिकी,—"चीन-सम्राट् हिडियोशीको जापान-नरेशकी उपाधि दें। एक भड़कीली खिलअत भी अता फर्मावें। जापानी फौजें कोरिया परित्याग कर दें और फिर कभी कोरियापर चढ़ाई न करें।" जापानी फौजोंने अपना विजय किया हुआ स्थान परित्याग करने और पीछे हटनेमें बहुत आपत्ति की। अन्तमें पीछे हटीं। चीन-सरकारने हिडियोशीको खिलअत

पहुंचानेके लिये अपना एक दूत जापानमें भेजा। सन् १५८६ ई०को ग्रीष्मऋतुमें चीनका दूत जापानमें पहुंचा। हिडियोशीने उसका धूमधामी स्वागत किया। यहीं हमें एक बात कह देना चाहिये! चीन और जापानके सन्धि-नियमोंका स्वरूप हिडियोशीसे अभीतक प्रकट नहीं किया गया था। सन्धि करनेवाले डरते थे, कि शायद सन्धिनियम हिडियोशीको पसन्द न आवें। हिडियोशी चीनी भाषा नहीं जानता था। एक बौद्ध पुजारी नियमोंके भाषान्तरपर नियुक्त किया गया। चीनी दूतने बौद्ध पुजारीको सन्धि-नियमोंको कोमल और मृदु शब्दोंमें भाषान्तर करनेके लिये कहा। किन्तु धार्मिक पुजारी सन्धिनियमोंका यथायथ अनुवाद करने हीकी बातपर दृढ़ रहा। बहुत बड़ा एक दरबार हुआ। दरबारमें बौद्ध पुजारीने चीनसम्राट्का पत्र हिडियोशीको सुनाया। पत्रमें चीनसम्राट्ने हिडियोशीको लिखा था, कि मैं तुमको जापानका नरेश मानता हूं। तुम्हें खिलअत भेजता हूं। इसके उपरान्त चीनदूतने हिडियोशीके सामने खिलअत रखी।

पत्रका विषय सुनते ही मारे आश्चर्यके हिडियोशी

मुंह खोले हुआ—अवाक् बैठा रह गया। उसके क्रोधका ठिकाना नहीं रहा। उसने पुजारीके हाथसे पत्र झटक लिया और उसको फाड़ डाला। इसके उपरान्त उसने खिलअतको उठाया और उसे टुकड़े टुकड़े करके जमीनपर डाल दिया। फिर वह चीनके राजदूतकी ओर देखकर बोला,—"सम्पूर्ण जापान-प्रदेशपर इस समय मेरा अधिकार है। मैं जङ्गली और मूर्ख चीनसम्राट्के बिना कहे ही अपने देशका नरेश बन सकता हूं।" हिडियोशीने बहुत मुश-किलसे सन्धि करनेवाले जापानी दूतको प्राणदान दिया। हिडियोशीने चीनके दूतसे चीनसम्राट्को कहला भेजा, कि मैं शीघ्र ही तुम्हारे देशमें सैन्य भेजूंगा और तुम्हारे देशवासियोंको भेड़ बकरियोंकी तरह कटवाऊंगा। कोरिया और चीन दोनोंको मालूम हो गया, कि जापानी फौजें शीघ्र ही उनके देशोंमें पहुंचनेवाली हैं। पहली बारकी चढ़ाईके सेनापति काटो और कोनिशी कोरियासे लौटकर जापान चले आये थे। उनको पुनर्व्वार कोरिया जानेकी आज्ञा मिली। कोरियामें पहलेसे जापानी फौज मौजूद थी। और फौज भी दोनों सेनापति-

योंके स:य कर दी गई। कोरियामें जापानी फौजोंके पड़ावकी चारो ओर जबरदस्त मोरचेवन्दियां की गईं। भयभीत और अपमानित चीनी राजदूत चीनराजधानी पेकिनमें पहुंचा। राजदरवारमें जाकर अपने कामका प्रकृत परिणाम सुनानेमें इसे लज्जा जान पड़ी— भय भी जान पड़ा। उन लोगोंने विलायती सौदागरोंसे कितने ही मखमलके थान खरीद लिये और उन्हें जापानसरकारकी सौगातके नामसे चीनसम्राट्को भेंटमें दिये। वे यह झूठ भी बोले, कि हिडियोशीने चीनसम्राट्का पत्र सम्मानपूर्व्वक स्वीकार किया और खिलअत पहनकर निहायत खुश हुआ। हिडियोशीकी तरफसे यह झूठा पैगाम भी दे दिया, कि चीन-जापानकी मैत्री क़ायम होनेमें कोरिया बाधक बनता था, इसी कारण जापानी फौजोंने कोरियापर चढ़ाई की। किन्तु विलायतके बने हुए मखमली थान पहचान लिये गये। बात परखनेवालोंने दूतकी बात झूठी समझ ली और प्राणभयसे भीत होकर दूतको सच्ची बात कबूल कर देना पड़ी।

हम पहले ही लिख आये हैं, कि जापानकी सैन्य

कोरियामें मौजूद थी। १ लाख ३० हजार सिपाही उसमें और मिला दिये गये। रसदकी कमीकी वजह जापानी फ़ौजोंके अग्रसर होनेमें बहुत कठिनाइयां उपस्थित होती थीं। सन् १५९७ ई० के अन्तमें चीनने ५ हजार सिपाही कोरियाकी सहायताके लिये भेज दिये। कोरियाके जङ्गी नावोंके बेड़ने फुसान-बन्दरमें ठहरी हुई जापानी नावोंपर आक्रमण किया। फल बहुत बुरा हुआ। कोरियाके बेड़ेको, कुछ नावें गंवाकर और पूर्णरूपसे परास्त होकर पीछे हटना पड़ा। जापानी फ़ौजोंने अन्तरस्थकोरियामें प्रवेश करके थोड़े स्थानोंपर कबजा कर लिया था। इसी समय शरदृऋतुका समागम हुआ। कड़ाकड़ाकर जाड़ा पड़ने लगा। नदी नाले जमकर बरफ बन गये। जापानी फ़ौजोंको बरफसे बचनेके लिये लौटकर फुसानबन्दरमें चली आना पड़ा। जापानी फ़ौजने फुसान-बन्दरमें लौट आनेके पहले मार-केकी एक लड़ाई लड़ी। समुद्रकिनारेके योलसान-नगरमें काटो अपनी फ़ौजके साथ मोरचाबन्दी किये पड़ा था। चीन और कोरियाकी प्रधान सैन्यने योलसान घेर लिया। योलसाननगरका बाहरी सब

सम्बन्ध तोड़ दिया। किन्तु जापानसेनापति कूरोडा और हाचीनुका यथासमय कार्टोकी सहायताके लिये पहुंच गये। जापानी फौज जबरदस्त हुई। उसने चीन और कोरियाकी सैन्यको परास्त किया। चीन और कोरियाकी फौजें भागकर कोरियाकी राजधानी सिउलको लौट गईं। यह लड़ाई सन् १५९८ ई०में हुई थी। जापान-इतिहासमें लिखा है कि इस युद्धमें ३८ हजार ७ सौ चीनी और कोरियन सिपाही मारे गये थे। जापानी फौजोंने इन मरे हुए सिपाहियोंके सिर काटकर जापान राजधानी क्यूटोमें भेज दिये थे। वहां वे दैबत्सु मन्दिरके समीप गाड़े गये। गड़े हुए सिरोंके ऊपर एक स्मारकचिह्न स्थापित किया गया। क्यूटोनगरके दैबत्सु मन्दिरके समीप आज भी वह स्मारकचिह्न मौजूद है।

सन १५९८ ई० की १८ वीं सितम्बरको हिडियोशीका स्वर्गवास हुआ। मरनेके समय उसके मुंहसे जो अन्तिम शब्द निकले, वे ये थे :—"कोरियामें भेजे हुए मेरे लाखों जापानी सिपाहियोंको विदेशमें हृदय-भग्न न होना चाहिये।" हिडियोशीकी मृत्युके उपरान्त जङ्गी कामोंका प्रधान अफसर इयासू बनाया

गया। वह शान्त प्रकृतिका मनुष्य था। इसने जापान-कोरियाकी लड़ाई तुरन्त ही रोक दी और जापानी फौजोंको कोरियासे लौट आनेकी आज्ञा दी।

हिडियोशीका जीवन समाप्त होनेके साथ साथ जापानकी उस समयकी उन्नति भी समाप्त हो गई। हिडियोरी नामक हिडियोशीका एक पञ्च-वर्षीय पुत्र था। यही बालक हिडियोशीका उत्तरा-धिकारी बनाया गया। ४। ५ मनुष्योंकी एक समिति तय्यार हुई। यह समिति उस बालकके बदलेमें जापान-राज्यका काम करने लगी। हिडियोशी गरीबका लड़का था। किन्तु उसने अपने भुजबल और मास्तिष्कबलसे समस्त जापानपर प्रकारान्तरसे शासन किया। जापानदेशने हिडियोशीको अपना रत्न समझा। आज भी जापान हिडियोशीका नाम लेकर अपनेको गौरवान्वित समझता है।

अष्टम परिच्छेद।

गत परिच्छेदमें हमने इयासूका नाम एकबार लिखा है। हिडियोशीने क्वाण्टोप्रदेश जीतकर इयासूको उसका हाकिम बना दिया था। हिडियोशीकी मृत्युके समय इयासू ५६ वर्षकी उम्रका था। इसकी उत्पत्ति मिनामोटो घरानेसे थी। पहले यह नवनागकी फौजमें सेनापति था। नवनागकी मृत्युके उपरान्त हिडियोशी जापानका प्रधान पुरुष बन गया। उसके सामने यह अधिक प्रसिद्धि लाभ नहीं कर सका। किन्तु यथार्थमें इयासू युद्धविद्यामें कुशल और राजनीतिमें पारङ्गत था। हिडियोशीने अपनी मृत्यु समीप देखकर इयासूसे कहा था,—"इयासू! मुझे मालूम है, कि मेरी मृत्युके उपरान्त जापानदेशमें अनेक झगड़े उठेंगे—अनेक लड़ाइयां होंगी। इन अशान्तियोंको मिटाकर देशमें शान्ति स्थापन करनेवाला, सिवा तुम्हारे और कोई नहीं है। सो तुम मनोयोग देकर देशका झगड़ा मिटाना और शान्ति स्थापन

करना।" हिडियोशीने अपनी मृत्युके पूर्व ही इयासूको अपने ५ वर्षके बालक हिडियोरीका प्रधान रक्षक नियुक्त किया था। यह भी कहा था,—"इस अबोध बालकको अपनी रक्षा और शिक्षासे मनुष्य बनाओ। इसके उपरान्त देखो, कि इसमें मेरे पदका काम करनेकी योग्यता है या नहीं। यदि योग्यता देखना, तो मेरा वर्त्तमान पद इसको दिला देना।"

इशिदामित्सुनारी नामक एक ईसाई महाराज इयासूका वैरी था। इसको इयासूके हिडियोरीका रक्षक बननेकी बात पसन्द नहीं आई। इसने उसको रक्षक-पदसे च्युत करनेके लिये देशमें प्रसिद्ध किया, कि इयासू बालक हिडियोरीको बिगाड़ रहा है। इयासू चाहता है, कि बालक हिडियोरीका पद स्वयं प्राप्त करे। सो इयासूके जिम्मेसे हिडियोरीकी रक्षाका भार छीन लेना चाहिये। दक्षिणीय जापानके समस्त महाराजोंने भी इशिदामित्सुनारी होकी बातका समर्थन किया। अवश्य ही उत्तरीय जापानके सम्पूर्ण राजे महाराजे इयासूके पक्षमें थे और वे कहते थे, कि इयासू योग्यतापूर्व्वक अपना कर्त्तव्य पालन

कर रहा है। इशिहामित्सूनारी इसलोगोंसे इयास्को वेइज्जत किया चाहता है।

इशिहामित्सूनारीका पक्ष ग्रहण करनेवाले दक्षिणीय जापानके महाराजोंमें एशिगोप्रदेशका महाराज युसुगी अपेक्षाकृत ज्यादा जबरदस्त और शक्तिशाली था। इयास्ने इस महाराजको जापान-सम्राट्की तरफसे परवाना भेजकर क्यूटोमें बुलवाया। महाराज युसुगीने आनेसे इनकार कर दिया। इयास् इससे चिन्तित हुआ। उसने युसुगी और इशिहामित्सू-नारी आदि महाराजोंपर चढ़ाई करनेकी तय्यारी आरम्भ की। किन्तु इसकी तय्यारी अभी पूरी न होने पाई थी, कि इशिहामित्सूनारी अपनी सैन्य लेकर इयास्के फुशीमी नामक किलेपर चढ़ आया। इयास् उस समय अपने किलेमें मौजूद नहीं था। इशिहा-मित्सूनारीकी सैन्यने इयास्का किला करकवलित कर लिया और अन्तमें उसको आग लगाकर क्षार खार बना दिया।

इयास्ने अपने दुर्गकी दुर्दशाका समाचार पाकर शिमत्सुकी नामक स्थानमें अपने मित्रोंकी एक सभा की। सभाद्वारा निर्णय किया गया, कि इयास्के

प्रधान वैरी मित्सूनारीसे युद्व करना चाहिये। इयासू
७५ हजार सिपाही लेकर मित्सूसे युद्व करने चला।
मित्सू भी १ लाख ३८ हजार सिपाही लेकर इयासूका
मुकाबला करने निकला। सन् १६०० ई० में सेकी-
गाहारा स्थानमें इयासू और मित्सूकी सैन्यका सामना
हुआ। दोनो ओरकी फौजोंमें तोपें और बन्दूकें
मौजूद थीं। सूर्य्योदयसे लेकर सन्ध्यापर्य्यन्त दोनो
ओरकी फौजें जी खोलकर लड़ीं। इयासू सुचतुर
सेनापति था। उसने अपने थोड़े ही सिपाहियोंसे
वैरीके बहुसंख्यक सिपाहियोंको परास्त किया।
इस लड़ाईमें सब मिलाकर प्रायः ४० हजार सिपाही
मारे गये। मित्सू अनेक बागी महाराजोंसहित
गिरफ्तार हो गया। मित्सू और उसके साथी महा-
राजे ईसाई थे। ईसाके धर्म्ममें आत्महत्या करना
मना है। फलतः मित्सू आदिने आत्महत्या नहीं की
और इयासूने उनके सिर जल्लादोंद्वारा कटवा दिये।
हम पहले ही लिख चुके हैं, दक्षिणीय जापानके
प्रायः समस्त राजे महाराजे इयासूके विरुद्व थे।
इयासूने अपने दो सेनापतियोंकी अधीनतामें जबरदस्त
सैन्य भेजकर दक्षिणीय जापानके समस्त राजों महा-

राजोंको जापान-सम्राट्के अधीन किया। इयासूके इन कामोंसे जापान-सम्राट् उसपर नितान्त सन्तुष्ट हुए। सन् १६०३ ई० में उन्होंने इयासूको शोगनकी पदवी दी। शोगन बननेके उपरान्त इयासू राजधानी क्यूटो परित्यागकरके यद्दो-नगरमें रहने लगा। यहीं उसने अपना दुर्ग तथा महल तय्यार कराया।

इयासूने वीरचूड़ामणि हिडियोशीके लड़के हिडि-योरीके साथ बहुत गन्दा व्यवहार किया। हिडि-योरीको २० वर्षकी उम्रका हुआ देखकर इयासू भीत हुआ। उसने खयाल किया, कि अब हिडियोरी शोगन बनाया जावेगा और हिडियोरीके शोगन बन जानेपर उसकी और उसके घरानेकी उन्नतिका पथ अव-रुद्ध हो जावेगा। इयासूने यह प्रसिद्ध किया, कि हिडि-योरी जापान-साम्राज्यकी शान्ति भङ्ग करनेका मन्सूबा बांध रहा है। हिडियोरीपर यह अपराध लगाकर इयासू एक बड़ी सैन्य लेकर हिडियोरीको दण्ड देने चला। सन् १६१५ ई० में इयासूकी बड़ी फौज और हिडियोरीकी छोटी फौजमें लड़ाई हुई। दोनो ओरके बहुत सिपाही हताहत हुए। अन्तमें हिडियोरीकी सैन्य भाग गई। हिडियोरी अपनी मातासहित विलो-

पित हुआ। ऐसा विलोपित हुआ, कि उसका पता कभी न चला। जिस हिडियोयोशीके प्रबलप्रतापके सम्मुख सम्पूर्ण जापान कांपता था—उसका पुत्र हिडियोरी गुमनामीकी यवनिकामें सदैव सदैवके निमित्त छिप गया। अहो काल! तुम्हारी गति बहुत ही विचित्र और अगम्य है!

हिडियोयोशीने कोरियापर चढ़ाई कराई थी। चढ़ाईका कोई फैसला नहीं हुआ। फैसला हुआ या न हुआ; किन्तु चढ़ाईकी वजह कोरिया और चीनसे जापानकी दुश्मनी हो गई थी। इयास्‌ने यह दुश्मनी मिटाना चाही। इसने प्रकारान्तरसे कोरिया-नरेश-पर प्रकट किया, कि यदि तुम जापानसे मैत्री किया चाहते हो, तो अपना दूत भेजो। कोरियाका दूत आया। सन् १६०७ ई० में कोरिया और जापानमें सन्धि हो गई—साथ साथ चीन और जापानमें भी सन्धि हो गई। चीन जापानकी सन्धि गत सन् १८८४ ई० के पहलेतक कायम रही। इसके बाद सन्धि टूटी और सन् १८८४ ई० में चीन-जापान युद्ध हुआ। इस युद्धका हाल हमारे अनेक पाठक जानते होंगे।

इस अवसरमें जापानका ईसाईधर्म्म क्रमशः तरक्की

करता जाता था। अनेक प्रदेशोंके राजे महाराजेतक ईसाई हो गये थे। इयासू शीघ्रतापूर्व्वक फैलते हुए ईसाईधर्म्मसे भीत हुआ। उसने खयाल किया, कि ईसाईधर्म्मका प्रचार अधिक हो जानेसे एक दिन किसी ईसाईदेशका जापानपर कवजा हो जावेगा। सन् १६१४ ई॰ में उसने एक आज्ञापत्र निकाला, कि समस्त विदेशी ईसाई देशसे निकल जावें। उसने ईसाइयोंके गिरजे आदि भी तुड़वा दिये। जापानमें ईसाई बहुत हो गये थे। ईसाइयों और जापान-सम्राट्की फौजोंसें खूब मार काट हुई। कितने ही जापानी ईसाई फिरसे बौद्ध हो गये। कितनों होने ईसाई रहकर भी बौद्ध हो जानेका बहाना किया। इयासूकी आज्ञा कार्य्यमें पूर्णतया परिणत न हो सकी। जापान ईसाइयोंसे एकबारगी ही खाली न हो सका।

इयासू युद्ध-विद्याका पण्डित होनेके साथ साथ राजनीतिमें भी खूब दखल रखता था। इयासू चाहता था, कि जापान-साम्राज्यका ऐसा प्रबन्ध हो जाना चाहिये, जिससें मेरी मृत्युके उपरान्त भी देशमें शान्ति रहे और मेरा घराना ही शोगनपद प्राप्त किया करे। जापानके राजे महाराजे जापान-सरकारके

निर्व्वल हो जानेपर स्वतन्त्र बन जाते थे और जापान-साम्राज्यमें अशान्ति उपस्थित करते थे। फलतः इयासूने जापानके राजे महाराजोंके सुधारका संकल्प किया। हम ऊपर लिख आये हैं, कि इयास्‌ने प्रायः समस्त बागी महाराजोंको दमन करके उनके राज्य अपने कबजेमें कर लिये थे। सुधारका संकल्प करते ही इयासूने अनेक पदच्युत राजोंको उनके राज्य लौटा-कर उन्हें अपना अनुगृहीत बनाया। अवश्य ही इया-सूने अधिकांश छीने हुए राज्योंका अधिकारी अपने सम्बन्धियों वा अपने लड़कोंको बना दिया। पहले जापानके राजों महाराजोंकी ३ श्रेणियां थीं। इया-सूने नये प्रबन्धके साथ साथ उनकी ५ श्रेणियां कर दीं। पहले इरजेको श्रेणीमें अपने ३ छोटे लड़कोंके ३ घराने रखे। इस श्रेणीका नाम रखा गोसानकी। इयासू शोगनपद चिरकालके निमित्त अपने घराने हीमें रखना चाहता था। इसी कारण उसने यह नियम कर दिया, कि भविष्यमें गोसानकी घराने होके मनुष्योंसे शोगन बनाये जावें। इयासूने जापानके राजों महाराजोंकी ५ श्रेणियां निम्नलिखित क्रमसे तय्यार कीं :—

१—महाराज गोमानकी। (३ सर्व्वश्रेष्ठ घराने।)
२—महाराज फूदाई। (इयास्‌-घरानेके नौकर सरदार)
३—महाराज तोनामा। (नौकर सरदारोंके समान पदवाले)
४—राजा कामोन। (इयास्‌-घरानेके सम्बन्धी।)
५—राजा डायमोज। (इन राजोंका विशेष स्वरूप नहीं था)

हाटामोटो नामक श्रेणीके प्रायः २ हजार राजे डायमोज राजोंसे भी छोटे दरजेके थे। आगे, गोकेनिन श्रेणीके ५ हजार राजे हाटामोटो श्रेणीके राजोंसे भी नीचे दरजेके थे। इनके भी नीचे समुराई जातिके लोग रखे गये।

पाठकोंको स्मरण होगा, कि शोगन योरीटोमोने प्रत्येक प्रदेशके राजों महाराजोंके पास एक एक जङ्गी सलाहकार रखा था। इन सलाहकारोंके पास सैन्य भी रखी गई थी। इया ने इसी सैन्यके सिपाहियोंकी समुराई जाति बना ली। राजों महाराजोंको छोड़कर जापानके जन साधारण ४ जातियोंमें बांटे गये। चारो जातियोंके नाम ये हैं:—समुराई, कृषक, शिल्पी, व्यापारी। इन चारो जातियोंमें समुराई जाति प्रधान बनाई गई। इयास्‌ने अपने आज्ञापत्रमें लिखा था,—"समुराई जाति जापानकी शेष ३ जाति-

योंमें प्रधान है। तीनों जातियां इस जातिको वेइ-
ज्जती न करें। समुराई जातिका कोई मनुष्य यदि
शेष ३ जातियोंके किसी मनुष्यका प्राणवध भी कर
रहा हो, तो किसी मनुष्यको बाधा देना उचित नहीं
है। तलवार ही समुराईकी जान है।" सन् १६०५
ई०के उपरान्त इयासूने पूर्व्वोक्त रीतिसे जापानवासि-
योंको श्रेणिवद्ध किया था। जापानकी अधिकांश
जातियां आजतक उसी श्रेणीमें बंटी हुई हैं।

इयासूके जमानेमें जापानमें बहुत शान्ति रही।
इयासू विद्वान और विद्याप्रेमी था। उसने शान्तिके
समय जापानवासियोंको चीनकी विद्या सीखनेमें तथा
भांति भांतिके शिल्प और व्यवसायमें प्रवृत्त किया।
इयासूने १७वीं शताब्दिके आरम्भमें कोरियासे छापेकी
कल मंगाई। सन् १३१७ ई०में कोरियावाली छापेकी
कल अपने देशमें जारी कर चुके थे। स्वयं इयासूने
एक अत्यन्त उपयोगी पुस्तक लिखी और अपने
छापेखानेमें छपवाई थी। वर्त्तमान परिच्छेदका अनेक
भाग इयासूरचित पुस्तकके अङ्गरेजी भाषानुवादके
आधारपर तय्यार किया गया है।

हम पहले लिख चुके हैं, कि जापानदेशमें

पहले पहल पुरतगाली गये थे। इसके उपरान्त सन् १६०० ई॰में डच जातिका एक जहाज जापानमें गया। इसी जहाजद्वारा आदम नामक एक अङ्गरेज भी जापानमें पहुंचा था। आदमने इयासूके दरबारमें बहुत रसूखियत हासिल की थी। सन् १६०८ ई॰में डच जातिवालोंका एक और जहाज जापानमें गया। सन् १६११ ई॰में अङ्गरेजोंका भी एक जहाज जापानमें पहुंचा। उस समय अङ्गरेजोंके नरपति प्रथम जेम्स थे। उन्होंने जापानमें अङ्गरेजोंका व्यापार जारी करनेके लिये जापान-सरकारको एक पत्र लिखा था। अङ्गरेजोंने जापानमें पहुंचकर अपना व्यापार फैलाया। किन्तु डच सौदागरोंकी प्रतिद्वन्द्वितासे अङ्गरेज सौदागरोंकी सौदागरी जापानमें जम न सकी। अङ्गरेजोंको लाचार होकर जापान परित्याग कर देना पड़ा।

इयासूने सन् १६०३ ई॰में जापानके शोगनका पद प्राप्त किया था। सन् १६०५ ई॰में उसने शोगनपद परित्याग करके अपने तीसरे लड़के हिदेतादाको जापानका शोगन बना दिया। अपना पद त्याग करने और अपने पुत्रको शोगन बनानेमें इयासूके दो मतलब थे। पहला मतलब यह था, कि इसका पुत्र शोगन

बनकर और इसके सामने निर्विघ्न रूपसे शोगनपदका काम करके इसके घरानेको शोगनगरीका सिलसिला आरम्भ कर दे। इयासूका दूसरा मतलब यह था, कि वह अपने सिरसे शोगनपदका गुरुकार्य्य अलग करके भी अपने पुत्रकी शक्तिकी सहायतासे निश्चिन्तापूर्व्वक जापानके अन्यान्य राज्यकार्य्यमें सुधार करे। इयासू शोगन न रहकर भी शोगनका काम करता था। जापानका बहुत कुछ सुधार करनेके उपरान्त सन् १६१६ ई०में इयासूने शरीर त्याग किया। इयासू मर गया, किन्तु जापानमें वह अपनी कीर्त्ति अक्षय कर गया।

नवम परिच्छेद।

विदेशियोंके जापान प्रवेशके कारण ही इयासू घरानेकी शोगनगरी नष्ट हुई। हम लिख चुके हैं, कि पुरतगाली और डच जातिके लोग जापानमें व्यापार करते थे। अङ्गरेज भी पहुंचे थे, किन्तु उनके व्यपारके लिये जापानकी आबोहवा डच लोगोंने मुवाफ़िक न आने दी। कुछ दिनोंके उपरान्त स्पेनके लोग भी जापानमें गये। डच लोगोंने पुरतगाल और स्पेन-वालोंके विरुद्ध जापानको बहुत भड़काया। फल यह हुआ, कि पुरतगाली और स्पेनी व्यापारी जापानसे निकाल दिये गये। सन् १६४० ई०में डचोंने नागासा-कीमें अपना उपनिवेश बना लिया। डच और चीनि-योंके अतिरिक्त और कोई जाति जापानमें घुसने नहीं पाती थी। अन्यान्य परकीय जातिवालोंसे संस्रव त्यागनेपर जापानियोंको नुकसान पहुंचा। यदि पहले हीसे वे विदेशी जातियोंसे सम्बन्ध रखते, तो अबसे बहुत पहले वे विलायती जातियोंकी तरह उन्नत हो जाते।

आजकल २०वीं शताब्दि है। गत १८वीं शताब्दिमें सन् १८४८ ई०तक रूस, अङ्गरेज और अमेरिकाने जापानमें अपना व्यापार फैलानेका वारम्बार उद्योग किया—अङ्गरेजोंने ६ वार उद्योग किया,—किन्तु कोई फल न हुआ। अमेरिकाको जापानमें अपना अड्डा जमानेकी बहुत ज्यादा जरूरत थी। जापानशीय-समुद्रके उत्तरीय भागमें वेहरिङ्ग-समुद्रके अन्तर्गत ह्वेल मछलीका शिकार हुआ करता था। आजकल भी होता है। ह्वेल मछलीकी चर्व्वी और हड्डीसे मोमवत्ती प्रभृत नाना चीजें तय्यार होती हैं। ह्वेल मछलीके शिकारमें अमेरिका भी शरीक हुआ करता था। सो, अमेरिकाको वेहरिङ्ग-समुद्रके समीप किसी टापूमें अपना वन्दरगाह वनानेका नितान्त प्रयोजन उपस्थित हुआ और वह वन्दरगाह जापानके किसी टापूमें वननेसे अमेरिकाको बहुत सुविधा होती। एक और कारणसे भी अमेरिका जापानमें अपना अड्डा जमानेपर वाध्य था। अङ्गरेज महाराज चीनमें अफीम वेचा करते थे। अङ्गरेजोंकी अफीम चीनमें दिनोंदिन ज्यादा कटने लगी। साथ साथ चीन देश ज्यादा अफीमची वनने लगा। चीन सम्राट्को यह वात

बुरी जान पड़ी। उन्होंने अङ्गरेजोंको अपने देशमें अफ़ीम बेचनेकी मुमानियत की। अङ्गरेजोंने मुमानियतकी परवाह नहीं की। सन् १८४० ई०में इङ्गलैण्ड और चीनमें अफ़ीमके लिये युद्ध हुआ। चीन हारा। हारनेके बाद उसको अपने कई बन्दर विदेशियोंके व्यापारके लिये खोलना पड़े। अमेरिकाकी सौदागरी-जहाज भी उन बन्दरोंमें जाकर अपना व्यापार फैलाने लगे। अमेरिकाके जहाज अमेरिकाके सानफ्रानसिसको बन्दरसे चलते थे। ६ हजार १ सौ ४१ समुद्रीय मीलका फासला ते करके उन्हें चीनके शङ्घाई प्रभृति बन्दरोंतक पहुंचना पड़ता था। बीचमें अमेरिकाके जहाजोंके लिये ठहरने तथा कोयला लादनेका अड्डा न मिलनेकी वजह अमेरिकाके जहाजोंको बहुत कोयला लादकर चलनेमें बड़ी दिक्कतका सामना करना पड़ता था। सो, अमेरिकासे चीनको जानेवाले और चीनसे अमेरिका आनेवाले अमेरिकाके जहाजोंको अपनी राहमें एक अड्डा बनानेका नितान्त प्रयोजन उपस्थित हुआ। इस अड्डेके लिये जापान ही एक उपयुक्त स्थान था। इस कारण भी अमेरिका जापानके किसी टापूपर अपना जहाजी अड्डा बनाया चाहता था।

हम पहले लिख चुके हैं, कि अमेरिकाने जापानमें अपने जहाजोंके लिये स्थान पानेकी चेष्टा की, किन्तु चेष्टाका कोई फल न हुआ। अन्तमें आमेरिकाने अपने जहाजी अफसर पेरीको जापानसरकारके नाम एक चिट्ठी देकर जापानमें भेजनेका संकल्प किया। अमेरिकाके जङ्गी जहाजोंका एक बेड़ा पेरीकी अधीनतामें कर दिया गया। अमेरिकाने पेरीको कह दिया, कि पहले जापान-सरकारको समझाना,—यदि वह न माने, तो बलपूर्वक जापान-टापूपर अधिकार करनेका उद्योग करना। पेरीने जापानियोंको ललचानेके लिये रेल, तार, प्रभृति नवाविष्कारोंके नमूने भी अपने साथ ले लिये। अंग्रेज, रूस, प्रभृति शक्तियोंने अपने जङ्गी जहाज भी पेरीके साथ रवाना करनेकी इच्छा दिखाई। किन्तु अमेरिकाने उनकी बात स्वीकार नहीं की। सन १८५२ ई॰में पेरीने दलबल-सहित अमेरिका परित्याग किया।

सन् १८५३ ई॰की ८वीं जुलाईको पेरी साहब जङ्गी जहाजोंसहित जापान—यद्दोकी खाड़ीमें पहुंचे। डच लोगोंने जापानियोंको अमेरिकाके जङ्गी जहाजोंके जापानमें आनेका समाचार पहले ही दे

रखा था। जापानी अमेरिकाके जङ्गी जहाजोंकी अनेकी अपेक्षा कर रहे थे। किन्तु अमेरिकाके जङ्गी जहाजोंको यड्डोकी खाड़ीमें देखकर जापानी नितान्त आश्चर्यान्वित हुए। उन्होंने दूष्मनहारा चलनेवाले विशालाकार जङ्गी जहाज पहले कभी नहीं देखे थे। जापान-सरकारने अमेरिकाके जङ्गी जहाजोंके प्रधान नौ-सेनापति पैरी साहबसे कहा, कि आप अपने जहाज लेकर नागासाकी बन्दरमें चले जाइये। वहीं से बातचीत कीजिये। किन्तु पैरीने जापान सरकारकी बात नामञ्जूर की। अन्तमें शोग-नका एक क्षमताशाली सरदार पैरीसे मिलने गया। पैरीने उसको अमेरिकाकी चिट्ठी दी। यह भी कहा, कि मैं अब अपने जङ्गी जहाजोंसहित यहांसे चला जाऊंगा और कुछ दिनोंके बाद लौटकर इस चिट्ठीका जवाब जापान-सरकारसे लूंगा। इसके उपरान्त पैरी अपने कथनानुसार अपने जहाजोंसहित यड्डोकी खाड़ीसे बाहर चला गया।

जापान-साम्राज्यके प्रधानपुरुष शोगनको ईसाई मतियोंके आन्तर्ज्जातिक नियमोंका हाल मालूम नहीं था। वह अमेरिकाकी चिट्ठी देखकर चिन्ता करने

लगा, कि अमेरिकाको जापानमें घुसने देना चाहिये या उससे लड़ना चाहिये। उसने जापानके समस्त राजों महाराजोंकी राय इस बारेमें ली। कुछ नरपति अमेरिकाविरोधी बने और कुछ अमेरिकाके पक्षपाती। महाराज मिटो अमेरिकाविरोधियोंमें सर्वप्रधान था। उसने अमेरिकाका जापान प्रवेश रोकनेके लिये निम्न लिखित दश कारण प्रकट किये:—

१—जिस जापान भूमिको मिट्टीसे हमारे पूर्व्वपुरुषोंकी उत्पत्ति हुई और जिस भूमिमें उनकी मिट्टी मिल गई है—वही जापानभूमि विदेशियोंद्वारा पद-दलित कराना हमें पसन्द नहीं है।

२—अमेरिकाके इस देशमें आते ही घृणित ईसाईधर्म तरक्की करेगा।

३—अहो! यह कैसी बुद्धिमत्ता है, कि हम अपने देशका सुवर्ण, चांदी, तांबा प्रभृति उत्तमोत्तम पदार्थ विदेशियोंको देवें और उनके बदलेमें शीशे, काठ, कागज और उनकी बनी हुई चीजें खरीदें!

४—हमने अन्यान्य ईसाई जातियोंको जापानमें घुसने नहीं दिया। अमेरिकाको जापान प्रवेशकी आज्ञा

देते ही अन्यान्य ईसाई शक्तियोंको भी जापानमें आनेकी परवानगी देना पड़ेगी।

५—चीन-अङ्गरेजके अफीम-युद्धसे जापानको शिक्षा ग्रहण करना चाहिये—अपने पूर्व्वप्राचीन पुरुषोंके विदेशियोंको दूर रखनेके सिद्धान्तका अनुसरण करना चाहिये। ये गंवार और दुष्ट विदेशी किसी देशमें पहले अपना व्यवसाय-जञ्जाल फैलाते हैं—इसके उपरान्त ईसाई-धर्म्मोपदेशके लिये पादरी बुलाते हैं—ये पादरी झगड़े खड़े करते हैं—तब ये विदेशी अपनी सैन्य मंगाकर नये देशपर अधिकार कर लेते हैं।

६—इस पण्डितगण हमें विदेश जाकर व्यापार करनेकी सलाह देते हैं सही, किन्तु अभी विदेश जाकर व्यापार करनेकी शक्ति हम लोगोंमें नहीं है।

७—हमारी फौजें तय्यार हैं। हम अमेरिकासे लड़ेंगे।

८—अमेरिकाको नागासाकी हीमें जाकर बातचीत करना चाहिये।

६—गंवार अमेरिकावासियोंकी जबरदस्तीका हाल सुनकर हमारे देशके गंवारतक जोशमें आ गये

हैं। यदि जापान-सरकार इस समय जापानके जोशका साथ न देगी, तो जापान अपनी सरकारसे नाराज होगा।

१०—बहुत दिनोंसे जापानने युद्ध नहीं किया है। जापानको युद्ध करनेका इससे अच्छा मौका जल्दी हाथ न आवेगा।

इसी समय जापानमें युद्धकी तय्यारियां भी आरम्भ हो गईं। मन्दिरोंके और मठोंके घण्टे गलाये गये। उनको गली हुई धातुसे तोपें ढाली गईं। तलवारें बनाई जाने लगीं। जापानी सिपाहियोंको विलायती कायदेके मुताबिक युद्धशिक्षा दी जाने लगी। इसी अवसरमें शोगनकी मृत्यु हो गई। सन् १८५३ ई०की २५वीं अगष्टको इयासू घरानेके १२वें शोगन इयोशीकी मृत्यु हो गई। उसका पुत्र ईसाड़ा अपने पैतृक पद पर आरूढ़ हुआ। एक शोगन मर गया, दूसरा उसके पद-पर प्रतिष्ठित हुआ,—किन्तु जापान साम्राज्यपर इसका कोई असर नहीं हुआ। उन दिनों जापान-सम्राट् और शोगन-दोनो विलासी बन गये थे। राज्यकार्य्य राजे महाराजे करते थे। सुतरां शोगनके मरने या नया शोगन बननेसे जापान-राज्यकार्य्यमें किसी तरहका

परिवर्त्तन नहीं हुआ। जो राजे पहले काम करते थे, वही करते रहे।

इधर सन् १८५४ ई०की १३वीं फरवरीको अमेरिकाके पेरी साहब १० जङ्गी जहाजोंके साथ यद्दोकी खाड़ीमें फिर पहुंचे। जापान-सरकारसे अपनी चिट्ठीका जवाब मांगा। नाना तर्क-वितर्कके उपरान्त नये शोगनकी सरकारने अमेरिकाका जापान-प्रवेश स्वीकार किया। सन् १८५४ ई०की ३१वीं मार्चको कानागाका स्थानमें जापानने पहली विदेशी शक्ति अमेरिकासे सन्धि की। कानागावाकी बस्ती ही खूब बढ़कर आजकल याकोहामानगरके नामसे प्रसिद्ध है। सन्धि-नियमनुसार अमेरिका और जापानमें घनिष्ट सम्बन्ध हो गया। इसके उपरान्त अङ्गरेज, रूस और डचोंसे भी जापानकी सन्धि हो गई। नागासाकीमें पहलेसे विदेशी व्यापारी व्यापार करते थे। नये विदेशियोंके व्यापारके लिये जापानने अपने शिमोडा और हाकोडेट नामक दो बन्दर खोल दिये।

शोगन-सरकार और विदेशियोंमें सन्धि हो जानेके उपरान्त जापानमें बहुत हलचल फैल गई। जापानवासी दो भागोंमें विभक्त हो गये। एक दल ईसाई-

विरोधी बना और दूसरा ईसाई-पक्षपाती। ईसाई-विरोधी दलने शोगनकी भी मलामत करना शुरू की। यह दल कहता था, कि शोगनको विदेशियोंसे सन्धि करनेका अधिकार नहीं है। इस बारेमें जो कुछ करते, जापान-सम्राट् करते। ईसाई-विरोधी दलका जोश इतना बढ़ गया, कि उसने विदेशियोंपर आक्रमण करना भी आरम्भ किया। जापानमें गई हुई विदेशी शक्तियोंके कन्सलोंने शोगन-सरकारसे ईसाई-विरोधी जापानियोंके आक्रमणकी शिकायत की। बालक शोगनके प्रधान रक्षक महाराज ईकामोनने ईसाई-विरोधी दलके प्रधान पुरुष महाराज मिटोको गिरफ़तार करके उसीके किलेमें कैद कर दिया। इससे ईसाई-विरोधी दलकी उत्तेजना और ज्यादा हो गई। इस दलके १८ आदमियोंने मौका पाकर शोगनके प्रधानरक्षक महाराज ईकामोनकी सन् १८६० ई०की २३वीं मार्चको मार डाला। वे उसका शिर काटकर महाराज मिटोके पास ले गये। ईकामोनकी मृत्युके उपरान्त ही महाराज मिटो कैदसे छूट गये। ईकामोनके मरते ही जापानके ईसाई-विरोधियोंका दल और जबरदस्त बन गया।

—

दशम परिच्छेद।

सन् १८६० ई०के उपरान्तसे ईसाई-विरोधी दल प्रकाश्यरूपसे विदेशियोंपर आक्रमण करने लगा। सन् १८६१ ई०की १४वीं जनवरीको यड्डो नगरमें अमेरिकाके कन्सलके सिक्रत्तर ह्रस्कैनपर ईसाई-विरोधी जापानियोंने भयानकरूपसे आक्रमण किया। ह्रस्कैन घायल हुआ और कुछ दिनों बाद गहरे जखमोंकी वजह मर गया। शोगन सरकारको इस हत्याके लिये अमेरिकाको २० हजार रुपये देना पड़े। इसके उपरान्त सन् १८६१ई०की ५वीं जुलाईको ईसाई-विरोधियोंने यड्डोमें अङ्गरेजोंके कन्सल मिष्टर मारिसनके मकानपर आक्रमण किया। मकानके रक्षक कितने ही अङ्गरेज सिपाही जानसे मारे-गये और मिष्टर मारिसन तथा उनके सिक्रत्तर घोररूपसे घायल हुए। शोगन-सरकार ईसाई-विरोधी दलका जोश ठण्डा करनेकी अफलोदय चेष्टा करती थी। शोगनकी सरकारने विदेशी शक्तियोंसे और भी कई सन्धियां कीं। एक सन्धिके अनुसार शोगन-सरकार योगो, यड्डो और ओसाका नामकी बस्तियोंको विदेशी व्यापारके लिये

खोला चाहती थी। खोलनेका समय भी समीप आ गया था। किन्तु जापान-सरकारने देखा, कि ईसाई-विरोधी जापानियोंका जोश धीरे धीरे बढ़ता जाता है। ऐसे समय विदेशियोंके व्यापारार्थ और ३ शहर खुल जानेसे जापानियोंका ईसाई-विरोधीका जोश ज्यादा हो जावेगा—मारकाट ज्यादा बढ़ जावेगी। इसी ध्यानसे जापान-सरकारने उन तीनों शहरोंको विदेशियोंके व्यापारार्थ खोलनेका काम ५ वर्षतकके लिये मुलतवी कर देना चाहा। जापानने इसी बाबेमें बातचीत करनेके लिये अपने दूतदल अमेरिका, इङ्गलण्ड तथा उन देशोंमें भेजे जिनसे जापान-सरकारकी सन्धि हो चुकी थी।

सन् १८६२ ई०के जनवरी महीनेमें जापान-सरकारके दूतदल युरोप और अमेरिकाकी ओर रवाना हुए। इस दूतदलके विदेश जानेसे विदेशियों और जापानियों दोनोंको नई बातें मालूम हुईं। विदेशियोंको यह मालूम हुआ, कि जापानी एशियाकी अन्यान्य जातियोंकी तरह सीधे सादे नहीं हैं। जापानियोंमें बुद्धि, विद्या, साहस और भुजबलके साथ साथ धारणाकी भी अपूर्व शक्ति है। उधर जापानियोंको मालूम हुआ, कि अमेरिका और युरोपवासी उनके पूर्व्वविचारानुसार गंवार

और असभ्य नहीं हैं। इनके अलावा विदेशी शक्तियोंके अस्त्र शस्त्र तथा उनकी फौजोंकी युद्धशिक्षा, उनका कला कौशल, उनकी विद्या आदि देखकर जापानियोंकी आखें खुल गईं।

इधर ईसाई-विरोधी दल विदेशियोंपर समय समय-पर आक्रमण करता ही जाता था और शोगन-सरकारको उन विदेशियोंकी क्षतिके बदलेमें प्रचुर अर्थ व्यय करना हो पड़ता था। सन् १८६२ई०की २६वीं जूनको यङ्कोमें अङ्गरेजोंके कान्सलनिवासपर ईसाई-विरोधियोंने आक्रमण किया। इस आक्रमणके बदलेमें शोगन-सरकारको १ लाख ५० हजार रुपयेका हरजाना देना पड़ा। इधर शोगन-सरकार और सम्राट-सरकारका वैमनस्य दिनोंदिन बढ़ने लगा। महाराज सत्सुमाने अपनेको शोगन और सम्राटका मध्यस्थ बनाकर दोनोंमें मेल करा देना चाहा। इसी अभिप्रायसे वह पहले राजधानी क्यूटोमें जापान-सम्राटके पास गया। वहां अपने समझानेका कोई फल न होता देखकर शोगननगर यङ्कोमें गया। यङ्कोमें पहुंचकर सत्सुमा-नरेशने शोगनको समझाया, किन्तु यहां भी वह विफल-मनोरथ हुआ। अन्तमें हताश होकर सत्सुमा-नरेश

स्वराज्यकी ओर लौटा। राहमें कुछ अङ्गरेज मिले। उन लोगोंने महाराज सत्सुमाकी सवारीकी और स्वयं सत्सुमानरेशकी ताजीम नहीं की इसपर महाराजके एक सिपाहीने इन बेअदब अङ्गरे-जोंमें एकको मार डाला। शेषके अङ्गरेज भाग गये। जापानके अङ्गरेजोंमें बड़ा जोश फैला। अङ्गरेजोंके जापानी कान्सल नील साहबने शोगन-सरकारसे एक अङ्गरेजकी हत्याके बदलेमें १५ लाख रुपये और अङ्गरेजके हत्यारे सिपाहीको मांगा। शोगन-सरकार हरजानेके रुपये देती देती हैरान हो गई थी। उसने जवाब दिया, कि अङ्गरेज अपनी बेअदबीकी वजह मारा गया, हम उसकी जानके बदलेमें रुपये न देंगे। इसपर नीलसाहबने चीन-समुद्रके अङ्गरेजी जङ्गी जहाज बुलाये। सन् १८६३ ई० की ११वीं अगस्तको अङ्गरेज नौ-सेनापति क्यूपरकी अधीनतामें अङ्गरेजी जङ्गी जहाजोंका बेड़ा कागोशिमा-बन्दरके सम्मुख उपस्थित हुआ। इस बेड़ेने जापा-नियोंके ३ ष्टीमर डुबा दिये और कागोशिमा बन्दरकी किलाबन्दियोंको गोल-वर्षणसे चूर्ण विचूर्ण कर दिया। इसके उपरान्त अङ्गरेजी जङ्गी जहाजोंकी फौज

तोपखानेमस्थित कागोशिमा नगरकी ओर अग्रसर हुई। इसने गोलोंकी मारसे कागोशिमा नगरको भूतलशायी बना दिया और अन्तमें उस ध्वंसविध्वंस नगरमें आग भी लगा दी। अङ्गरेजोंकी इतनी प्रबलता देखकर शोगन सरकार डरी। इसने हरजार अङ्गरेजोंका वांछित अर्थ चुका दिया।

किन्तु इस घटनासे महाराज सत्सुमाकी आंखें खुल गई। वे समझ गये, कि विदेशियोंका दमन दिल्लगी नहीं है। उन्हें विश्वास हो गया, कि विदेशियोंकी बराबरी करनेके लिये उन्होंकी जैसी शिक्षा, चालाकी, नौ-शक्ति और युद्धविद्या इत्यादि सञ्चय करनेका प्रयोजन है। महाराज सत्सुमाने राजा तेराशिमाको विलायत भेजा। उसके साथ बहुसंख्यक जापानी विद्यार्थी भी भेजे। जापानी विद्यार्थियोंको विदेशियोंको नाना विद्यायें और हुनर आदि सीखनेके लिये कहा। राजा तेराशिमाको विलायती जङ्गी जहाज, विलायती तोपें और विलायती नाना-आग्नेय-अस्त्रोंके खरीदने की अनुमति भी दी।

इधर जापानमें एक और दुर्घटना हुई। पाठकोंको याद होगा, कि शोगन-सरकार और सम्राट्-सरकारमें

मनोमालिन्य हो गया था। शोगन-सरकारने विदे-शियोंको जापान-प्रवेशकी आज्ञा दी थी, किन्तु सम्राट्-सरकार विदेशियोंसे घृणा करती थी और शोगन-सरकारकी इस हरकतसे वह निहायत नाराज थी। महाराज चोशू पहले शोगन-सरकारके पक्षमें था। किन्तु ईसाई-विरोधी होनेकी वजह वह शोगन-सरकारको छोड़कर सम्राट्-सरकारसे मिल गया। उसने अपने प्रदेशकी शिमानोसिकी नामक प्रणालीके किनारे अपना तोपखाना लगवाया और यह स्थिर कर लिया, कि विदेशियोंके जितने जहाज इस प्रणा-लीसे निकलें उनपर गोलावृष्टि की जावे। विदेशियोंके जहाज प्रायः इसी प्रणालीसे होकर निकला करते थे। सन् १८६३ ई० की २५ वीं जूनको अमेरिकाका "पेम्ब्रोक" जहाज इसी प्रणालीसे होता हुआ नागा-साकीको आ रहा था। महाराज चोशूके तोपखानेने इस जहाजपर गोले चलाये, किन्तु पेम्ब्रोक अछूता बचकर निकल गया। इसके उपरान्त इसी सन्‌की ८वीं जुलाईको फरांसीसी गनबोट शिमानोसिकी-प्रणालीसे होकर निकला। महाराजके तोपखानेने इसपर भी गोले बरसाये। गनबोट बहुत क्षतिग्रस्त

हुआ और बहुत बुरी दशासें नागासाकीमें पहुंचा। इसके उपरान्त "मेडुसा" नामक डचके जङ्गी जहाज-पर भी महाराजके तोपखानेसे गोले पड़े। मेडुसाने भी तोपखानेपर गोले बरसाये। अन्तमें उसको प्रणालीसे भागजाने होमें अपनी रक्षा जान पड़ी। इन समाचारोंसे याकोहामाके और नागासाकीके विदेशियोंसें बहुत बेचैनी फैली। विदेशियोंने शोगन-सरकारसे हरजानेका प्रचुर अर्थ मांगा और उसे महाराज चोशूको दण्ड देनेके लिये कहा। शोगन-सरकारने हरजानेके रुपये दे दिये, किन्तु महा· राज चोशूको दण्ड देनेका अवसर ताकने लगी। अङ्गरेजों तथा अन्यान्य विदेशी शक्तियोंको अव-सर ताकनेकी बात बहुत बुरी जान पड़ी। उन्हें महाराज चोशूको दण्ड देनेकी बहुत जल्दी थी। अङ्गरेजोंके ९ जङ्गी जहाज, डचके ४ जङ्गी जहाज और फरांसीसियोंके ३ जङ्गी जहाज, कुल १६ जङ्गी जहाज महाराज चोशूको दण्ड देनेके लिये तय्यार हुए। अमेरिकाने किरायेका एक ष्टीमर ले लिया और उसपर तोपखाना लादकर उसे इन १६ जहाजोंके साथ कर दिया। सन् १८६४ ई०की २८वीं और २९वीं

अगष्टको याकोहामासे जङ्गी जहाजोंका यह बेड़ा शिमानोसिकी-प्रणालीकी ओर रवाना हुआ। इसी सन्‌की ५वीं सितम्बरसे ८वीं सितम्बरतक शिमानोसिकी-प्रणालीमें विदेशियोंके जङ्गी जहाजों और महाराज चोशूके तोपखानेमें लड़ाई हुई। प्रणालीके किनारेपर लगा हुआ महाराज चोशूका तोपखाना नष्ट हो गया—इधर विदेशी शक्तियां अपने जहाजोंसे उतरकर चोशू-नरेशकी फौजोंसे लड़ने लायक नहीं थीं। सो, महाराज चोशू और विदेशियोंमें सन्धि हो गई। महाराज चोशूने प्रतिज्ञा की, कि भविष्यमें हमारा तोपखाना प्रणालीसे होकर निकलनेवाले विदेशियोंके जहाजोंपर गोले न बरसायेगा। इसके उपरान्त विदेशियोंके जङ्गी जहाज याकोहामाको लौट गये और विदेशियोंने शिमानोसिकी-प्रणालीकी चढ़ाईके लिये शोगन-सरकारसे ६० लाख रुपये जबरदस्ती वसूल करके आपसमें बांट लिये।

इस एक ही घटनासे जान पड़ता है, कि उस समय विदेशीलोग जापानसे बहुत जबरदस्तीके साथ रुपये वसूल किया करते थे। शिमानोसिकी-प्रणालीमें विदेशियोंका जितना नुकसान हुआ था उसके बदलेके

रुपये विदेशियोंने शोगन-सरकारसे पहले ही वसूल कर लिये थे। इसके अलावा शोगन-सरकार महाराज चोशूपर स्वय चढ़ाई करनेका समय ताक रही थी। विदेशी अपने जङ्गी जहाज लेकर स्वेच्छापूर्वक शिमा-नोसिकी-प्रणालीमें गये। लड़े भिड़े। इस लड़ाईमें अङ्गरेजोंका कोई नुकसान नहीं हुआ। इसपर भी विदेशियोंने शोगन-सरकारसे प्रचुर अर्थ लिया और आपसमें बराबर बराबर बांट लिया। जब शोगन-सरकारने शिमानोसिकी-प्रणालीपर चढ़ाईकी आज्ञा ही नहीं दी थी, तो उससे चढ़ाईका खर्च क्यों वसूल किया गया? और यदि चढ़ाईका खर्च लिया भी गया, तो इस लड़ाईमें अकृती वही शक्तिने खर्चसे समान भाग क्यों लिया? यह खुली हुई जबरदस्ती थी और उस समयकी पाश्चात्य शक्तियां इसी तरहकी जबरदस्तियां पूर्व्वीय शक्तियोंपर किया करती थीं। इतिहासमें इसकी सैकड़ों नजीरें मौजूद हैं। जो हो, हमें इन ऊपरी बातोंमें न पड़कर अपने असल मत-लबकी तरफ आना चाहिये।

शिमानोसिकीकी हारसे महाराज चोशूने ज्ञान-लाभ किया। प्रचुर धन और अधिक जन नष्ट करके

उसने अमूल्य अनुभव प्राप्त किया। महाराजने भी अपनी ओरसे अनेक विद्यार्थी विलायत और अमेरिकामें नाना प्रकारकी शिक्षा लाभ करनेके लिये भेजे। समुराईके अतिरिक्त शेष तीनो जातियोंके बहुसंख्यक मनुष्य अपनी फौजमें भरती किये। अपने फौजको नवीन शिक्षासे सुशिक्षित किया, नये हथियारोंसे सुसज्जित किया।

एक ओर यह हो रहा था दूसरी ओर सम्राट्-सरकार और शोगन-सरकारका वैमनस्य क्रमशः बढ़कर भयङ्कर मूर्त्ति धारण करता जाता था। शोगन-सरकारका यकीन था, कि विदेशियोंका जापानसे निकालना जापानकी शक्तिसे बाहर है। उधर सम्राट्-सरकार समझती थी, कि यदि शोगन-सरकार भी चाहे, तो विदेशी जापानसे निकाल दिये जा सकते हैं। दोनो सरकारोंका वैमनस्य बढ़ता देखकर सन् १८६३ ई०में शोगन इमोची जापानसम्राट्से मिलनेके लिये यड्डोसे जापान-राजधानी टोकियोमें गया था। उस समय कोमी जापानसम्राट् थे। कोमी और कोई नहीं,—वर्त्तमान जापान-सम्राट् मत्सुहितोके पिता थे। सम्राट् कोमीने शोगनसे कहा था, कि तुम

विदेशियोंको जापान-देशसे बाहर निकाल देनेकी आज्ञा दी। आज्ञा दी गई, किन्तु वह कार्य्यमें परिणत नहीं की गई।

शिमानोसिकी-प्रणालीवाले महाराज चोशूका ज्यादा परिचय फजूल है। महाराज चोशूके दिलमें यह खयाल पैदा हुआ, कि जापान-सम्राट्को चोशू-देशमें किसी तरह ले आना चाहिये। चोशू-नरेशने खयाल किया, कि जापानसम्राट्के चोशू देशमें आ जानेपर मेरी शक्तिका वारापार नहीं रहेगा। उसने अपनी फौज तय्यार की और अपना वह मनोरथ सिद्ध करनेके लिये जापानराजधानी क्यूटोकी ओर रवाना हुआ। नवयुवक शोगनके रक्षक हितोत्सुबाशीने चोशू-नरेशको विफलमनोरथ करनेके लिये एक बहुत बड़ी सैन्यके साथ क्यूटोनगरकी रक्षा करना आरम्भ की। महाराज सत्सुमाने हितोत्सुबाशीका साथ दिया। चोशूकी फौजों और शोगनकी फौजोंमें जापानराज-धानी क्यूटोके बाहर खूब युद्ध हुआ। चोशूकी फौजके तोपखानेके गोले क्यूटोनगरपर भी बरसते थे। इस गोलाबारीसे क्यूटोनगरमें आग लग गई थी और क्यूटोकी प्रायः २७ हजार इमारतें जलकर राख हो

गई थीं। अन्तमें महाराज चोशू परास्त हुआ। वह पार्वत्य-प्रदेशमें विचरण करता हुआ अपने देशमें चला गया। महाराज चोशू हमेशा बागी नहीं रहा। वर्त्तमान सम्राट् मत्सुहितोके समयमें उसने अपनेको ऊंचे दरजेका राजभक्त और राजनीतिज्ञ प्रमाणित किया। महाराज चोशू और शोगनकी लड़ाईके उपरान्त ईसाई-विरोधी दलको भी विश्वास हो गया, कि विदेशी ईसाई बलपूर्वक जापानसे नहीं निकाले जा सकते। इनको निकालनेके लिये इन्हींकी जैसी शक्ति प्राप्त करनेका प्रयोजन है। फलतः ईसाई-विरोधी दल और शोगन-सरकारमें क्रमशः सन्धि होने लगी। चोशू नरेश और शोगनमें सन्धि हो गई। सम्राट्-सरकारको भी विदेशी दुर्द्दमनीय ज्ञात पड़े। इस बारेमें सम्राट-सरकार और शोगन-सरकारकी राय मिल गई।

हम पहले लिख चुके हैं, कि शोगन-सरकारने विदेशी शक्तियोंसे सन्धि की थी। सम्राट्-सरकारने इन सन्धियोंके बारेमें अपनी किसी तरहकी अनुमति नहीं दी थी। सम्राट्-सरकारकी अनुमति न पानेसे शोगन-सरकार बहुत चिन्तित थी। शोगन-सरकार और महा-

राज चोशूमें सन्धि हो जानेके उपरान्त शोगन-सरकारने सम्राट्-सरकारसे विदेशियोंके साथ किये गये सन्धि-नियमोंको मञ्जूर कर लेनेकी प्रार्थना की। नवयुवक शोगनके रक्षक वयोवृद्ध हितोत्सुवाशीने इस बारेमें अविराम चेष्टा की। जापान-सम्राट्ने नवयुवक शोगन इमोचो और उसके रक्षकको जापान-राजधानी क्यूटोमें बुलाया। ओसाका-बन्दर जापान-राजधानी क्यूटोके समीप है। ओसाकामें शोगन इमोचोका किला था। इमोचो बड़ेसे अपने ओसाकाके किलेमें पहुंचा। समस्त विदेशी शक्तियोंको भी इस बातकी खबर मिली। नाना विदेशी शक्तियोंके जहाज हियोगो-बन्दरमें गये। वहां विदेशियोंके कन्सलगण अपने जहाजोंसे उतरे और ओसाकामें पहुंचे। शोगनसे मिलकर उससे अपने सन्धि-नियमोंको जापान-सम्राट्से मञ्जूर करानेकी प्रार्थना की। शोगनने सबको भरोसा देकर विदा किया। इसके उपरान्त शोगन क्यूटो गया। नवयुवक शोगन चरित्रविहीन और हतवीर्य मनुष्य था। उसका प्रभाव नहीं था—उसकी बातमें असर नहीं था। उसके रक्षक प्रभावशाली हितोत्सुवाशीने सम्राट्-सरकारसे सन्धि-नियमके मामलेपर बातचीत की। उसने कहा,

कि जापान-सम्राट्को इन सन्धि-नियमोंको सम्भवतः शीघ्र मञ्जूर करना ही विधेय है। उसने यह धमकी भी दी, कि विदेशी शक्तियोंके जङ्गी जहाज इस समय हियोगी-वन्दरमें मौजूद हैं। यदि सम्राट्-सरकार इन नियमोंको मञ्जूर करनेमें असुचि दिखावेगी, तो विदेशी फौजें अपने जहाजोंसे उतरकर राजधानी क्यूटोमें दाखिल हो जावेंगी और जापान-सम्राट्से वलपूर्व्वक उन नियमोंको स्वीकार करावेंगी। यह सुनकर जापान-सम्राट् भीत हुए। सन् १८६५ ई॰को २६वीं अक्टोबरको उन्होंने सन्धि-नियमोंको स्वीकार कर लिया। बहुत दिनोंके छाये हुए बादल बरसे विना ही छंट गये। जापानियोंको राजनीतिका आकाश एकबार फिर निर्म्मल दिखाई दिया। आकाश दिखाई दिया, किन्तु आकाशकी प्यारी शोभा चन्द्र नहीं।

इसके उपरान्त सन् १८६६ ई॰की १०वीं सितम्बरको १८ वर्षकी अवस्थामें ओसाकामें शोगन इमोचीका परलोकवास हुआ। इमोचीका रक्षक हितोत्सूबाशी मिटो प्रदेशका राजकुमार था। इमोचीके मरते ही जापान-सम्राट्ने हितोत्सूको शोगन बनाना चाहा।

शोगनका रक्षक बनकर हितोत्सूने अपने अकाट्य विचारों और गम्भीर बुद्धिका अच्छी तरह परिचय दिया था। जापान-सरकारका सम्मान हितोत्सूने सहज ही स्वीकार नहीं कर लिया। उसने कहा, कि यदि जापानके राजे महाराजे भी मुझे शोगन-पदके कार्य्यमें सहायता दें, तो मैं शोगन बनूंगा। जापानके अनेक नरनार्योंने हितोत्सूको शोगन पदके लिये सादर आग्रान्वित किया। अन्तमें हितोत्सू शोगन बना। शोगन-चड़ामणि इयास्सूके घरानेका यह अन्तिम शोगन था, इसके उपरान्त जापानमें और कोई शोगन नहीं हुआ।

शोगन इमोचीकी मृत्युके कुछ महीनोंके बाद सन् १८६७ ई०की ३री फरवरीको जापान-सम्राट् कोमी शीतलाके प्रकोपसे परलोकगामी हुए। वृद्ध जापानी कहते थे, कि विदेशियोंसे सन्धि कर लेनेका घृणित काम करनेकी वजह ही सम्राट् कोमीकी मृत्यु हुई। सम्राट् कोमीकी मृत्युके उपरान्त, सम्राट कोमीके पुत्र वर्त्तमान जापान-सम्राट् मत्सुहितो १५ वर्षकी अवस्थामें राज्याभिषिक्त हुए। जापानका धराधाम भविष्यकी उज्ज्वल छटा देखकर मुसकराया—जापानके पूर्व्व पुरुषोंकी आत्मायें भावी शुभ समयकी दशा जानकर पुलकित

हुई—जापानके वन,उपवन, पर्व्वत, प्रान्तर, अधित्यका, उपत्यका एक स्वरमें गर्ज्जन कर उठे,—बलिहारि जापान-सम्राट्! बलिहारि!!

सम्राट् मत्सुहितो १ सौ २१ पुश्तके सम्राट् हैं। जहांतक हम जानते हैं—मत्सुहितोके बराबर पुश्तैनी सम्राट् संसारमें दूसरे नहीं हैं। कौन जानता था, कि १५ वर्षके बालक मत्सुहितो वयसमें बालक होकर भी बुद्धिमें वयोवृद्ध हैं! जापानवासी समझते थे, कि मत्सुहितो भी अपने पिता तथा अपने अनेक पूर्व्वपुरुषोंके समान काठके पुतलेकी तरह जापान-सिंहासनपर बैठे रहेंगे। शोगन जापानका शासन करेगा। किन्तु मत्सुहितोके भाग्योदयका समय था। सभी बातें मत्सुहितोके अनुकूल हो रही थीं। जापानके अनेक राजों महाराजोंके मनमें यह ध्यान उत्पन्न हुआ, कि शोगनकी सरकारको तोड़ देना चाहिये। अकेली सम्राट्-सरकार हीको सम्पूर्ण जापान-साम्राज्य-पर प्रभुता करने देना चाहिये।

महाराज टोसा बुद्धिमान और प्रभुताशाली मनुष था। उसने सन् १८६८ ई०की अक्टोबर महीनेमें शोगनको एक चिट्ठी लिखी। चिट्ठीका मजमून

यह था,—"इस समय जापान-शासनके दो केन्द्र हैं। जापान-साम्राज्यको दो ओर अपनी निगाहें और कान फिरनेमें बहुत असुविधा होती है। इसी दिक्कतसे जापानमें बलवा हो गया और अब यह दिक्कत बहुत दिनोंतक नहीं रह सकती। आप अपनी प्रभुता जापान-सम्राट्के हवाले कर दीजिये। जिससे जापान-शासनका एक केन्द्र स्थापित होवे। और यही विधि अवलम्ब करनेपर जापानदेश अन्यान्य देशोंका समकक्ष बन सकेगा।"

शोगन हितोत्सवाशी बुद्धिमान पुरुष था। उसने अपने मित्रोंको एकत्र करके इस विषयमें उनकी सलाह ली। उसने स्वयं कहा, "देशमें विदेशियोंका प्रसार बढ़ता जाता है। ऐसी दशामें देशका एक ही शासक होना युक्तिसङ्गत है। देशके मङ्गलके लिये मैं अपनी शक्ति जापान-सम्राट्को दे देनेपर तय्यार हूं।" हितोत्सूके मित्रोंने भी हितोत्सूकी बात पसन्द की। सन् १८६३ ई०की १९वीं नवम्बरको हितोत्सूने जापान-सम्राट्से अपना अधिकार जापान-सम्राट् द्वारा ले लिये जानेकी प्रार्थना की। जापान सम्राट्ने प्रार्थना स्वीकार कर ली। शोगनका पद जापानसे विलोपित

हुआ। शोगनपद विलोपित होनेके साथ साथ जापान-साम्राज्यके शासनने नया स्वरूप बदला। पहले जापानदेश—जापानदेश मात्र था—नवीन स्वरूप धारण करते ही जापान देश एशियाकी महाशक्ति बनने लगा!
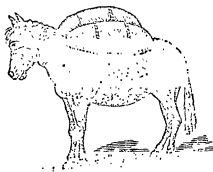
जपानका लदा हुआ टट्टू।

एकादश परिच्छेद।

बालक सम्राट् मत्सुहितोने राज्यकार्य्य हाथमें लेने ही जापानके सम्पूर्ण राजों महाराजोंको एकत्र करके एक सभा करनेका विचार किया। पदच्युत शोगनहितोतसुवाशीके जिम्मे विदेशियोंके सम्बन्धका काम सौंपा। राजधानीकी रक्षा करनेवाली सैन्यको बदली कर दी। राज्यके प्राचीन कर्म्मचारी छुड़ा दिये उनकी जगह नये लोग भरती किये। जापान-सरकारकी ओरसे प्रत्येक प्रदेशमें सुविज्ञ और विद्वान लोग भांति भांतिके कामोंपर नियुक्त किये गये। जापान-सरकारने एक शाही फर्म्मान निकालके सम्पूर्ण जापानमें विज्ञप्ति दी, कि भविष्यमें जापान-साम्राज्यके सब काम स्वयं सम्राट्-द्वारा सम्पादित किये जावेंगे।

अनेक राजे महाराजे शोगन-सरकारद्वारा पदच्युत कर दिये गये थे। उनके राज्योंपर शोगन-सरकारने अधिकार कर लिया था। किन्तु जापान-सम्राट्ने शक्तिशाली होते ही समस्त पदच्युत राजों महा-

राजोंको उनके राज्य उन्हें लौटा दिये। महाराज चोशूपर विशेष कृपा दिखाई। महाराज चोशूको अपना दरबारी बनाया और उसके सिपाहियोंको अपनी राजधानीका रक्षक। अनेक राजों महाराजोंने महाराज चोशूके जापान-सम्राट्का कृपाभाजन बननेपर असन्तुष्टि प्रकट की, किन्तु महाराज चोशूके मित्र नरेशगण महाराज चोशूके सम्मानित होनेसे बहुत हर्षित हुए। चोशूपतिके मित्र अधिक थे वैरी कम। महाराज सन्जोसनयोशीको जापान-सम्राट्ने अपना प्रधानमन्त्री बनाया। अपने सभापतित्वमें जापानके राजों महाराजोंकी एक प्रबन्धकारिणी सभा स्थापित की। इस सभाद्वारा राज्यकार्य्यमें सहायता ली जाने लगी।

पदच्युत शोगन उस समय कूटोके निकटस्थ नगर ओसाकामें रहता था। पदच्युत शोगनके तरफ़दार राजे महाराजे भी उसके पास ओसाका हीमें रहते थे। शोगनके तरफ़दार नरेशोंको प्रबन्धकारिणी सभाका सङ्गठित होना बुरा जान पड़ा। इन लोगोंने प्रकाशरूपसे सभाका विरोध करना स्थिर किया। पदच्युत शोगन द्वितीतृस्वामी समझता था, कि इस

तरहके विरोधसे खूनखराबी होगी। इस वजह उसने अपने तरफदार राजोंको समझा बुझाकर उन्हें प्रबन्धकारिणी सभासे सन्तुष्ट होनेकी सलाह दी। इसी समय शोगनने विदेशी शक्तियोंके कन्सलोंको ओसाकामें बुलाया। उनसे प्रबन्धकारिणी सभाके नदेशों और अपने तरफदार नदेशोंसे वैमनस्य होनेका हाल कहा। साथ ही यह भी कहा, कि आप लोगोंको चिन्तित न होना चाहिये। मैं आप लोगोंके स्वत्वकी रक्षा करूंगा। विदेशी शक्तियोंके कन्सलोंने ओसाकासे लौटकर अपनी अपनी जातिवालोंको इस समाचारकी सूचना दी और यह कहा, कि ऐसे समय सम्राट्‌दल या पदच्युत शोगनदल—किसी दलके हाथ हथियार और गोली बारूद आदि न बेचना चाहिये।

सन् १८६८ ई० के जनवरी मासके अन्तमें जापान-सम्राट्‌ने महाराज ओवारी और महाराज एचिजेन-द्वारा पदच्युत शोगनको ओसाकासे जापान-राजधानी क्यूटोमें बुलाया। पदच्युत शोगन हितोत्सूने निमन्त्रण स्वीकार किया। किन्तु हितोत्सूके तरफदार राजों एजू और कुआनाने हितोत्सूके कान

मरे। कहा, कि आप राजधानीमें जानेपर गिरफ्तार कर लिये जायेंगे। इस कारण राजधानीमें ससैन्य जाना मुनासिब है। हितोत्सू १० हजार सिपाहियोंको साथ लेकर जापान-सम्राट्की निमन्त्रणरक्षा करने चला। जापान-सम्राट्को हितोत्सूके साथके बहुसंख्यक सिपाहियोंसे भय जान पड़ा। उन्होंने महाराज चोशू और सत्सुमाको १५ सौ सिपाहियोंके साथ शोगनका राजधानी प्रवेश रोकनेके लिये रवाना किया। दोनों महाराजोंकी फौजें विलायती युद्धशिक्षासे अभिज्ञ थीं—विलायती आग्नेय-अस्त्रोंसे सुसज्जित थीं। ओसाका और क्यूटोके बीचकी राहपर हितोत्सू और महाराजोंकी फौजोंमें मुकाबला हुआ। सन् १८६८ ई० को २८ वीं, २९ वीं और ३० वीं जनवरीतक दोनों ओरकी फौजें लड़ीं। महाराजोंकी सुशिक्षित सैन्यने पदच्युत शोगनके अशिक्षित, किन्तु बहुसंख्यक सिपाहियोंको परास्त किया। पदच्युत शोगन हितोत्सू हृदयभग्न होकर भागा। ओसाकेमें भी नहीं ठहरा। एक ष्टीमरपर सवार होकर यड्डोकी तरफ रवाना हुआ।

ष्टीमरपर एक दुर्घटना हुई। हितोत्सूके एक

सरदारने हितोत्सूको आत्महत्या कर लेनेकी सलाह दी। हितोत्सूने उसकी सलाह नामञ्जूर की। इसपर उस सरदारने हितोत्सूके सामने स्वयं आत्महत्या कर ली। अन्तमें हितोत्सू यडो पहुंचा। यडोमें खूब अशान्ति फैली हुई थी। विदेशियोंके पक्षपाती और विरोधी दल परस्पर लड़ मर रहे थे। हितोत्सूके यडो पहुंचनेके कुछ ही दिनों बाद जापान-सम्राट्की फौजें यडोमें पहुंचीं। फौजके सरदारने पहले यडोका बलवा दबाया। यडोवासियोंको शाही फरमान सुनाया, कि स्वयं जापान-सम्राट्ने विदेशियोंकी रक्षाकी आज्ञा दी है। जो जापानी विदेशियोंके साथ कुत्सित व्यवहार करेगा वह कठोर-दण्डका भागी होगा। इसके बाद शाही फौजका सरदार परच्युत शोगनके पास गया। उससे कहा,— "सम्राट्की आज्ञा है, कि तुम यडोका किला खाली करके और अपने सब हथियार आदि शाही फौजके हाथमें समर्पण करके अपने देश मिटोमें चले जाओ। वहां एकान्तवास करो। हितोत्सूने सम्राट्की आज्ञा शिरोधार्य की। वह अपने राज्य मिटोके सम्पू किलेमें चला गया। संसारका समस्त सम्पर्क त्यागकर

इसी किलेमें रहने लगा। इसी किलेमें हितोत्स्का स्वर्गवास हुआ। हितोत्स्के स्वर्गवासके साथ साथ जापानका अन्तिम शोगन और शोगन इयासूके घरानेका अन्तिम प्रधान पुरुष सदैव सदैवके निमित्त संसारसे मिट गया।

पदच्युत शोगन शाही आज्ञा शिरोधार्य करके यडोसे चला गया। किन्तु शोगनकी स्थलसेना और नौ-सेनाने जापान-सम्राट्को अधीनता स्वीकार नहीं की। पदच्युत शोगनको प्रबल पराक्रान्त फौजें महाराज एडूकी अधीनतामें यद्दोके आसपास रहकर महीनोंतक समय समयपर शाही फौजसे खण्डयुद्ध करती रहीं। अन्तमें पदच्युत शोगनको सैन्यका बल तोड़नेके लिये बहुत बड़ी शाही फौजने उसपर चढ़ाई की। सन् १८६८ ई० की ४ थी जुलाईको उद्दनोके मन्दिरके समीप शाही और बागी फौजोंमें घोर युद्ध हुआ। इस युद्धमें उद्दनोका मन्दिर नष्ट हुआ। अन्तमें बागी फौजें भागीं और वाकामत्सू-दुर्गमें घुसकर किलाबन्द हो गईं। शाही फौजोंने किला घेर लिया। कुछ दिनोंके घिरावके उपरान्त महाराज एडूने बागी फौजोंका समस्त अपराध अपने

भावेपर लेकर शाही फौजके हाथ अपना आत्मसमर्पण कर दिया। इसके बाद बागी फौजोंने भी शाही फौजोंके सामने हथियार डाल दिये। जापान-सम्राट्ने बागी फौज और महाराज एजू सबका अपराध क्षमा कर दिया।

यह हुआ पदच्युत शोगनके स्थलसैन्यका परिणाम; अब जलसैन्यका हाल सुनिये! पदच्युत शोगनके जङ्गी जहाज यड्डोकी शिनागावा नामक गोदीमें खड़े थे। इन जहाजोंपर कुल ८३ तोपें चढ़ी थीं। इन जहाजोंके दो प्रधान नौ-सेनापति थे। एकका नाम था इनामोटो और दूसरेका मत्सू। इनामोटो युरोपके हालैण्डदेशसे नौ-युद्धकी शिक्षा-ग्रहण कर आया था। दोनो नौ-सेना-पतियोंने जापान-सम्राट्की अधीनता मञ्जूर नहीं की। उन्हें शाही नौ-सेनाके हाथ आत्मसमर्पण कर देनेकी आज्ञा दी गई। रात होते ही उन्होंने अपने जहाजोंके इञ्जिनोंमें वाष्प तय्यार की और यड्डो-बन्दरसे निकलकर खुले समुद्रमें पहुंच गये। सरकारी जङ्गी जहाजोंने बागी जङ्गी जहाजोंका पीछा किया। हाकोडेट बन्दरके समीप सरकारी और

बागी जङ्गी जहाजोंमें लड़ाई हुई। सन् १८६८ ई० तक लड़ाई चलती रही। अन्तमें बागी नौ-सेनाके प्रधान नौ-सेनापतियों—इनामोटो और मत्सुने सब अपराधका भागी अपनेको बनाकर सरकारी नौ-सेनाको आत्मसमर्पण कर दिया। दोनो बागी नौ-सेनापति गिरफ़तार किये जाकर यडोमें पहुंचाये गये। जापान-सम्राट्ने दोनोंका अपराध क्षमा करके उन्हें बन्धनसे अव्याहति दी।

सन् १८६८ ई० की ८ वीं फ़रवरीको जापान-सम्राट्ने समस्त विदेशी कन्सलोंके पास एक सूचनापत्र भेजा। उसमें लिखा था, "तुम लोग अपनी अपनी सरकारको सूचित करो, कि भविष्यमें मैं जापान-सम्राज्यका शासन करूंगा और विदेशियोंके मामले भी मेरे हीद्वारा ते किये जावेंगे।" यह सूचनापत्र भेजनेके उपरान्त जापान-सम्राट्ने समस्त विदेशी कन्सलोंको राजधानी क्यूटोमें अपनी मुलाकातके लिये बुला भेजा। इस समय इस बातके सुननेसे लोगोंको अधिक आश्चर्य नहीं हो सकता। आजकल प्रायः सभी विदेशी मनुष्य जापान-सम्राट्से मिल सकते हैं—जापान सम्राट्की तस्वीरें जगह जगह मिल सकती

हैं। किन्तु सन् १८६८ ई०के पहलेतक किसी विदेशीने कभी जापान-सम्राट्का दर्शन नहीं किया था। और तो क्या,—जापानवासी भी जापान-सम्राट्का दर्शन नहीं पाते थे। सम्राट्के निकटवर्त्ती लोग ही सम्राट्को देख सकते थे। सो उस समय जापान-सम्राट्की विदेशी कान्सलोंसे मुलाकात करनेकी इच्छाका हाल सुनकर विदेशियों और जापानियों दोनोको हैरान होना पड़ा। सम्राट्का निमन्त्रण पाकर विदेशी कान्सल जापान-राजधानीमें गये। सन् १८६८ ई० की २६ वीं मार्चको डच और फरांसीसी कान्सल जापान-सम्राट्के दरबारमें उपस्थित हुए और उनसे मिलकर लौट आये। उसी दिन अङ्गरेजोंके कान्सल पारकेस साहब भी सम्राट्से मिलने चले। राहमें एक दुर्घटना हो गई। २ ईसाई-विरोधी समुराई अपना जोश सम्बरण करनेमें अक्षम होकर नङ्गी तलवारें लेकर पारकेस साहब और उनके अङ्गरेज साथियोंपर टूट पड़े। ९ अङ्गरेजोंको घायल करनेके उपरान्त एक समुराई जानसे मारा गया, दूसरा गिरफ्तार हो गया। जो समुराई गिरफ्तार हुआ जापान-सम्राट्की आज्ञासे उसका सिर कटवाकर

मक्र सड़कपर रखवा दिया गया। जापान-सम्राट् ने अपने उच्च कर्म्मचारियोंको पारकेस साहबके पास भेजकर पूर्व्वोक्त दुर्घटनापर शोक प्रकट कराया। पारकेस साहबको किसी दूसरे दिन दरबारमें बुलाया और उनसे मुलाक़ात की। इसके उपरान्त जापान-सम्राट्ने फर्मान जारी किया। उसमें लिखा था,—"जो समुराई विदेशियोंपर आक्रमण करेगा उसका समुराई पद छीन लिया जावेगा—वह आत्महत्या नहीं करने पावेगा—साधारण अपराधियोंकी भांति उसका विचार किया जावेगा।"

सन् १८६८ ई० में महाराज सतसुमाने जापान-सम्राट्के सम्मुख एक अपूर्व्व प्रस्ताव उपस्थित किया। प्रस्तावका हाल सुनकर जापान चकित हुआ। प्रस्तावका मर्म्म यह था—"हे सर्व्वशक्ती-श्वर जापानपति! आप देशके राजों महाराजों-पर अपने राज्यकार्य्यका भार न रखिये। प्राचीन जापान-सम्राटोंकी जैसी विलासिता परित्याग करके अपने राज्यकार्य्यका तत्वावधान आप ही कीजिये—राज्यकार्य्यमें परिश्रम कीजिये—प्रजा और राज्यकी उन्नतिमें पराकाष्ठा दिखाइये। आगे, आप अपनी

राजधानी भी बदल डालिये। आपकी वर्त्तमान राजधानी आपके सम्राट् पूर्व्वपुरुषोंका विलासनगर थी। अब आप ओसाकानगरको अपनी राजधानी बनाकर ओसाकाको अपना कार्य्यक्षेत्र बनाइये।" अवश्य ही इस तरहका प्रस्ताव यदि किसी प्राचीन जापान सम्राट्के सम्मुख उपस्थित किया गया होता, तो प्रस्ताव करनेवालेको प्राणवधका दण्ड दिया जाता या उसको आत्महत्या कर लेनेकी सलाह दी जाती। किन्तु जापान सम्राट् और उनके दरबारी दूसरी ही पाठशालाके छात्र थे। जापान सम्राट्ने सलाह चेष्टा की।

सन् १८६८ ई० को १७ वीं अप्रैलको जापान-सम्राट्ने राजधानी क्यूटोमें बहुत बड़ा एक दरबार किया। दरबारमें जापानके समस्त राजे महाराजे और जापानके समस्त प्रदेशोंके प्रतिनिधि उपस्थित थे। जापान-सम्राट्ने सबके सम्मुख निम्न लिखित ५ काम करनेकी सौगन्ध खाई:—

१—डायट नामक एक बहुत बड़ी सभा सङ्गठित की जावेगी। इसमें जापानके राजे महाराजे और

जन साधारण सभी शरीक होंगे। इस सभाकी अनु-
मतिसे जापानका राज्यकार्य्य किया जावेगा।

२—देशके प्रत्येक श्रेणीके मनुष्यको सामाजिक
और राजकीय मामलोंपर परामर्श देनेकी स्वतन्त्रता
दी जावेगी।

३—देशकी प्रत्येक मनुष्यको अच्छा काम करनेमें
जापान-सरकार सहायता देगी।

४—प्राचीन समयकी कुत्सित रीतियां रोक दी
जावेंगी और सृष्टिके (Nature) जैसा न्याय तथा
[illegible]

५—जापान साम्राज्यकी प्रतिष्ठा सुदृढ़ करनेके
लिये जापान-वासियोंको देशके समस्त भागोंमें जाकर
बुद्धि और विद्या सीखना चाहिये।

जापान-सम्राट्के सौगन्ध खानेके कुछ ही दिनों
बाद—याने सन् १८६८ ई० की ग्रीष्मऋतुमें जापानी
डायट सभाकी पहली बैठक राजधानी क्यूटोमें हुई।
जापानद्वीप-समूहके प्रत्येक नरनाथके प्रतिनिधि इस
डायट सभामें शरीक हुए। बहुसंख्यक सुयोग्य
जापानवासी इस सभाके सदस्य बने। सभाकी पहली

बैठकमें जापान-शासन सम्बन्धी नाना विषयोंपर तर्क-वितर्क हुआ। कितनी ही बातोंका खण्डन हुआ, कितनी ही बातोंका मण्डन। सभा अपनी पहली ही बैठकमें होनहार प्रमाणित हुई। इसके उपरान्त सभा नियमानुसार होने और जापानके राज्यकार्यको यथेष्ट सहायता पहुंचाने लगी।

इस सभाने जापान-सरकारके ८ विभाग तय्यार किये। विभागोंके नाम ये हैं:—

१—सर्व्व प्रधान शासन-विभाग।
२—शिण्टो धर्म्म-विभाग।
३—स्वदेश-विभाग।
४—विदेश-विभाग।
५—युद्ध-विभाग।
६—राजस्व-विभाग।
७—विचार-विभाग।
८—व्यवस्थापक-विभाग।

आरम्भमें इतने ही विभाग बनाये गये थे। इस समय प्रयोजनानुसार इन विभागोंकी शाखायें और प्रशाखायें भी तय्यार कर ली गई हैं।

अब हम अपने पाठकोंको एक ऐसे कामका हाल सुनावेंगे जिस कामकी नजीर किसी देशके इतिहासमें

मौजूद नहीं है। जापानके अनेक प्रधान महाराजोंके मनमें यह विचार उत्पन्न होने लगा, कि सम्पूर्ण जापान-देशपर जापान-सम्राट्का अधिकार हो जाने हीमें जापानदेशका मङ्गल है। जापानके राजों महा-राजोंके अधीनस्थ समुराई जातिवालोंके मनमें भी ऐसा ही भाव उत्पन्न हुआ। जिस राज्यके लोभसे समस्त संसारके राजे सहस्र सहस्र प्राणियोंका वध करानेमें सङ्कोच नहीं करते—जिस अधिकार और प्रभुताकी महामायासे अन्धे होकर लोग ईश्वर तुल्य पिता और सुधामयी जननीपर खड्ग हस्त होनेमें कुण्ठित नहीं होते,—जापानी राजे महा-राजे, जननी जन्मभूमि जापानके मङ्गलके लिये—स्वजातीय कोटि कोटि जापानी बन्धुओंके हितके लिये—अपने उसी राज्यको तृणवत तुच्छ समझकर उन्हें जापान-सम्राट्के पद्मपरागमें उत्सर्ग कर देनेके लिये उद्यत हुए।

जापानी नरनार्योंने अपनी इस मङ्गल कल्पनाको शीघ्र ही कार्य्यमें परिणत किया। सन् १८६८ ई०में सत्सुमा, चोशू, इजेन, टोसाकागा इत्यादि इत्यादि शत शत जापान-नरशोंने अपने राज्य जापान सम्राट्की

सेवामें समर्पित किये। इन सब नरपतियोंकी ओरसे जापान-सम्राट्को एक प्रार्थनापत्र भेजा गया। एकवार पत्रका भाव देखिये:—"नरनाथ! जिस भूमिपर हमारा निवास है वह श्रीमानकी है। जिस भोजनसे हमारे प्राण हैं वह भोजन,—हे नरपुङ्गव! आप हीकी प्रजाद्वारा उत्पन्न किया जाता है। सो यह भूमि भी हमारी नहीं है—भोजन भी हमारा नहीं है। हम आज अपने राज्य, अपने भृत्य, अपने कोष श्रीमान्के चरण कमलोंमें समर्पित करते हैं—कृपानाथ कृपापूर्व्वक इन्हें स्वीकार कीजिये! उनके साथ उचित व्यवहार कीजिये! इच्छानुसार उनका स्वरूप परिवर्त्तन कीजिये। हम श्रीमानके दास हैं, दीन हीन और पुत्रवत प्रजा हैं। श्रीमान् हमारे प्रतिका नितान्त प्रयोजनीय कर्त्तव्य पालन कीजिये।" पूर्व्वोक्त महाराजोंका आत्मोत्सर्ग देखकर शत शत जापान-नरेश उनका अनुसरण करनेके निमित्त अग्रसर हुए। देखते देखते २ सौ ४१ जापानी नरेशोंने अपने राज्य जापान-सम्राट्को भेंटमें दिये। थोड़ेसे नरेश राज्यलोभके वशीभूत होकर इस अपूर्व्व अलौकिक कार्य्यमें संयुक्त होनेसे पश्चात्पद हुए। इसपर महा-

राज प्रजकीने उन्हें ललकारकर कहा,—"भाइयो ! महाराजो ! सम्राट्का राज्य सम्राट्को लौटा देनेमें इतस्ततः क्यों करते हो ?" इसके उपरान्त ही जापान-सम्राट्ने एक फर्मान जारी किया। सन् १८६८ ई० की ७ वीं अगस्टको यह फर्मान जापानके सरकारी गैजेटमें छपा। फर्मानमें लिखा था,—"भविष्यमें सम्पूर्ण जापानी महाराजोंके राज्यपर जापान-सरकार शासन करेगी। जापानी नरेशोंकी महाराज वा राजाकी पदवीकी जगह "कुगासू" की सम्मान-सूचक पदवी दी जावेगी।"

पल भपकनेमें कुछका कुछ हो गया। सम्पूर्ण जापानी नरेशोंने अपने राज्य जापान-सम्राट्को दे दिये। संसारमें एक अचिन्तनीय काम हो गया। धन्य जापाननरेश ! धन्य जापानभूमि ! धन्य देश-हितैषिता ! धन्य आत्मोत्सर्ग ! जापानी नरनाथोंके इस अपूर्व कार्य्यसे संसार चौंका—सांसारिक स्तम्भित हुए !

इसके बाद जापानके नरेशगण भिन्न भिन्न प्रदेशोंके गवरनरीपदपर आरूढ़ किये गये। जो जापानी महाराज अपने पदके अयोग्य समझा जाता था—वह हटाया जाता था। उसकी जगह राज्यका सुयोग्य

मनुष्य संस्थापित किया जाता था। पदत्यागी महाराजोंको जापान-सम्राट् उनके परित्यक्त राज्यकी आयसे दशम अंश देने लगे। पदत्यागी महाराजोंके नौकरों और उनके समुराइयोंको जापान-सरकारने नौकर रख लिया। वयोवृद्ध लोगोंको पेनशनें भी दीं। नये बन्दोबस्तमें खर्च करनेके लिये जापान-सरकारको ३३ करोड़ रुपयेका ऋण लेना पड़ा था।

अब जापान-सम्राट्ने अपनी राजधानी परिवर्त्तन करनेकी ओर ध्यान दिया। महाराज सत्सुमाने जापान-सम्राट्की ओसाकाको राजधानी बनानेकी सलाह दी थी। किन्तु नाना कारणोंसे जापान-सम्राट्ने यड्डोको अपनी राजधानी बनाना स्थिर किया। सन् १८६८ ई० की २६ वीं नवम्बरको जापान-सरकार सम्राट् सहित क्यूटोसे उठकर यड्डोमें चली आई। जापान-सम्राट् यड्डोके किलेमें रहने लगे। जापान-सम्राटके यड्डोमें आते ही यड्डोका नाम यड्डोसे बदलकर टोकियो कर दिया गया। जापानी-भाषामें टोकियो शब्दका अर्थ है, "पूर्व्वीय राजधानी।" आजकल जापानकी राजधानी टोकियो ही है। जापान-सम्राट् कभी कभी अपनी पुरानी राज-

थानी क्यूटोमें भी तशरीफ ले जाया करते हैं। वहां अपने पूर्व्वपुरुषोंकी समाधियोंका दर्शन करते हैं—समाधियोंपर पुष्प चढ़ाते हैं। सन् १८६८ ई० में जापान-सम्राट्ने क्यूटो जाकर फूजीवारा घरानेकी एक राजकुमारीके साथ विवाह किया। वही राजकुमारी आजकल जापान-सम्राज्ञी हैं।

सम्राट् मत्सुहितोके जमानेमें ईसाईधर्म्मका भी खूब प्रचार हुआ। सन् १८७२ ई० के मार्च महीनेमें जापान-सम्राट्ने एक आज्ञा निकाली, कि प्रत्येक जापानवासी इच्छानुसार धर्म्म अवलम्बन कर सकता है। कितने ही जापानी ईसाई भयवश बौद्ध होनेका बहाना करने लगे थे, उन्होंने अपना आवरण उतारकर प्रकृत मूर्त्ति प्रकट की। इस समय जापानमें सहस्र सहस्र जापानी ईसाई भी मौजूद हैं।

अब जापानसाम्राज्यमें नये नये सुधार और नये नये आविष्कार होने लगे। सन् १८७२ ई० में पहले पहल योकोहामासे टोकियोतक रेलगाड़ी खुली। इसी सन्में जापान-प्रदेशमें तार भी लगा। सन् १८७५ ई० में जापानने अपना सघेलियन-द्वीप रूसको देकर रूसका क्यूराइलद्वीप-समूह ले लिया। सन् १८७६ई०

में कोरिया और जापानमें हलकासा झगड़ा हो गया। कोरियावासियोंने जापानके एक जहाजपर आक्रमण किया। जापानने सेनापति कुरोडाकी अधीनतामें एक फ़ौज भेजी। कोरियाने जापानसे माफ़ी मांगी। साथ साथ अपने देशमें जापानी व्यापारका फैलना स्वीकार किया। इसके उपरान्त जापानके भिन्न भिन्न प्रदेशमें समय समयपर छोटे छोटे बखेड़े हो जाते थे, जिन्हें जापान-सरकार सरलतापूर्व्वक मिटा देती थी।

इसी जमानेमें नवीन जापान सरकारके लिये बहुत बड़ा एक भय उपस्थित हुआ। महाराज सत्सुमाके घरानेका सायगो नामक मनुष्य पुराने खयालातका आदमी था। उसको जापानका नया बन्दोबस्त पसन्द नहीं आया। वह बागी हो गया। समुराई जाति सायगोकी पूजा करती थी। सायगोने अपने प्रभावसे प्रायः १४ हजार लड़ाके मनुष्य एकत्र किये। सन् १८७७ ई०के मध्य फरवरी महीनेमें बागी सायगो अपने बागी साथियोंसहित कागोशिमासे जापान-राजधानी टोकियोपर आक्रमण करनेके लिये अग्रसर हुआ। राहमें कुमामोटो नामक सरकारी किला मिला। किलेमें प्रायः ३ हजार जापानी सिपाही

थे। वागियोंने किला घेर लिया। किलेका पतन हुआ ही चाहता था, कि वागियोंके मुकाबलेके लिये सरकारी सैन्य आ गई। वागियों और सरकारी फौजमें गहरी लड़ाई हुई। वागी हारकर जापानके पूर्व्वीय किनारेकी ओर भागे। सरकारी सैन्यने उनका पीछा किया और कईबार वागियोंपर आक्रमण भी किया। अन्तमें वागियोंकी फौज नोवीयोका स्थानमें ठहर गई। वहां वह जानकी परवाह न करके सरकारी सैन्यसे लड़ने लगी। वागीसरदार सायगो शेष वागियोंकी प्राणरक्षाके खयालसे २ सौ साथियोंके साथ सरकारी सैन्यको भेदकर कागोशिमाकी ओर भागा। अपनेको विना सरदार पाकर वागियोंकी फौजने सन् १८७७ ई० की १८ वीं अगष्टको सरकारी फौजके हाथ आत्मसमर्पण किया। इधर सायगो अपने २ सौ आदमियोंसहित कागोशिमाके समीप शिरोयामा पहाड़ीपर सरकारी फौजोंद्वारा घिर गया। सायगोके दुर्द्धर्ष साथियोंने बड़ी मुस्तैदीके साथ सरकारी सैन्यका सामना किया। अन्तमें सन् १८७७ ई० की २४ वीं सितम्बरको यह पहाड़ी सरकारी सैन्यने हस्तगत कर ली। पहाड़ी-

पर साचगो और उसके साथियोंकी लाशें मिलीं। इस प्रकार जापान-सम्राट्को धमकी देनेवाला यह बागीसरदार मारा गया और जापान-सरकार निश्चिन्त हुई।

सन् १८९० ई०में जापानकी डायट सभाकी दूसरी बैठक हुई। इस अवसरमें डायटसभाके लाभसे देशने पूर्ण ज्ञान लाभ कर लिया था। इसके उपरान्त डायट सभा पूर्णतया स्थापित हो गई। इस सभाके बैठने और भङ्ग होनेका समय निर्द्दिष्ट कर दिया गया।

हम गत सन् १८९० ई० पर्य्यन्तका जापान वृत्तान्त लिखकर, "जापान-वृत्तान्त" समाप्त करते हैं। सन् १८९० ई०के बादसे अवतक,—याने सन् १९०४ ई० तक,—जापानने कल्पनातीत उन्नति की है। गत १४ वर्षोंका जापान-वृत्तान्त लिखनेसे दूसरा "जापान-वृत्तान्त" वा इससे भी बड़ा कोई वृत्तान्त तय्यार हो सकता है। सन् १८९४ ई०में जापान-चीन युद्ध हुआ था। जापनने एशियाके एरावत चीनको पद-दलित कर डाला था। जापानविजयी और चीन विजित हुआ था। आजकल जापान संसारकी सर्व्वश्रेष्ठ शक्ति रूससे युद्ध कर रहा है। सिर्फ युद्ध ही नहीं कर रहा है—रूसको ध्वस्त विध्वस्त कर रहा है—पद

पदपर पराजित कर रहा है। जापानने युद्धविद्यामें उन्नति करनेके साथ साथ सामाजिक और राजनीतिक उन्नतिकी पराकाष्ठा भी दिखा दी है। जुगनूं आज सूर्य्य बन गया है—क्षुद्र जलस्रोत आज समुद्र बन गया है—नन्हीं सी कली आज नन्दन-काननका पारिजात-कुसुम बन गई है। जापानकी इस अपूर्व्व उन्नतिका कारण क्या है? प्रतिध्वनि कहती है,—स्वदेशभक्ति! श्रम और आत्मोत्सर्ग!! इति।

जापानका कुली।

जापानके सम्राटों और सम्राज्ञियोंकी फ़िहरिस्त।

सं०	नाम	राज्याभिषेक सन्		मृत्यु	सन्
१	जिम्मू	ईसाके जन्मके पूर्व	६६०	यथा	५८५
२	सुइजी	यथा	५८१	यथा	५४९
३	अन्नी	यथा	५४८	यथा	५११
४	इटोकू	यथा	५१०	यथा	४७७
५	कोशो	यथा	४७५	यथा	३९३
६	कोआन	यथा	३९२	यथा	२९१
७	कोरी	यथा	२९०	यथा	२१५
८	कोगेन	यथा	२१४	यथा	१५१
९	कैकवा	यथा	१५७	यथा	९३
१०	सुजिन	यथा	९७	यथा	३०
११	सुइनिन	यथा	२९	ईसाके जन्मोपरान्त	७०
१२	कैइको	ईसाके जन्मोपरान्त	७१	...	१३०
१३	सेम्ह	...	१३१	...	१९०
१४	चुआई	...	१९२	...	२००
	महारानी जिङ्गो		२०१	...	२६९
१५	ओजिन	...	२७०	...	३१०
१६	निनतोकू	...	३१३	...	३९९

सं० नाम		सन्		सन्
१७ रिचु	...	४००	...	४०५
१८ इनजी	...	४०६	...	४११
१९ इनकियो	...	४१२	...	४५३
२० आनको	...	४५४	...	४५६
२१ यूरियाकू	...	४५७	...	४७९
२२ सीनी	...	४८०	...	४८४
२३ कैनजो	...	४८५	...	४८७
२४ निनकेन	...	४८८	...	४९८
२५ सूरेतुस्क	...	४९९	...	५०६
२६ केताई	...	५०७	...	५३१
२७ अनकान	...	५३४	...	५३५
२८ सेनकवा	...	५३६	...	५३९
२९ किम्मी	...	५४०	...	५७१
३० बिदातुस्क	...	५७२	...	५८५
३१ योमी	...	५८६	...	५८७
३२ सुजन	...	५८८	...	५९२
३३ सम्राज्ञी सुइको		५९३	...	६२८
३४ जोमी	...	६२९	...	६४१
३५ सम्राज्ञी कोकियोकू		६४२		...
३६ कोटोकू	...	६४५	...	६५४
३७ ऐमी	...	६५५	...	६६१
३८ तेनजी	...	६६८	...	६७१
३९ कोवन	...	६७२	...	६७२

नं० नाम		सन्		सन्
६३ रीजी	...	९६८	...	१०१
६४ यनीयू	...	९७०	...	९९१
६५ कागान	...	९८५	...	१००८
६६ इशियो	...	९८७	...	१०११
६७ सन्जो	...	१०१२	...	१०१७
६८ गोइशिजो	...	१०१७	...	१०२८
६९ गोशुजाकू	...	१०३७	...	१०४५
७० गोरीजी	...	१०४७	...	१०६८
७१ गोंनञ्जो	...	१०६९	...	१०७३
७२ शिराकावा	...	१०७३	...	११२९
७३ होरीकावा	...	१०८७	...	११०७
७४ तोबा	...	११०८	...	११५६
७५ शुटोकू	...	११२४	...	११६४
७६ कोनोई	...	११४२	...	११५५
७७ गोशिराकावा	...	११५६	...	११९२
७८ निजो	...	११५९	...	११६५
७९ रोकुजा	...	११६६	...	११७६
८० टाकाकुरा	...	११६९	...	११८१
८१ अन्तोकू	...	११८१	...	११८५
८२ गोतोबा	...	११८६	...	१२३९
८३ सूचीमिकाडो	...	११९९	...	१२३१
८४ जन्तोकू	...	१२११	...	१२४२
८५ चूकियो	...	१२२२	...	१२३४

सं० नाम	सन्	सन्
८६ गोहोरीकावा ...	१२२१ ...	१२३४
८७ शीजो ...	१२३२ ...	१२४२
८८ गोसागा ...	१२४२ ...	१२७२
८९ गोफुकाकुसा ...	१२४६ ...	१३०४
९० कामेयामा ...	१२५९ ...	१३०५
९१ गोउदा ...	१२७४ ...	१३२४
९२ फुशिमी ...	१२८८ ...	१३१७
९३ गोफुशिमी ...	१२९८ ...	१३३६
९४ गोनिजियो ...	१३०१ ...	१३०८
९५ हानाजोनो ...	१३०८ ...	१३४८
९६ गोदायगो ...	१३१८ ...	१३३९
९७ गोमुराकामी ...	१३३९ ...	१३६८
९८ गोकामेयामा ...	१३७३ ...	१४२४
९९ गोकोमत्सु ...	१३८२ ...	१४३३
१०० शोको ...	१४१४ ...	१४२८
१०१ गोहानाजोनो ...	१४२९ ...	१४७०
१०२ गोत्सुचीमिकाडो	१४६५ ...	१५००
१०३ गोकाशीवाबाड़ा	१५२१ ...	१५२६
१०४ गोनारा ...	१५३६ ...	१५५७
१०५ ओगीमाची ...	१५६० ...	१५९३
१०६ गोयोजो ...	१५८६ ...	१६१७
१०७ गोमिजुनो ...	१६११ ...	१६८०
१०८ सम्राज्ञी मियोशो	१६३० ...	१६९६